सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 40, नई दिल्ली । रविवार, 20 अप्रैल 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

परिस्थिति बदलना मुश्किल न हो तो मन की स्थिति बदल देना चाहिए।

03 डॉ. भीमराव अंबेडकर की 134वीं जयंती को अभूतपूर्व एकता के साथ मनाया

06 अंतरिक्ष से दुनिया के जंगलों पर नजर

08 झारखंड हाईकोर्ट एवं मुख्यमंत्री के निर्देश के बाद अब होगी तबाड़तोड़ नियुक्ति

दिल्ली के ऑटो और टैक्सी चालकों की मुख्य मांगों के संबंध में...

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार की परिवहन विभाग द्वारा इलेक्ट्रिक पॉलिसी को लागू करने की मंशा की जानकारी सूत्रों से जात हुआ की परिवहन मंत्रालय द्वारा सीएनजी चालित सभी ऑटो टैक्सी चालकों को जबरन रिप्लेसमेंट पॉलिसी में इलेक्ट्रिक वाहन देने की योजना बनाई जा रही है जिससे दिल्ली के लाखों ऑटो और टैक्सी चालकों की आजीविका पर संकट मंडरा रहा है। सरकार द्वारा प्रदूषण नियंत्रण के नाम पर इलेक्ट्रिक पॉलिसी को जबरन लागू किया जा रहा है, जिससे पारंपरिक ऑटो टैक्सी चालकों की रोजी-रोटी को खतरा उत्पन्न हो गया है। यह कदम श्रमिक और चालक विरोधी है। दिल्ली के ऑटो और टैक्सी चालक समुदाय की वर्षों से कुछ बुनियादी मांगे रही हैं, जिन पर सरकार ने अब तक ध्यान नहीं दिया है। आज हम उन प्रमुख मांगों को सामने रखा रहे हैं, ताकि सरकार और समाज इस संकट को समझे और समाधान की दिशा में आवश्यक कदम उठाए:

ऑटो टैक्सी चालकों की प्रमुख मांगें निम्नलिखित हैं:

1. दिल्ली सरकार ऑटो / टैक्सी परमिट की वैधता अवधि को 15 वर्षों तक ही रखें और ऑटो रिक्शा रिप्लेसमेंट पॉलिसी में इलेक्ट्रिक पॉलिसी को लागू करने की मंशा को रद्द करें।

2. ऑटो टैक्सी चालकों को रिप्लेसमेंट पॉलिसी में सीएनजी इलेक्ट्रिक वाहन को अपनी आजीविका के लिए विकल्प चुनने की स्वतंत्रता दी जाए।

3. दिल्ली राज्य प्राधिकरण में सवारी वाहन के प्रयोग में बाइक सर्विसेज को दिल्ली में लागू न किया जाए और उसे तत्काल बंद किया जाए।

4. जिन चालकों के परमिट Renewal नहीं हुए हैं और जो वहां D रजिस्टर्ड हो गए हैं जिनकी संख्या (लगभग 35,000), उन ऑटो चालकों को सीएनजी या इलेक्ट्रिक ऑटो परमिट तत्काल जारी किए जाएं।

5. जिन चालकों के परमिट होल्डर अपने स्थायी पते पर नहीं हैं, उनके वर्तमान परिचालकों के नाम पर परमिट ट्रांसफर करने के पूर्व विभागीय आदेश को लागू किया जाए।

6. दिल्ली सरकार ऑटो / टैक्सी चालकों के लिए सामाजिक सुरक्षा योजना, व स्थाई स्टैंड एवं फ्री पार्किंग की सुविधा (जहां पीने के पानी और बैठने की व्यवस्था हो) तत्काल लागू करे।

7. परिवहन विभाग द्वारा टैक्सी वाहन का फिटनेस प्रमाण पत्र जारी करते समय पार्किंग शुल्क वसूलने की बनाई जा रही योजना अवैध है इसे तुरंत रोका जाए और दोषियों के खिलाफ कार्रवाई हो।

8. फिटनेस प्रमाण पत्र हेतु ओटीपी की अनिवार्यता को समाप्त किया जाए क्योंकि यह एक नया शोषण का तरीका बन गया है।

हम सभी चालक और टैक्सी यूनियनें इस प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से सरकार से अनुरोध करती हैं कि उपरोक्त सभी मांगों पर शीघ्र विचार कर समाधान की दिशा में ठोस कदम उठाए जाएं, अन्यथा हमें अपने संवैधानिक अधिकारों का प्रयोग करते हुए आंदोलन का रास्ता अपनाना पड़ेगा।

दिल्ली की प्रमुख ट्रेड यूनियन :

1. दिल्ली पब्लिक ट्रांसपोर्ट यूनियन रजि० दिल्ली प्रदेश, आलोक तिवारी (अध्यक्ष) 9999370708

2. आजाद हिंद ऑटो टैक्सी ड्राइवर यूनियन रजि० दिल्ली प्रदेश सुशील झा (अध्यक्ष) 8929716723

3. दिल्ली ऑटो तिपहिया ड्राइवर यूनियन रजि० आनंद चौधरी (महासचिव) 9911925551

अति विशेष सूचना

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर.एन.आई. द्वारा मान्यता प्राप्त करने के बाद से आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से मार्च में अपने 2 साल पूरे कर चुका है। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा हैं जिसके लिए प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

आप सभी को यह जान कर खुशी होगी की "परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" का द्वितीय वार्षिकी समारोह अप्रैल माह के अंतिम सप्ताह में सम्पन्न किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने के साथ दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य का उद्देश्य रखा गया है। इस समारोह में निम्नलिखित मुद्दों पर वाद- विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा

1. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
2. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
3. "दिल्ली को कैसे प्रदूषण मुक्त राज्य बनाया जा सकता है?"

वाद- विवाद प्रतियोगिता में हिस्सेदारी लेने वाले वक्ताओं के वक्तव्य के साथ परामर्शदाताओं से चर्चा भी इस समारोह में रखी जा रही है। इसके साथ इस आयोजन में भारत देश में निर्मित ई वाहनो, वीएलटीडी संयंत्र, एवम् अन्य उपयोगी स्टाल भी सब को आकृषित करने के लिए उपलब्ध होंगे। इस समारोह में

1. सबसे अच्छा विचार / तर्क और समाधान प्रदान करने वाले वक्ता को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े एंकर, वीडियो ग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योताचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

संजय कुमार बाटला, संपादक

पेट्रोल पंप पर एआई कैमरे से हो रही निगरानी

वाहन चालक ध्यान दें! खटाखट कट रहे 10 हजार के चालान

दिल्ली सरकार प्रदूषण को लेकर सख्त रवैया अपना रही है। बगैर पीयूसीसी वाले वाहनों का पेट्रोल पंप पर 10 हजार का चालान कट रहा है। एआई आधारित सीसीटीवी कैमरों द्वारा चालान काटे जा रहे हैं जिसकी सूचना वाहन मालिक के मोबाइल पर भेजी जा रही है। जून के अंत तक यह व्यवस्था सभी 500 पेट्रोल पंपों पर शुरू हो जाएगी।

नई दिल्ली। जिस तरह से दिल्ली में प्रदूषण की समस्या बनी हुई है, दिल्ली सरकार इसे लेकर और सख्त हो गई है। अब पेट्रोल पंप पर बगैर प्रदूषण नियंत्रण प्रमाणपत्र (पीयूसीसी) वाले वाहन के पहुंचते ही संबंधित वाहन का चालान काट दिया जा रहा है।

चालान कटने के साथ ही ई-चालान के तहत वाहन मालिक के मोबाइल नंबर पर भी सूचना भेजी जा रही है। इससे पहले सरकार ने पेट्रोल पंप पर ऐसे वाहन के पहुंचने पर चेतावनी देकर दो घंटे का समय देने की योजना बनाई थी, मगर प्रदूषण पर अंकुश लगाने के लिहाज से सरकार ने योजना में बदलाव किया है।

करीब 100 पेट्रोल पंपों पर ट्रायल के तौर पर यह व्यवस्था शुरू हो चुकी है। जून अंत तक दिल्ली के सभी 500 पेट्रोल पंपों पर यह व्यवस्था स्थापित हो जाएगी।

दिल्ली सरकार ने सख्त किए नियम

दिल्ली में अगर वाहन चला रहे हैं तो प्रदूषण नियंत्रण प्रमाण पत्र बनवाना ना भूलें, अगर किसी कारण से इसे नहीं बनवा पाए हैं तो तुरंत बनवा लें, अन्यथा आप मुश्किल में फंस सकते हैं और आप का 10000 का चालान हो सकता है। दिल्ली सरकार ने प्रदूषण नियंत्रण प्रमाण पत्र को लेकर नियम सख्त कर दिए हैं।

एआई आधारित सीसीटीवी कैमरों ने काम शुरू कर दिया

इसे लेकर दिल्ली के 100 से अधिक पेट्रोल पंपों पर एआई आधारित सीसीटीवी कैमरों ने काम शुरू कर दिया है। ट्रायल के आधार पर यह कैमरे काम कर रहे हैं और ऐसे वाहनों के चालान काट दे रहे हैं जिनके पास प्रदूषण नियंत्रण प्रमाण पत्र नहीं है। इस योजना पर पिछले एक साल से काम चल रहा है।

राजस्थान को तीन नए आरटीओ RJ-62, RJ-63 और RJ-64 की सौगात; स्थानीय लोगों को मिलेगी बड़ी राहत

राजस्थान सरकार ने तीन नए RTO खोलने की अधिसूचना जारी कर दी है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में अनूपगढ़ (श्रीगंगानगर), डीग और खैरथल-तिजारा में नए RTO कार्यालय स्थापित किए जाएंगे।

जयपुर। राजस्थान सरकार ने प्रदेश के परिवहन ढांचे को सुदृढ़ करने की दिशा में बड़ा कदम उठाते हुए तीन नए क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय (RTO) खोलने की अधिसूचना जारी कर दी है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में अनूपगढ़ (श्रीगंगानगर), डीग और खैरथल-तिजारा में नए RTO कार्यालय स्थापित किए जाएंगे। इसके साथ ही इन क्षेत्रों को क्रमशः RJ-62, RJ-63 और RJ-64 के नए पंजीयन कोड भी आवंटित कर दिए गए हैं।

डीग जिले को RJ-63: भरतपुर के चक्कर से राहत

डीग जिले के निवासियों को अब ड्राइविंग लाइसेंस, गाड़ी के रजिस्ट्रेशन, फिटनेस सर्टिफिकेट और रोड टैक्स जैसे जरूरी कार्यों के लिए 70-75 किलोमीटर दूर भरतपुर नहीं जाना पड़ेगा। नए RTO के खुलने से स्थानीय स्तर पर ही ये सभी सेवाएं मिल सकेंगी। RJ-63 कोड मिलने से अब डीग की गाड़ियों की पहचान भी जिले से ही होगी।

अनूपगढ़ को RJ-62 और खैरथल-तिजारा को RJ-64

श्रीगंगानगर के अनूपगढ़ क्षेत्र को RJ-62 और अलवर जिले के खैरथल-तिजारा क्षेत्र को RJ-64 कोड मिला है। इन क्षेत्रों में भी नया RTO कार्यालय खुलने से ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के लोगों को आवागमन की सुविधाएं मिलेंगी और परिवहन कार्यों में लगने वाला समय और खर्च दोनों में कमी आएगी।

व्यवसाय और परिवहन को मिलेगा बढ़ावा

स्थानीय स्तर पर टैक्सी, ट्रक, बस आदि व्यवसायिक वाहनों के परमिट और पंजीकरण अब आसानी से जारी होंगे। इससे स्थानीय व्यापारियों को बड़ी राहत मिलेगी और दलालों पर निर्भरता भी घटेगी। नंबर प्लेट, पॉल्यूशन सर्टिफिकेट और फिटनेस जैसी सेवाएं भी अब आसानी से मिलेंगी।

स्थानीय युवाओं को अब लर्निंग और परमानेंट ड्राइविंग लाइसेंस के लिए बार-बार लंबी दूरी तय नहीं करनी पड़ेगी। इससे समय की बचत होगी और रोजगार के नए अवसर खुलेंगे। साथ ही सड़क सुरक्षा और ट्रैफिक नियमों की जानकारी स्थानीय स्तर पर मिलने से कानून व्यवस्था को भी मजबूती मिलेगी।

प्रशासनिक दृष्टि से बड़ा बदलाव

डीग, अनूपगढ़ और खैरथल-तिजारा में RTO कार्यालयों की स्थापना केवल एक सेवा विस्तार नहीं बल्कि प्रशासनिक व्यवस्था को स्थानीय स्तर पर मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इससे हजारों वाहन स्वामियों को प्रत्यक्ष लाभ मिलेगा और परिवहन व्यवस्था अधिक पारदर्शी, सुलभ और प्रभावी बन सकेगी।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

बसों की कमी से जनता परेशान, राजधानी की सड़कों पर कब उतरेंगी नई बसें?

दिल्ली में बसों की कमी के चलते लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। बस स्टॉप पर यात्रियों को बसों का लम्बा इंतजार करना पड़ रहा है जिससे गर्मी में उनकी मुश्किलें और बढ़ गई हैं। पुरानी बसों को हटाने और नई बसों की कमी के कारण यह समस्या उत्पन्न हुई है। सरकार का कहना है कि जल्द ही नई बसें सड़कों पर उतरेंगी।

नई दिल्ली। बसों की कमी के कारण दिल्ली के लोगों की परेशानी बढ़ती जा रही है। लोग अपने रूट पर बसों के आने का बस स्टॉप पर बेसब्री से इंतजार करते हैं, कई बार तो उन्हें इसके इंतजार में काफी समय भी निकल जाता है।

गर्मी शुरू होते ही उनकी परेशानी और भी बढ़ती जा रही है। जिस तरह से पिछली आम आदमी पार्टी सरकार ने अपने कार्यकाल के आखिरी साल में बसों की खरीद को लेकर लापरवाही बरती, उसका खामियाजा अब जनता को भुगतना पड़ रहा है।

डीटीसी की 900 बसें सड़कों से हटाई

जनवरी से मार्च तक जहां 790 बसें पुरानी होने के कारण सड़कों से हटाई जा चुकी हैं, वहीं अप्रैल में भी 112 बसें सड़कों से हटने वाली हैं। कुल मिलाकर डीटीसी की 900 बसें सड़कों से हटाई जा रही हैं।

इस बीच, डिम्ट्स की 462 बसें सड़कों पर खड़ी होने के कारण लोगों को परेशानी हो रही थी, लेकिन परिवहन मंत्री डॉ. पंकज सिंह ने कहा कि डिम्ट्स की जो बसें सड़कों पर खड़ी थीं, उन्हें चलाने की अनुमति दे दी गई है। ये सभी बसें सड़कों पर वापस आ गई हैं।

नहीं होगी बसों की कमी

उन्होंने कहा कि जनता को बसों की कमी नहीं होने दी जाएगी। ये बसें सरकार के साथ अनुबंध खत्म होने के कारण सड़कों पर खड़ी थीं। जनता की परेशानियों की बात करें तो जनवरी से मार्च तक करीब 790 बसों को हटाने के बाद अब अप्रैल के अंत तक 111 पुरानी बसें हटाने जा रही हैं।

इस समय दिल्ली में बसों की कुल संख्या 6966 है। इसमें लगातार कमी आ रही है। दिल्ली सरकार ने कहा है कि कुछ ही दिनों में 670 बसें सड़कों पर उतरने वाली हैं। इसमें से 280 मिनी बसें आ भी चुकी हैं।

दिल्ली सरकार के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि इन बसों के लिए नाम सुझाए जा रहे हैं। जिनमें से एक नाम देवी का भी है। इन सबके बीच परिवहन क्षेत्र से जुड़े लोगों का कहना है कि जनता की परेशानियों को देखते हुए अब सरकार को घोषणाओं की जगह धरातल पर काम करके दिखाना चाहिए, ताकि लोगों की परेशानियां कम हों।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार रोज ये काम करने से मानसिक तनाव से मिलेगा छुटकारा

कभी-कभी चीजें उस तरीके से संपन्न नहीं होती जैसा हम सोचते हैं और यह भी हमारे मानसिक तनाव का कारण बन सकता है। ज्योतिष शास्त्र में माना गया है कि इसका कारण चंद्रमा या अन्य ग्रहों के नकारात्मक प्रभाव के कारण हो सकता है। ग्रहों की शांति के लिए ज्योतिष शास्त्र में कुछ उपाय भी बताए गए हैं।

मानसिक शांति के लिए करें ये उपाय आज के इस भागदौड़ के समय में हर दूसरा व्यक्ति मानसिक तनाव का शिकार हो रहा है। ऐसे में आप इन ज्योतिष उपायों द्वारा मानसिक तनाव से मुक्ति पा सकते हैं। साथ ही इससे आपको मानसिक शांति भी मिलती है। सोमवार को व्रत रखने का प्रयास करें और अपने दिन की शुरुआत मंदिर में जाकर या घर पर पूजा करके करें।

ग्रहों के प्रभाव से मिलेगी मुक्ति ग्रहों के नकारात्मक प्रभाव को कम करने के लिए अक्सर भगवान शिव की पूजा करते हुए उनके शिवलिंग पर जल और दूध चढ़ाना चाहिए। आप प्रतिदिन 'ओम नमः शिवाय' या 'ओम' का जाप कर सकते हैं। यह मंत्र आपको अपने लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करने में सहायता करता है।

ऐसे मजबूत होगा चंद्रमा रत्न पहनना भी बहुत फायदेमंद हो सकता है, लेकिन कोई भी रत्न पहनने से पहले आपको ज्योतिष की सलाह जरूर लेनी चाहिए। प्रतिदिन चंद्र यंत्र धारण करके आप हमेशा शांति में रह सकते हैं और अपने आस-पास की सभी नकारात्मकता से खुद को ठीक कर सकते हैं। चांदी के गिलास में पानी पीने से चंद्रमा ग्रह के प्रभाव को मजबूत करने में मदद मिलती है।

मिलेगी मानसिक शांति आपको अपने माथे पर हमेशा नियमित रूप से केसर और हल्दी मिश्रित चंदन का तिलक लगाना चाहिए, इससे मानसिक तनाव को कम करने में सहायता मिलती है। बिस्तर पर जाने से पहले आपको हमेशा अपने हाथ और पैर धोने चाहिए।

रोज करें ये काम अपने पूजा कक्ष (घर के पूजा स्थल) के पास तुलसी का पौधा रखकर रोज सुबह और शाम उसपर दीया जलाएं। इससे राहु ग्रह के प्रभाव से छुटकारा मिलता है। जिससे आपको मानसिक शांति प्राप्त होती है और आपके घर का माहौल बेहतर होता है। साथ ही प्राणायाम करने की आदत अपनाएं। इससे दिमाग और शरीर की मांसपेशियां मजबूत होती हैं।

भैया पंकज भैया का वास्तु शास्त्र, जाने

एक घड़ा,उसमें थोड़ी सी चांदी, एक सिक्का वास्तु शास्त्र और पांच गोमती चक्र डाले और उसको ऊपर से सफेद कपड़े से बांध दें और पांच बार उस पर जल छिड़क कर मां लक्ष्मी और भगवान विष्णु का आह्वान करें। प्रार्थना करे की मेरे घर में कुबेर देवता का वास हो। रविवार के दिन पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में अपने घर के मंदिर में रखें और 7 दिन तक लगातार उसकी पूजा करके एक स्वास्तिक बनाएं और प्रार्थना करें है मां लक्ष्मी भगवान विष्णु मेरे घर में कुबेर देवता का वास हो और आपकी कृपा प्राप्त हो। 7 दिन बाद उस घड़े को खाली कर उसमें जल भर के और किसी सार्वजनिक स्थान पर रख दें। जैसे-जैसे घड़े का पानी खाली होगा आपके घर में कुबेर देवता का वास होगा और आपको मां लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होगी।

परमात्मा ही जीवन है और परमात्मा ही मृत्यु, वह दोनों है। जब कोई चीज दोनों हो, तो अकथनीय हो जाती है।

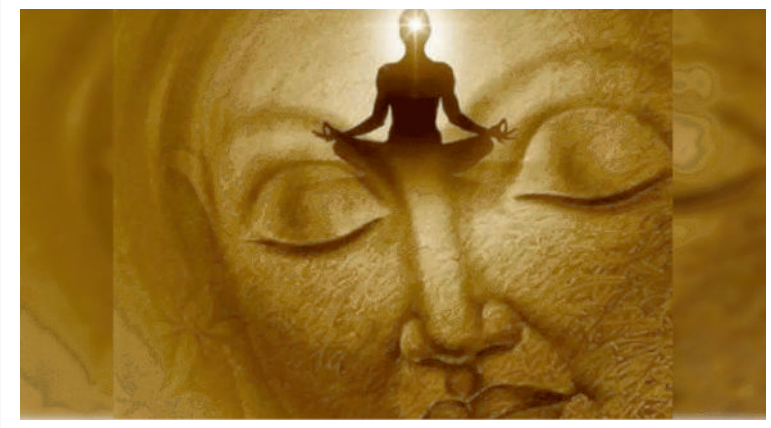

जब दो विपरीत बातें एक साथ कही जायें, तो वह वक्तव्य व्यर्थ हो जाता है। जैसा कि हम कहें कि हम यहां हैं भी और नहीं भी, तो यह कहना/वक्तव्य व्यर्थ हो गया क्योंकि दोनों विपरीत बातें एक साथ नहीं हो सकतीं, यह पश्चिम की समझ है। पश्चिम कहता है कि या तो भगवान/गॉड है या नहीं है। दोनों में से एक ही वक्तव्य सही/उचित हो सकता है। लेकिन पूर्व/सनातन/गीता का भाव/चिंतना है कि ईश्वर हैं भी और नहीं भी। वह दिखाई भी देता है और दिखता भी नहीं, दोनों बातें सार्थक हैं। वह सत भी है, असत भी है, कहने का एक उपाय यह है और दूसरा उपाय है कि न तो वह सत है, और न ही वह असत है। और चूंकि दोनों को एक साथ उपयोग करना पड़ता है, इसलिए कहा नहीं जा सकता। चूंकि भाषा द्वंद्व/द्वैत पर निर्भर करती है, इसलिए यह भाषागत विरोध है। ईश्वर इसलिए भाषा में व्यक्त नहीं हो पाता, क्युंकि भाषा में अगर दोनों विरोध/विपरीत एक साथ रख दिए जाएं, तो व्यर्थ हो जाता है, इसलिए ईश्वर अकथनीय/अपरिभाषित है।

पाप के 10 लक्षण बताए गए हैं :-

हिंसास्तैय अन्यथा कामं पैशुन्यं परूषानृते।।
सम्भिन्नालापं व्यापदभिध्यां दृग्विपर्यम्।
पापं कर्मेति दशधा कायवांमानसैस्त्यजेत।।

1. हिंसा (प्राणियों को मारना)
2. स्तेय (चोरी)
3. अन्यथाकाम (अनैतिक मैथुन संबंध)
4. पैशुन्य (चुगली करना)
5. परूष (कठोर वचन)
6. अनृत (झूठ बोलना)
7. संभिन्न प्रलाप (अनावश्यक बोलना, असंबंधित बोलना)
8. व्यापाद (दूसरे को हानि पहुँचाने का विचार)
9. अभिध्या (ईर्ष्या- दूसरे के गुण को न सह सकना अथवा दूसरे के धन को लेने की इच्छा)
10. दृग विपर्यय (नास्तिकता, आप्त वाक्यों में अश्रद्धा करना)

ये दस प्रकार के पापकर्म हैं, इन पाप कर्मों को शरीर, वाणी तथा मन तीनों से छोड़ देना चाहिए।

सप्तवारों के अनुसार लाभप्रद नित्य पूजा-आराधना

रविवार आदित्य हृदय स्तोत्र, श्रीराम रक्षा स्तोत्र, श्रीराम अथवा महादेव की पूजा-आराधना

सोमवार - शिव-पार्वती स्तोत्र पाठ व सदाशिव आराधना

मंगलवार - श्रीदुर्गा कवच, यथाशक्ति सप्तशती पाठ, दुर्गासहस्रनाम और श्रीदुर्गा माँ अथवा मंगलग्रह की स्वामिनि मां मंगलचंडिका की आराधना

बुधवार_.. एमएम - विष्णुसहस्रनाम अथवा गोपालसहस्रनाम, हरिनाम संकीर्तन व श्रीविष्णु आराधना

गुरुवार - गुरुग्रह मंत्र जाप, गुरु रुपी आचार्यों दिवस, ज्ञानदाता बुद्धिप्रद श्रीभगवान गणेश गजानन की आराधना

शुक्रवार - श्रीसुक्त पाठ, मां महालक्ष्मीस्तोत्र, लक्ष्मी पूजन और आराधना का दिन

शनिवार - सुंदरकांड, हनुमान चालीसा के कुछ पाठ, या काली चालीसा कालीकवच अथवा मंगलमूर्ति शनिदोषशमनकर्ता हनुमान जी की आराधना

सूर्य आरोग्य के और चन्द्रमा सम्पत्ति के दाता है। मंगल व्याधियों का निवारण करते हैं, बुध पुष्टि देते हैं, बृहस्पति आयु की वृद्धि करते हैं, शुक्र भोग देते हैं और शनैश्चर मृत्यु का निवारण करते हैं ये सात वारों के क्रमशः फल बताये गये हैं, जो उन उन देवताओं की प्रीति से प्राप्त होते हैं। अन्य देवताओं की भी पूजा का फल देने वाले भगवान शिव ही हैं।

पपीते के पत्ते

पपीते के पत्तों में कई तरह के पोषक तत्व होते हैं, जैसे कि एंटीऑक्सीडेंट, विटामिन, और खनिज. इन पत्तों का सेवन करने से कई तरह के स्वास्थ्य लाभ होते हैं. पपीते के पत्तों का इस्तेमाल चाय, अर्क, गोलियों, और जूस के रूप में किया जाता है.

पपीते के पत्तों के फ़ायदे:

डेंगू बुखार में राहत मिलती है. पपीते के पत्तों का रस पीने से प्लेटलेट और आरबीसी की संख्या बढ़ती है.

पाचन तंत्र मज़बूत होता है. पपीते के पत्तों में पैपीन और फ़ाइबर होता है, जो पाचन को बेहतर करता है.

लिवर की समस्याओं में फ़ायदेमंद. पपीते के पत्तों में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट लीवर की सेहत को सुधारते हैं.

ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल करने में मदद मिलती है.

त्वचा संबंधी समस्याओं का समाधान होता है.

इम्यून सिस्टम मज़बूत होता है.

सूजन और दर्द में राहत मिलती है.

कब्ज़ की समस्या से आराम मिलता है.

कैंसर की रोकथाम में मदद मिलती है.

किडनी और हार्ट की सेहत को सुधारने में मदद मिलती है.

पपीते के पत्तों का रस पीने से कई बीमारियों से बचा जा सकता है।

जानें कुछ शुभ और अशुभ शकुन के बारे में -- (शकुनशास्त्र विशेष) ज्ञान दर्पण

1. प्रातः काल जागते ही यदि शंख, घंटा, भक्ति संगीत आदि का स्वर सुनाई दे तो अत्यंत शुभ होता है। आपका पूरा दिन हर्षपूर्ण बीतेगा।
2. यदि जागने पर सबसे पहले दही या दूध से भरे पात्र पर निगाह पड़े तो भी शुभ समझा जाता है।
3. यदि सुबह सुबहघर में कोई भिखारी माँगने आ जाए तो यह समझिये कि आपका फंसा हुआ या उधार दिया हुआ धन आपको शीघ्र ही वापस मिलेगा ।
4. यदि घर से किसी कार्य से बाहर जाते हुए तो आपके सामने सुहागन स्त्री अथवा गाय आ जाए तो कार्य में पूर्ण सफलता मिले का योग बनता है ।
5. किसी कार्य से जाते हुए आपके सामने कोई व्यक्ति गुड़ ले जाता हुआ दिखे तो बहुत अधिक लाभ होता है।
6. यदि रास्ते में कोई प्राणी सुन्दर फूल या हरी घास लेकर जाता मिले या आपको किसी दुकान में यह नज़र आ जाये तो बहुत शुभ होता है ।
7. यदि जाते समय मार्ग में कोई भी स्त्री/पुरुष दूध या पानी से भरा बर्तन लेकर दिख जाये तो यह बहुत ही शुभ शकुन होता है ।
8. यात्रा में जाते समय यदि प्रभु की आरती, भजन आदि सुनाई दे तो यह बहुत ही शुभ माना जाता है, आपकी यात्रा के सफल होने के पुरे योग है ।
9. यदि मार्ग में हसंता खेलता हुआ बालक और फल फूल बेचने वाला कोई नज़र आ जाये तो आपको निसंदेह लाभ की प्राप्ति होगी ।
10. किसी भी कार्य के लिए जाते समय जब आप कपड़े पहने और आपकी जेब से पैसे गिर जाएँ तो यह धन प्राप्ति का संकेत है। और यदि कपड़े उतारते समय भी ऐसा ही हो तो भी यह शुभ शकुन होता है।
11. यदि आपके शरीर पर चिड़िया बीट कर दे तो यह समझिये की आपकी दरिद्रता दूर होने वाली है। ये बहुत ही शुभ शकुन हैं ।
12. यदि घर से बाहर निकलते ही आप वर्षा से भीग जाएँ तो यह बहुत ही शुभ शकुन है।
13. यदि घर से बाहर किसी भी कार्य के लिए जाते समय आपको राह में साधू, सन्यासी आदि दिखाई पद जाएँ तो यह भी आपकी यात्रा के लिए अति शुभ शकुन होता है ।
14. ब्राह्मण, घोड़ा, हाथी, नेवला, बाज, मोर, दूध, दही, फल, फूल, कमल, भक्ति संगीत, अन्न, जल से भरा कलश, बंधा हुआ एक पशु, मछली, प्रज्वलित अग्नि, छाता, वैश्या, कोई भी शस्त्र, कोई भी रत्न, स्त्री, कन्या, धुले हुए वस्त्र सहित धोबी, घी, मिट्टी, सरसों, गन्ना, शव यात्रा, पालकी, ध्वजा, बकरा, अपना प्रिय मित्र, बच्चे के सहित स्त्री, गाय बछड़ा सहित, सफेद बैल, साधु, कल्पवृक्ष, शहद, शराब, या कूड़े से भरी टोकरी, सामान से लदा वाहन यदि यात्रा के वक्त यह कुछ भी राह में पड़ जाए तो निश्चय ही आपको सफलता प्राप्त होगी।

राधा और रुक्मिणी में से लक्ष्मी कौन ?

चराचर जगत में रुक्मिणी और राधा का संबंध श्रीकृष्ण से है। संसार रुक्मिणी जी को श्रीकृष्ण की पत्नी और राधा जी को श्रीकृष्ण की प्रेमिका के रूप में मानता है। आम जगत में रुक्मिणी और राधा की यही पहचान है परंतु क्या कभी आपके मन में यह प्रशन उठा है की राधा और रुक्मिणी में से कौन लक्ष्मी का अवतरण था ? इस लेख के माध्यम से हम शास्त्रों के अनुसार इस तथ्य से आप सभी पाठकों को रूबरू करवाते हैं। शास्त्रों में लक्ष्मी जी के रहस्य को इस प्रकार उजागर किया है कि लक्ष्मी जी क्षीरसागर में अपने पति श्री विष्णु के साथ रहती हैं एवं अपने अवतरण स्वरुप में राधा के रूप में कृष्ण के साथ गोलोक में रहती हैं। महाभारत में लक्ष्मी के 'विष्णुपत्नी लक्ष्मी' एवं 'राज्यलक्ष्मी' ऐसे दो प्रकार बताए गए हैं। इनमें से लक्ष्मी हमेशा विष्णु के पास रहती हैं एवं राज्यलक्ष्मी पराक्रमी राजाओं के साथ विचरण करती हैं।

ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार विष्णु के दक्षिणांग से लक्ष्मी का, एवं वामांग से लक्ष्मी के ही अन्य एक अवतार राधा का जन्म हुआ था। ब्रह्मवैवर्त पुराण में निर्दिष्ट लक्ष्मी के अवतार एवं उनके प्रकट होने के स्थान इस प्रकार है

1. महालक्ष्मी जो वैकुंठ में निवास करती हैं।
2. स्वर्गलक्ष्मी जो स्वर्ग में निवास करती हैं।
3. राधा जी गोलोक में निवास करती हैं।
4. राजलक्ष्मी (सीता) जी पाताल और भूलोक में निवास करती हैं।
5. गृहलक्ष्मी जो गृह में निवास करती हैं।
6. सुरभि (रुक्मणी) जो गोलोक में निवास करती हैं।
7. दक्षिणा जो यज्ञ में निवास करती हैं।
8. शोभा जो हर वस्तु में निवास करती हैं।

लक्ष्मी रहस्य का रूपकात्मक दिग्दर्शन करने वाली अनेकानेक वृतांत और कथाएं महाभारत जैसे शास्त्रों में वर्णित हैं। जिनमें से एक वृतांत है ₹लक्ष्मी-रुक्मिणी संवाद₹ महाभारत के एक प्रसंग में लक्ष्मी के रहस्य से संबंधित एक प्रशन युधिष्ठिर ने भीष्म से पूछा था, जिसका जवाब देते समय भीष्म ने लक्ष्मी एवं रुक्मिणी के दरम्यान हुए एक संवाद की जानकारी युधिष्ठिर को दी। महाभारत के अनुशासन पर्व के अनुसार, लक्ष्मी ने रुक्मिणी से कहा था, की मेरा निवास तुममे (रुक्मिणी) और और राधा में समानता से है तथा गोकुल कि गाएं एवं गोबर में भी मेरा निवास है। श्रीकृष्ण के तत्व दर्शन अनुसार रुक्मिणी को देह और राधा को आत्मा माना गया है। श्रीकृष्ण का रुक्मिणी से दैहिक और राधा से आत्मिक संबंध माना गया है। रुक्मिणी और राधा का दर्शन बहुत गहरा है। इसे सम्पूर्ण सृष्टि के दर्शन से जोड़कर देखें तो सम्पूर्ण जगत की तीन अवस्थाएं हैं।

1. स्थूल; 2. सूक्ष्म; 3. कारण

स्थूल जो दिखाई देता है जिसे हम अपने नेत्रों से देख सकते हैं और हाथों से छू सकते हैं वह कृष्ण-दर्शन में रुक्मणी कहलाती हैं। सूक्ष्म जो दिखाई नहीं देता और जिसे हम न नेत्रों से देख सकते हैं न ही स्पर्श कर सकते हैं, उसे केवल महसूस किया जा सकता है वही राधा है और जो इन स्थूल और सूक्ष्म अवस्थाओं का कारण है वह हैं श्रीकृष्ण और यही कृष्ण इस मूल सृष्टि का चराचर हैं। अब दूसरे दृष्टिकोण से देखें तो स्थूल देह और सूक्ष्म आत्मा है। स्थूल में सूक्ष्म समा सकता है परंतु सूक्ष्म में स्थूल नहीं। स्थूल प्रकृति और सूक्ष्म योगमाया है और सूक्ष्म आधार शक्ति भी है लेकिन कारण की स्थापना और पहचान राधा होकर ही की जा सकती है। यदि चराचर जगत में देखें तो सभी भौतिक व्यवस्था रुक्मणी और उनके पीछे कार्य करने की सोच राधा है और जिनके लिए यह व्यवस्था की जा रही है और वो कारण है श्रीकृष्ण। अतः राधा और रुक्मणी दोनों ही लक्ष्मी का प्रारूप है परंतु जहां रुक्मणी देहिक लक्ष्मी हैं वहीं दूसरी ओर राधा आत्मिक लक्ष्मी हैं।

सत्कर्म करते समय क्यों दी जाती है दक्षिणा ?

महालक्ष्मी का कलावतार हैं 'दक्षिणा देवी 'दक्षिणा' महालक्ष्मीजी के दाहिने कन्धे (अंश) से प्रकट हुई हैं इसलिए दक्षिणा कहलाती हैं। ये कमला (लक्ष्मी) की कलावतार व भगवान विष्णु की शक्तिस्वरूपा हैं। दक्षिणा को शुभा, शुद्धिदा, शुद्धिरूपा व सुशीला-इन नामों से भी जाना जाता है। ये उपासक को सभी यज्ञों, सत्कर्मों का फल प्रदान करती हैं।

श्रीकृष्ण और दक्षिणा का सम्बन्ध गोलोक में भगवान श्रीकृष्ण को अत्यन्त प्रिय सुशीला नाम की एक गोपी थी जो विद्या, रूप, गुण व आचार में लक्ष्मी के समान थी। वह श्रीराधा की प्रधान सखी थी। भगवान श्रीकृष्ण का उससे विशेष स्नेह था। श्रीराधाजी को यह बात पसन्द न थी और उन्होंने भगवान की लीला को समझे बिना ही सुशीला को गोलोक से बाहर कर दिया गोलोक से च्युत हो जाने पर सुशीला कठिन तप करने लगी और उस कठिन तप के प्रभाव से वे विष्णुप्रिया महालक्ष्मी के शरीर में प्रवेश कर गयीं। भगवान की लीला से देवताओं को यज्ञ का फल मिलना बंद हो गया। घबराए हुए सभी देवता ब्रह्माजी के पास गए। ब्रह्माजी ने भगवान विष्णु का ध्यान किया। भगवान विष्णु ने अपनी प्रिया महालक्ष्मी के विग्रह से एक अलौकिक देवी 'मर्त्यलक्ष्मी' को प्रकट कर उसको दक्षिणा' नाम दिया और ब्रह्माजी को सौंप दिया।

यज्ञपुरुष, दक्षिणा और फल ब्रह्माजी ने यज्ञपुरुष के साथ दक्षिणा का विवाह कर दिया। देवी दक्षिणा के 'फल' नाम का पुत्र हुआ। इस प्रकार भगवान यज्ञ अपनी पत्नी दक्षिणा व पुत्र फल से सम्पन्न होने पर कर्मों का फल प्रदान करने लगे। इससे देवताओं को यज्ञ का फल मिलने लगा। इसीलिए शास्त्रों में दक्षिणा के बिना यज्ञ करने का निषेध है। दक्षिणा की कृपा के बिना प्राणियों के सभी कर्म निष्फल हो जाते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश व अन्य देवता भी दक्षिणाहीन कर्मों का फल देने में असमर्थ रहते हैं।

दक्षिणा हीन कर्म हो जाता है निष्फल बिना दक्षिणा के किया गया सत्कर्म राजा बलि के पेट में चला जाता है। पूर्वकाल में राजा बलि ने तीन पग भूमि के रूप में त्रिलोकी का अपना राज्य जब भगवान वामन को दान कर दिया तब भगवान वामन ने बलि के भोजन (आहार) के लिए दक्षिणाहीन कर्म उसे अर्पण कर दिया। श्रद्धाहीन व्यक्तियों द्वारा श्राद्ध में दी गयी वस्तु को भी बलि भोजन रूप में ग्रहण करते हैं।

कर्म की समाप्ति पर तुरन्त देनी चाहिए दक्षिणा

मनुष्य को सत्कर्म करने के बाद तुरन्त दक्षिणा देनी चाहिए तभी कर्म का तत्काल फल प्राप्त होता।

यदि जानबूझकर या अज्ञान से धार्मिक कार्य समाप्त हो जाने पर ब्राह्मण को दक्षिणा नहीं दी जाती, तो दक्षिणा की संख्या बढ़ती जाती है, साथ ही सारा कर्म भी निष्फल हो जाता है। संकल्प की हुई दक्षिणा न देने से (ब्राह्मण के अधिकार का धन रखने से) मनुष्य रोगी व दरिद्र हो जाता है व उससे लक्ष्मी, देवता व पितर तीनों ही रुष्ट हो जाते हैं।

दिल्ली में मानसून में जहां हर साल भरता है पानी, वहां क्यों पहुंची मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और मंत्री प्रवेश वर्मा

एलजी वीके सक्सेना,सीएम रेखा और पीडब्ल्यूडी मंत्री प्रवेश वर्मा ने किया दौरा

दिल्ली में मानसून के दौरान जलभराव की समस्या को लेकर मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और मंत्री प्रवेश वर्मा ने संवेदनशील क्षेत्रों का दौरा किया। उन्होंने अधिकारियों को चेतावनी दी कि जलभराव होने पर वे जिम्मेदार होंगे। नालों की सफाई की रिपोर्ट का थर्ड पार्टी ऑडिट होगा। 194 जलभराव वाले इलाकों को चिन्हित किया गया है जिनमें से कई पर काम पूरा हो चुका है।

नई दिल्ली। मानसून के दौरान शहर में होने वाले जलभराव ने भाजपा सरकार का तनाव बढ़ाया हुआ है। जलभराव रोकने के लिए लगातार हो रहे दौरों के साथ ही शुक्रवार को फिर सरकार सड़क पर उतर गई।

एलजी वीके सक्सेना,सीएम रेखा गुप्ता और पीडब्ल्यूडी मंत्री प्रवेश वर्मा ने जलभराव वाले अतिसंवेदनशील स्थानों का दौरा किया। सीएम ने चेतावनी दी है कि कहीं भी जलभराव हुआ तो अधिकारी जिम्मेदार होंगे।

सभी जलभराव प्रभावित क्षेत्रों में नोडल अधिकारियों की नियुक्ति होगी। नालों की सफाई को लेकर आने वाली रिपोर्ट्स का थर्ड पार्टी आडिट होगा, जिससे पारदर्शिता और जवाबदेही तय की जा सके।

194 जलभराव वाले इलाके किए चिन्हित

सीएम ने कहा कि इस समय दिल्ली में 194 जलभराव वाले इलाकों को चिन्हित किया गया है, जो विभिन्न विभागों जैसे पीडब्लूडी, एनएचएआई, डीएमआरसी, डीडीए, एमसीडी, एनडीएमसी के अधीन आते हैं।

इन 194 चिन्हित क्षेत्रों में से 129 में लघु अवधि के कार्य पहले ही पूर्ण कर लिए गए हैं और शेष बचे हुए क्षेत्रों पर जल्द से जल्द कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए गए हैं।

पीडब्लूडी और एनएचएआई विभाग को निर्देशित किया गया है कि वे जलभराव प्रभावित क्षेत्रों का संयुक्त निरीक्षण करें और समय रहते समाधान सुनिश्चित करें।

इसके साथ ही, पीडब्लूडी को नालों की सफाई के बाद उनकी फोटोग्राफ्स अपलोड करने का आदेश दिया गया है। इसके अतिरिक्त एनडीएमसी के अधीन आने वाले जलभराव क्षेत्रों के समाधान के लिए सरकार एक अलग बैठक आयोजित करेगी।

मिंटो ब्रिज, आईटीओ समेत कई जगह जाकर किया निरीक्षण

दौरे के दौरान मिंटो ब्रिज, आइटीओ और डब्लूएचओ के पास रिंग रोड का मौके पर जाकर निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर पीडब्लूडी, शहरी विकास विभाग, सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग, दिल्ली जल बोर्ड , एमसीडी सहित सभी सम्बंधित विभागों के अधिकारी मौजूद थे।

मिंटो ब्रिज के निरीक्षण के बाद मुख्यमंत्री गुप्ता ने कहा कि इस बार यहां का पंपिंग सिस्टम पूरी तरह ऑटोमेटेड होगा और जलभराव के दौरान 24 घंटे ऑपरेटर ऑन-साइट मौजूद रहेंगे, ताकि किसी भी स्थिति से तुरंत निपटा जा सके।

उन्होंने कहा कि पिछली सरकारों ने कभी भी दिल्ली के बड़े नालों की सफाई पर ध्यान नहीं दिया, न ही समय पर उनकी गाद और रखरखाव के लिए ठोस कदम उठाए गए।

अब वर्तमान सरकार पूरी प्रतिबद्धता के साथ काम कर रही है ताकि राजधानी को जलभराव मुक्त और व्यवस्थित बनाया जा सके। कहा कि यह वही स्थान है जहां पहले पूरी की पूरी बसें डूब जाती थीं।

पिछले वर्ष यहां पंप तक पानी में डूब गया था। उन्होंने बताया कि अभी सरकार ने यहां लगाए गए आटोमेटेड सिस्टम की जांच के लिए कई टैंकरों के माध्यम से यहां पानी को छोड़ा है ताकि यह सुनश्चित हो पाए कि यह सिस्टम कार्यरत है या नहीं।

यहां लगभग 2.5 किलोमीटर लंबी पाइपलाइन डाली गई है, जिससे पानी को सीधे निकासी प्वाइंट तक ले जाया जा सके।

जलभराव दूर करने के लिए हो रहा काम

नालों की सफाई जारी

जरूरत वाले स्थानों पर पंप लगाए जा रहे

कई पंप स्टेशनों को आटोमैटिक किया जा रहा

पंप आपरेटरों की कमी को दूर करने के लिए नई नियुक्तियां की जा रहीं

जहां नाले का निर्माण कार्य चल रहा है, वहां भी पंप सेट लगाकर अस्थायी समाधान सुनिश्चित किया जा रहा।

गत 10 वर्ष में चुने गये "आप" विधायकों एवं पार्षदों की शय पर पनपा 5वीं 6ठी मंजिल डालने का धंधा:दिल्ली भाजपा अध्यक्ष

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने मुस्तफाबाद विधानसभा के दयालपुर क्षेत्र में कल देर रात एक 5 मंजिला बिल्डिंग के आकसमिक रूप से ढह जाने पर गहरा दुख एवं चिंता प्रकट की है।

उन्होंने कहा है की मानवीय जीवन का इस तरह अंत होना दुखद है पर मुस्लिम बहुल इलाकों में ऐसे अनेक ज्वलंत बम खड़े हैं और दिल्ली नगर निगम को ऐसी पांचवी छठी मंजिल खाली करवा कर सील करने एवं तोड़ने का आदेश दें ताकि भविष्य में ऐसे हादसे रूक सकें।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है सामान्यता हम दिल्ली के हिन्दू बहुल अधिकांश अप्रूव्ड इलाकों के साथ ही अनधिकृत कॉलोनियों में भी देखते हैं की लोग तीसरी मंजिल तक के मकान बनाते रहे हैं। इन दिनों कुछ क्षेत्रों में चौथी मंजिल भी डाली जाती हैं पर चलन कम है। सचदेवा ने कहा है की आज दयालपुर में जो हादसा हुआ ऐसे ना जाने कितने हादसे दिल्ली के मुस्तफाबाद, करावल नगर, सीलमपुर, ओखला, मटिया महल, बल्लीमारन, सदर बाजार आदि विधानसभा क्षेत्रों में खड़े हैं।

उन्होंने कहा है की गत 10 साल में इन मुस्लिम बहुल विधानसभाओं से जो आम आदमी पार्टी के विधायक एवं पार्षद चुने गये उन्होने अपने वोट बैंक एवं आय दोनों को बढ़ाने के लिए अपने राजनीतिक सहयोगियों को आगे कर चौथी, पांचवी एवं छठी मंजिल बनावा कर उसमे छोटे छोटे किरायेदारों को बसाया।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की दिल्ली नगर निगम आयुक्त को तुरंत मुस्तफाबाद, करावल नगर, सीलमपुर, ओखला, मटिया महल, बल्लीमारन, सदर बाजार जैसे क्षेत्रों में चौथी मंजिल से ऊपर की मंजिल के मकानों और खस्ता खतरनाक मकानों का सर्वे करवा कर उन पर कार्यवाई के आदेश देने चाहिए।

बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के 135 जन्मोत्सव के साथ दस्तक ने मनाई अपनी रजत जयंती और बच्चों को किया सम्मानित

मुख्य संवाददाता

बोधिसत्व भारत रत्न बाबा डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी के 135 में जन्मोत्सव व दस्तक के रजत जयंती समारोह पर ₹आज की शाम बाबा साहब के नामर एवं दस्तक प्रतिभा पुरस्कार समारोह का आयोजन दिल्ली के कात्यायनी ऑडिटोरियम में किया गया।

समारोह में मुख्य अतिथि रहे रविंद्र सिंह (इंद्राज) मंत्री समाज कल्याण दिल्ली सरकार, विशेष अतिथि थे अनिल प्रथम पूर्व डीजीपी गुजरात, अध्यक्ष थे अनूप गुप्ता न्यासी सचिव, सोहन सिंह सेवा न्यास उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन बाबा साहब और गौतम बुद्ध की तस्वीर पर पुष्प चढ़ा कर अतिथियों द्वारा किया गया।

इस अवसर पर अतिथियों का स्वागत संस्था के अध्यक्ष एन के संत , दीपक इसरानी, कुंती देवी, रेनू संगत, मंजू कुमारी मनोज सोलानी व अन्य सदस्यों ने किया।

समारोह में दसवीं कक्षा में अच्छे अंक लाने वाले पांच बच्चों को सर्टिफिकेट और ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया दो बच्चों को 11-1100 का अतिरिक्त पुरस्कार स्वर्गीय ओम प्रकाश कोहली के परिवार की तरफ से दिया गया प्राथमिक विद्यालय के तीन बच्चों को भी कक्षा पंचम में अच्छे अंक लाने पर सम्मानित किया गया।

समारोह में मुख्य अतिथि रविंद्र सिंह ने सभी को बाबा साहब को पढ़ने के लिए प्रेरित किया और उनके विचार बताएं कहा कि जो निष्क्रिय है वही दलित है जो सक्रिय है वह दलित नहीं है। ज्ञान ही सफलता की कुंजी है। वही गुजरात के पूर्व डीजीपी अनिल प्रथम ने शिक्षा को जरूरी बताया।

कार्यक्रम का समापन राष्ट्रीय गान और बौद्ध व बाबा साहब के नमन के साथ हुआ।

खाटू श्याम दिल्ली धाम मंदिर में भगवान वाल्मीकि धाम - घनश्याम गुप्ता जावेरी

मुख्य संवाददाता

दिल्ली: भगवान वाल्मिकी धाम को बनाने वाले वाल्मीकि समाज नहीं अपितु अन्य जाति के व्यक्ति खाटू श्याम दिल्ली धाम के ट्रस्टी हैं जिनकी सोच से होगी सर्व समाज की स्थापना और सनातन में आएगी जागृति, हिंदू होगा एक और जल्द ही भारत बनेगा विश्व गुरु, यह कहना है खाटू श्याम दिल्ली धाम के राष्ट्रीय अध्यक्ष घनश्याम गुप्ता जावेरी का जिन्होंने प्रेस क्लब ऑफ़ इंडिया में पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए बताया कि खाटू श्याम दिल्ली धाम मंदिर में भगवान वाल्मीकि धाम का शिलान्यास होने जा रहा है, घनश्याम गुप्ता ने आगे बताया कि खाटू श्याम दिल्ली धाम भारत की राजधानी दिल्ली में एक लाख गज भूमि में बनने वाला श्याम बाबा का धाम जहाँ बन रहे है 36 धाम 36 घाट जिसे लोग दुनिया का आठवां अजूबा भी कहते है इसमें प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से 40 लाख लोग जुड़े है, इसे अखण्ड मिनी भारत भी कहा जा सकता है। आज पूरे विश्व में कहीं भी किसी भी मंदिर में ऐसा यश आपको देखने को नहीं मिलेगा, यह मंदिर ही नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति और

सनातन धर्म का सबसे बड़ा केंद्र बिंदु बन रहा है। खाटू श्याम दिल्ली धाम के राष्ट्रीय अध्यक्ष घनश्याम गुप्ता जावेरी ने बताया कि यहाँ बनने वाले 36 धामो में से एक धाम भगवान वाल्मीकि धाम जिसका शिलान्यास 20 अप्रैल 2025 को माननीय बी. एल. संतोष राष्ट्रीय संगठन महामंत्री भाजपा के द्वारा अपार जनसमूह के मध्य किया जायेगा, जो पूरे भारत का आकर्षण होगा। धर्म और सनातन भारतीय संस्कृति के संगम को दर्शाता विशाल भगवान वाल्मीकि धाम चारों दिशाओं से खुला है जो दो प्रतिमाओं से सुज्जाजित होगा, वाल्मीकि धाम का 60 प्रतिशत कार्य सम्पन्न हो चुका है भगवान वाल्मीकि की प्रतिमा के साथ साथ यहाँ भगवान राम दरबार के साथ लव कुश की प्रतिमा भी रहेगी साथ ही एक ही परिसर में वाल्मीकि धाम, अयोध्या धाम, गुरुद्वारा धाम, महावीर स्वामी धाम ०गौतम बुद्ध धाम बने है। घनश्याम गुप्ता जावेरी ने करनैल सिंह, एस. के. बोथरा, एस. एस. अग्रवाल, सुनील सिंह , हंसराज रल्हन, राजेंद्र गर्ग, विनय सिंघल के अनुकरणीय योगदान की प्रशंसा के साथ बताया कि वाल्मिकी धाम का शिलान्यास आयोजन बहुत ही भव्य और विशाल होगा। इस अवसर पर सभी ट्रस्टी जिसमे राष्ट्रीय महामंत्री संजीव मित्तल, रमेश गुप्ता, पवन सिंघल और राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष मधु गोयल, नवीन गर्ग, अनिल गुप्ता शामिल होंगे, सभी का मानना है कि यह मंदिर सोच से परे -लाखो व्यक्तियो का संगठन है जो दुनिया में पहली बार सनातन के बढ़ते कदम और आगे ले जायेगा।

दिल्ली विश्वविद्यालय एससी/एसटी शिक्षक संघ ने डॉ. भीमराव अंबेडकर की 134वीं जयंती को अभूतपूर्व एकता के साथ मनाया

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय एससी/एसटी शिक्षकों संघ (DUSCSTTA) ने भारतीय संविधान के मुख्य शिल्पकार और सामाजिक न्याय के अग्रदूत भारत रत्न बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर की 134वीं जयंती विश्वविद्यालय के ILLL सभागार में बहुत हर्षोल्लास से मनाई गई । इस कार्यक्रम में कार्यकारी परिषद (EC) और शैक्षणिक परिषद (AC) के सदस्यों, पूर्व EC/AC सदस्यों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन सामाजिक विज्ञान संकाय के डीन प्रो. संजय रॉय द्वारा किया गया। साथ ही, सामाजिक न्याय के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले प्रमुख वक्ताओं को बाबा साहब का कलेंडर, पुस्तक, प्रतीक चिन्ह, पंचशील पटका पहनाकर अभिनंदन एवं स्वागत भी किया गया।

मुख्य प्रतिभागियों में EC सदस्य डॉ. मिथुराज धूसिया और डॉ. मनीष कुमार (नामित), AC सदस्य डॉ. विवेक कुमार रजक और डॉ. देवेश बिड़वाल, तथा वरिष्ठ कार्यकर्ता जैसे प्रो. बलराज सिहमार, डॉ. हंसराज सुमन, प्रो मनोज कुमार कैन, प्रो. सुरेश कुमार, प्रो. रीना कनोजिया, प्रो. धनी राम, डॉ. श्याम कुमार, डॉ. पप्पू राम मीणा, डॉ. महेंद्र कुमार मीणा और डॉ. रवि शामिल रहे। इन सभी की उपस्थिति ने डॉ. अंबेडकर के समानता और सशक्तिकरण के सतत विजन के प्रति सामूहिक प्रतिबद्धता को दर्शाया।

दिल्ली विश्वविद्यालय के 30 से अधिक कॉलेजों ने इस आयोजन में भाग लिया, जिससे यह हाल के वर्षों में सबसे समावेशी समारोहों में से एक बन गया। वक्ताओं ने डॉ. अंबेडकर के राष्ट्र के प्रति अद्वितीय योगदान को रेखांकित किया और उनके जीवनभर के संघर्ष को याद किया, जो वंचित समुदायों के उत्थान और सामाजिक न्याय की संवैधानिक गारंटी सुनिश्चित करने के लिए समर्पित था।

DUSCSTTA के संयोजक डॉ. सिद्धार्थ ने सभा को

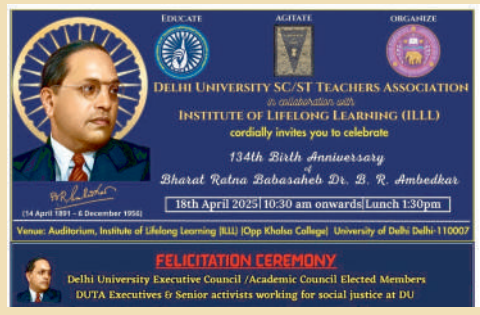

संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय में सरकारी कल्याणकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन की तत्काल आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने डॉ. अंबेडकर के दृष्टिकोण को साझा करते हुए एससी/एसटी शिक्षकों में एकता और समन्वय की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा, "हमारा संघ शिक्षकों को एकजुट करके संवैधानिक प्रावधानों और कल्याण योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए समर्पित है, ताकि वंचित वर्गों के अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित की जा सके।"

इस आयोजन से एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव यह पारित हुआ कि सभी कॉलेजों में डॉ. अंबेडकर जयंती का नियमित आयोजन किया जाएगा और विश्वविद्यालय स्तर पर DUSCSTTA के बैनर तले सामूहिक समारोह आयोजित किए जाएंगे। यह प्रस्ताव EC/AC सदस्यों द्वारा पूर्ण समर्थन के साथ पारित किया गया, जिसका उद्देश्य विश्वविद्यालय समुदाय में अंबेडकरवादी मिशन को और सशक्त करना है।

समारोह का समापन सामूहिक भोज के साथ हुआ, जिसने एकता और साझी प्रतिबद्धता की भावना को और प्रगाढ़ किया। DUSCSTTA सभी प्रतिभागियों का दिल से आभार व्यक्त करता है, जिनकी भागीदारी ने इस आयोजन को ऐतिहासिक सफलता दिलाई। संघ भविष्य में भी डॉ. अंबेडकर की विरासत को जीवित रखने के लिए निरंतर सहयोग की आशा करता है।

क्यों जरूरी है अपने आपको जानना, अपने आपको गहराई से समझना?

यह आध्यात्मिक ही नहीं, मनोवैज्ञानिक रुप से समझना भी जरूरी है।

हमें दूसरे लोग सदैव कारण के रुप में दिखाई देते हैं।
स्वयं को जानने से पता चलता है कि दूसरा व्यक्ति माध्यम है,
असली कारण तो हम ही हैं।
किसीने हमारी प्रशंसा की, हमें अच्छा लगा।हम प्रशंसक पर मेहरबान हो गये।
किसी ने हमारी निंदा की, हमें बुरा लगा। हमने दुश्मनी पाल ली।
देखने में ऐसा लगता है कि प्रशंसक या निंदक ही है असली कारण हमारी प्रतिक्रिया का।
ध्यान से देखें तो पायेंगे हम ही हैं असली कारण।
दूसरा व्यक्ति एक माध्यम,एक निमित्त से ज्यादा कहीं कुछ भी नहीं।
एक व्यक्ति को भयभीत करने की कोशिश की जाय, वह डरपोक है तो डर जायेगा, साहसी है तो नहीं डरेगा।
साहसी को डराने,दबाने की कोशिश महंगी पड़ सकती है।
वह निर्भय होकर हमला कर सकता है।
उसके लिए उसके साहस का कारण वह खुद है,दूसरा व्यक्ति नहीं।
जब तक यह भ्रम है कि अपनी हर प्रतिक्रिया के लिए दूसरा व्यक्ति जिम्मेदार है, सही बात नहीं समझी जा सकती।
एक स्थितप्रज्ञ व्यक्ति राग,भय,क्रोध रहित होता है।
क्या वह इसके लिए दूसरे को जिम्मेदार मानता है?
यदि वह दूसरे को जिम्मेदार मानता है तो वह कभी राग,भय,क्रोध रहित नहीं हो सकता।
वह समझता है कि वह स्वयं है असली कारण तो कुछ हो सकता है।
जब तक दूसरा जिम्मेदार है,कैसे समझा जा सकता है, स्वयं जिम्मेदारी ले तो ही कुछ संभव है।
यह जीवन के सभी क्षेत्रों में लागू होगा।
प्रियजन की मृत्यु हुई।मोह है तो दुख होगा,मोह नहीं है तो दुख नहीं होगा।
मोह अपना ही है।
किसीके संबंधी कट्टर दुश्मन हों तो उनकी मृत्यु पर अफसोस की जगह खुशी हो सकती है कि चलो अच्छा हुआ सिर का दर्द मिटा।
इन सब बातों में दूसरा व्यक्ति कारण है या माध्यम है?
माध्यम है ऐसा जाना तो ही अपने भीतर के राग-द्वेष दिखाई पड़ेंगे
या अपने राग-द्वेष को पहचाना तो दूसरा व्यक्ति एक माध्यम की तरह दिखाई पड़ेगा।
दूसरे को तो धन्यवाद देने के लिए कहा है।इसके कारण अपने भीतर क्रोध,घृणा,वैरवृति के होने का पता चलता है।
घृणा कितनी तकलीफ़ देती है फिर भी आदमी उसे छोड़ता नहीं।उसे लगता है कारण और है।
यदि वह वास्तविकता को जान ले तो वह उस व्यक्ति को धन्यवाद देगा कि तुम्हारे कारण मुझे पता चला कि मेरे भीतर घृणा मौजूद है जो मेरी असीम पीड़ा का कारण बनी हुई है।
अब अपने को तकलीफ़ देने वाली अपनी घृणा के साथ कुछ किया जाना संभव है।
अपना ही कारण है तो कुछ किया जा सकता है,
दूसरे के कारण है तो एकाएक कुछ करना मुश्किल है।
किसी ने मुझे कठोर शब्द कहे, मैं अहंकारी हूं तो वे शब्द चोट करेंगे।
मैं स्वस्थ हूं, आंतरिक ऊर्जा की अनुभूति से परिपूर्ण हूं तो किसीके कोई भी शब्द असर नहीं कर पायेंगे।
इसका मतलब मुझे अपने आपको ही देखना है कि मैं स्वयं स्वस्थ हूं या अस्वस्थ?
क्यों स्थितप्रज्ञ को प्रभावित नहीं किया जासकता?
क्यों कि उसकी प्रज्ञा स्थिर है।
वह वास्तविकता को भली-भांति समझता है।
वह अखंड है।
यह समझने जैसा है।
"To be is to be related;
there is no such thing as
isolated being."
क्या मैं जिसे अनुभव कर रहा हूं वह अनुभव होने वाला व्यक्ति तथा अनुभव करने वाला मैं
दो अलग-अलग अस्तित्व हैं
या एक ही है,जुड़े हुए हैं?
अनुभव होने वाला और अनुभव करने वाला दोनों जुड़े हुए हैं मेरे भीतर तो फिर संघर्ष कहां है?
क्यों मैं खुद
"मैं और मैं नहीं " में बंटा हुआ हुआ हूं?
बाहरी संबंध को हम मानते हैं कि उसे तोड़ा जा सकता है
लेकिन भीतर जो द्रष्टा-दृश्य जुड़े हुए हैं उसका क्या होगा?
तात्पर्य है हम जिसे दूसरा मान रहे हैं वह हम ही हैं।
दृश्य,द्रष्टा खुद है, कोई और नहीं है।
हमारे दो भाग हैं जो आपस में अच्छे या बुरे रुप में जुड़े हो सकते हैं।
कृष्ण कहते हैं -यह जीवात्मा खुद अपना ही शत्रु या मित्र है अर्थात और कोई शत्रु या मित्र नहीं है।
मैंने मेरे भीतर आपकी एक छबि बना रखी है उसे मैं शत्रु या मित्र की निगाह से देखता हूं।
पर आपकी वह छबि मैं ही हूं,मेरी ही बनाई हुई है और मैं उससे अनुकूल या प्रतिकूल रुप से संबंधित हूं।
अर्थात मेरे मुझसे संबंध अच्छे हैं या बुरे हैं।
मेरे मुझसे संबंध अच्छे हैं तो मैं अपने आपका मित्र हूं,
मेरे मुझसे संबंध बिगड़े हुए हैं तो मैं अपना शत्रु हूं, मैं अपने आपको ही नुकसान पहुंचा रहा हूं।
वस्तुत:आप न माध्यम हैं,न कारण हैं, दोनों मैं ही हूं।
फिर भी गहरी बात आसानी से समझ न आती हो,
दृष्टि बर्हिमुखी हो तो दूसरे को माध्यम की तरह देखना ठीक है ताकि उसके द्वारा स्वयं को, अपने स्वभाव, अपने विचार,अपनी वृतियों को ठीक तरह से समझा जा सके।
मैं क्या करता हूं, मैं कैसे सोचता हूं, कैसे अपने राग-द्वेष से निर्णय लेता हूं यह तो मुझे ही समझना रहा। तभी आंतरिक मुक्ति का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।
अपने आपको जानना सभी के लिए जरुरी है तभी असली कारण स्वयं है,अन्य व्यक्ति -घटना-परिस्थिति माध्यम मात्र है-यह गहरी समझ विकसित हो सकती है।
इसे न जानकर दूसरे को कारण मानने वाला व्यक्ति सदैव भय,क्रोध,घृणा आदि का शिकार बना रह सकता है।
स्वयं ही असली कारण है यह जानते ही आधी मुक्ति उसी समय हो गयी,शेष आधी मुक्ति अपनी आदत,अपनी समझ को ठीक करने से होती है।
उसमें समय लगता है
मगर समय है किसलिए?
सदुपयोग के लिए या स्वग्रक्षेपित संसार में उलझे रहने के लिए राग-द्वेष पूर्वक?
ग्रक्षेपक ही ग्रक्षेपित हो रहा है।
दोनों जुड़े हुए हैं।
इसलिए किसी से राग करना अपने आपसे राग करना है,
किसी से भय,घृणा आदि करना अपने आपसे भय,घृणा आदि करना है।
सूत्र है-
अपनी जगह भली प्रकार से रुक जाना तथा सामने जो है वह मैं ही हूं यह अनुभव करते हुए अपने आपको स्वीकार कर लेना, अपने आपको अपना लेना।
इससे आंतरिक, व्यक्तिगत खंड विलीन होते हैं तथा अखंडता प्रकट होती है।
जो व्यक्ति दृश्य को स्वयं से भिन्न मानकर उससे राग-द्वेष करता है उसे पसंद-नापसंद करता है वह भटक जाता है।
दूसरे को पसंद या नापसंद करने वाला व्यक्ति गहरे में खुद अपने आपको ही पसंद या नापसंद कर रहा होता है।
जैसे ही स्वयं को नापसंद किया आत्म पलायन शुरू हो जाता है।
कारण प्रतीत होता है बाहर, इससे व्यक्तिगत समस्या, सामूहिक समस्या का रुप ले लेती है।
ठीक कहा है-
"You and the world are not
separate;
your problem is the world 's
problem;
you bear the world in you;
without you it is not.
There is no isolation and there is
no object that is not related."
तात्पर्य है जो मानसिक व्यक्ति हमें कष्ट दे रहा है उससे हमें अहंकार छोड़कर संबंध सुधारने होंगे क्योंकि वह मानसिक व्यक्ति हम ही हैं, कोई दूसरा नहीं।
"The mind divides itself into
subject and object,
the seer and the seen.
So the outer world of names
and forms has no independent
existence."
कितनी निर्भय करने वाली है बात कि मैं सामने जिसे देख और अनुभव कर रहा हूं वह मेरा ही मुझसे अपृथक ग्रक्षेपण है।
उसका स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है।
हृदय की ही सत्ता है।
हृदय ही है,
मन को अपने में विलीन किये हुए।

बीमारी से बड़ी चुनौती: बाजार में बिकती जानलेवा दवाएं

[जब इलाज ही बन जाए मौत का कारण: घटिया दवाओं का खेल – कौन जिम्मेदार ?]

दवा वो अमृत है जो जीवन को संवारती है, बीमारी को हराती है, और इंसान को नई उम्मीद देती है। लेकिन जब यही दवा ज़हर बन जाए, जब इलाज की जगह मौत का सबब बनने लगे, तो यह न केवल स्वास्थ्य प्रणाली पर सवाल उठाता है, बल्कि समाज के हर उस हिस्से को झकझोरता है जो मानव जीवन की रक्षा का दावा करता है। भारत जैसे देश में, जहां स्वास्थ्य सेवाएं पहले ही सीमित संसाधनों और असीमित चुनौतियों के बीच जूझ रही हैं, वहां खतरनाक और घटिया दवाओं का बाजार में बिकना एक राष्ट्रीय संकट से कम नहीं है। हाल ही में सेंट्रल ड्रग्स स्टैंडर्ड कंट्रोल ऑर्गनाइजेशन (सीडीएससीओ - केंद्रीय औषध मानक नियंत्रण संगठन) द्वारा राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को ₹सब-स्टैंडर्ड₹ दवाओं पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने का निर्देश इस बात का स्पष्ट संकेत है कि हमारी दवा प्रणाली में गहरी खामियां मौजूद हैं। यह एक चेतावनी है—न केवल सरकार और दवा कंपनियों के लिए, बल्कि हर उस व्यक्ति के लिए जो अपनी सेहत के लिए दवाओं पर निर्भर है।

भारत, विश्व का दवा उत्पादन और निर्यात का सिरमौर, एक ऐसी महाशक्ति है जो लाखों जिंदगियों को बेहतर बनाने का दम रखता है। लेकिन इस सुनहरी उपलब्धि पर उस वक्त ग्रहण लग जाता है, जब नकली, घटिया और जानलेवा दवाएं बाजारों में बेरोकटोक बिकती हैं। मुनाफे की अंधी होड़ में कुछ दवा कंपनियां गुणवत्ता को ताक पर रख देती हैं, जिसका खामियाजा मासूम मरीजों को भुगतना पड़ता है। खासतौर पर 'फिक्स्ड डोज़ कॉम्बिनेशन' (एफडीसी) दवाएं, जिनमें दो या अधिक दवाओं का मिश्रण होता है, बिना ठोस वैज्ञानिक आधार और दीर्घकालिक प्रभाव की जांच के खतरनाक साबित हो सकती हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय की जांच ने कई दर्द निवारक, एंटीबायोटिक्स और एंटीएलर्जिक दवाओं को मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक ठहराया है। फिर भी, ये दवाएं धड़ल्ले से बाजार में बिकती रहीं, और अनगिनत लोग अनजाने में इनका शिकार बने। हाल ही में सर्दी, जुकाम, दर्द और संक्रमण के इलाज में इस्तेमाल होने वाली कई दवाएं प्रयोगशाला परीक्षणों में फेल पाई गईं। यह सिर्फ एक राज्य की समस्या नहीं, बल्कि पूरे देश को जकड़ चुके एक गंभीर संकट की भयावह तस्वीर है।

कैसे संभव है कि जानलेवा दवाएं बाजारों में धड़ल्ले से बिक रही हैं और हमारी निगरानी चुप है? हर नई दवा को बाजार में उतारने से पहले कठिन प्री-क्लिनिकल ट्रायल, ह्यूमन ट्रायल और लाइसेंसिंग की प्रक्रिया से गुजरना होता है। फिर भी, कुछ कंपनियां लाइसेंस हासिल करने के बाद, बिना दीर्घकालिक प्रभावों की गहन जांच के, दवाओं को बाजार में झोंक देती हैं। जब ये दवाएं बाद में हानिकारक साबित होती हैं, तो सवाल गूंजता है—पहली मंजूरी कैसे मिली? जवाब नियामक तंत्र की ढिलाई और निगरानी के अभाव में छिपा है। सीडीएससीओ और राज्य स्तरीय औषधि नियंत्रण प्राधिकरण भले ही गुणवत्ता जांच का दावा करें, लेकिन 'फेल्ड-ड्रग अलर्ट सिस्टम' के बावजूद समय पर कदम नहीं उठाए जाते। नमूने जांच के लिए भेजे तो जाते हैं, लेकिन परिणाम आने से पहले ही ये खतरनाक दवाएं लाखों लोगों की जिंदगियों को जोखिम में डाल चुकी होती हैं। यह महज लापरवाही नहीं, बल्कि इंसानी जिंदगियों के साथ खुला खिलवाड़ है।

यह संकट सिर्फ दवा कंपनियों की लापरवाही नहीं, बल्कि हमारी पूरी व्यवस्था की नाकामी का नंगा सच है! दवा निर्माताओं से लेकर वितरक, फार्मासिस्ट और डॉक्टर—हर कड़ी पर जवाबदेही तय होनी चाहिए। लेकिन सबसे बड़ा दायित्व सरकारी एजेंसियों का है। यदि नियमित निगरानी, पोस्ट-मार्केट सर्वे और पारदर्शी रिपोर्टिंग का मजबूत तंत्र हो, तो खतरनाक दवाओं को वक्त रहते रोका जा सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की चेतावनी भयावह है—हर साल लाखों लोग घटिया दवाओं के कारण अपनी जान गंवाते हैं या गंभीर दुष्प्रभावों का शिकार होते हैं। भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश में यह खतरा कई गुना भयंकर है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ चीख-चीखकर कह रहे हैं कि दवा कंपनियों पर कड़ा शिकंजा कसने की जरूरत है। नीति आयोग और स्वास्थ्य मंत्रालय को तुरंत एक सशक्त, स्वतंत्र मेडिकल रेगुलेटरी बोर्ड गठित करना चाहिए, जो न केवल दवाओं की मंजूरी दे, बल्कि उनकी गुणवत्ता और वितरण पर बाज की तरह नजर रखे।

जब दवा कंपनियों की नजर मुनाफे पर टिकी हो और सरकार का कर्तव्य जनता की सेहत की रक्षा करना हो, तो इस टकराव में पिसता कौन है? बेकसूर आम आदमी! यह एक ज्वलंत नैतिक सवाल है—क्या हम इंसानी जिंदगियों को कारोबार की भेंट चढ़ने देंगे? भारत को अब फैसला करना होगा: नागरिकों की जान पहले या मुनाफे की चकाचौंध? इस संकट से उबरने के लिए ठोस कदम उठाने का वक्त है। सबसे पहले, सीडीएससीओ को न केवल शक्तिशाली, बल्कि पूरी तरह जवाबदेह बनाना होगा। दूसरा, दवा परीक्षणों की हर प्रक्रिया को पारदर्शी करना जरूरी है, ताकि हर ट्रायल की जानकारी जनता के सामने हो। तीसरा, व्यापक जन-जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को दवाओं की गुणवत्ता की सच्चाई से रूबरू कराना होगा। चौथा, डॉक्टरों पर बिना जांचे-परखे दवाएं लिखने की प्रवृत्ति पर सख्त अंकुश लगाने के लिए कड़े दिशानिर्देश लागू करने होंगे। और सबसे अहम, जिन मासूमों ने खतरनाक दवाओं का सेवन कर नुकसान झेला, उनके लिए त्वरित मुआवजा और न्याय की गारंटी सुनिश्चित होनी चाहिए।

नकली दवाओं का खतरा केवल सरकारी नीतियों की कमी नहीं, बल्कि सामाजिक जागरूकता की अनदेखी का नतीजा है। हर नागरिक को यह समझना होगा कि सस्ती या बिना प्रमाणित दवाएं न केवल स्वास्थ्य को खतरे में डालती हैं, बल्कि जानलेवा भी साबित हो सकती हैं। जब उपभोक्ता अपनी जागरूकता से बाजार की बुराइयों को चुनौती देंगे, तभी नकली दवाओं का काला कारोबार थमेगा। साथ ही, दवा कंपनियों पर नैतिकता का दबाव बनाना जरूरी है। उन्हें यह अहसास कराना होगा कि उनकी भूमिका सिर्फ मुनाफा कमाने तक सीमित नहीं, बल्कि मानव जीवन की सुरक्षा सुनिश्चित करने तक है।

दवाएं जीवन की सांस हैं, न कि उसे छीनने का जहर। जब मुनाफे की भूख में इंसानियत को कुचलकर नकली दवाओं का कारोबार फलता है, तो यह सिर्फ नैतिकता की हार नहीं, बल्कि हमारे संवैधानिक सपनों पर तमाचा है। भारत जैसे देश में, जहां स्वास्थ्य सेवाएं पहले ही अनगिनत बाधाओं से जूझ रही हैं, दवाओं की गुणवत्ता से खिलवाड़ लाखों जिंदगियों को अंधेरे में धकेल देता है। अब वक्त है कि सरकार, दवा कंपनियां और हम सब एकजुट होकर एक ऐसी व्यवस्था गढ़ें, जहां स्वास्थ्य के नाम पर कोई धोखा न हो। क्योंकि सच्चा स्वास्थ्य सिर्फ शरीर की ताकत नहीं, बल्कि हर नागरिक को सुरक्षित, भरोसेमंद दवाएं देने का वादा है। यही वह चट्टान है, जिस पर एक मजबूत, स्वस्थ और समृद्ध भारत खड़ा होगा!

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

पत्नी सुख के चक्कर में कानपुर में लुटेरी दुल्हन का शिकार हुआ रिटायर्ड सीओडी कर्मी

– लाखों की जरूरत लेकर भागी लुटेरी दुल्हन की तलाश जारी, सुराग अब तक नहीं पहले भी तकरीबन आधा दर्जन लोग हो चुके लुटेरी दुल्हनों का शिकार

सुनील बाजपेई

कानपुर। पत्नी सुख के चक्कर में एकांकी जीवन बिताने वाला सेवानिवृत्ति सी ओडी कर्मी लुटेरी दुल्हन का शिकार हो गया। वह लाखों के जेवरात लेकर भाग गई ,जिसके बाद पुलिस उसकी तलाश कर रही है, लेकिन उसका सुराग अब तक नहीं मिल पाया है। खास बात यह भी कि लुटेरी दुल्हन का शिकार होने वाला यह सीओडी कर्मी पहला नहीं है। इसके पहले भी तकरीबन आधा दर्जन लोग इसी तरह से शिकार बनाए जा चुके हैं।

प्राप्त विवरणके मुताबिक मूलरूप से सीतापुर निवासी रिटायर्ड सीओडी कर्मी 62 साल के हरीश कुमार शुक्ला के परिवार में कोई न होने के चलते वह एकाकी जीवन जी रहे थे। साथ ही नौकरी के दौरान वे सनिगवां में एक किराये के मकान में रह रहे थे।

तभी उनकी मुलाकात दूसरे मकान में किराये पर रहने वाली महिला (45) के साथ हुई। इसके बाद दोनों में बातचीत होती थी। हरीश कुमार ने बताया कि महिला ने उनके एकाकी जीवन को देखकर उनसे शादी कर देखभाल करने का झांसा दिया।

इसके बाद बीती 11 फरवरी 2025 को उन्होंने महिला से आर्य समाज मंदिर में शादी कर ली। हरीश कुमार ने बताया कि वह महिला को लेकर सनिगवां में ही किराये के मकान में रहने लगे।

पीड़ित ने पुलिस को बताया कि आरोप है कि एक-दो दिन रुकने के बाद महिला देर रात तीन लाख रुपए नगद और दो लाख की कीमत के जेवर लेकर फरार हो गई ।पुलिस की तलाश कर रही है लेकिन समाचार लिखे जाने तक कोई सुराग नहीं मिल पाया है।

गाजियाबाद पुलिस की नई पहल, पीड़ितों को घर पर मिलेगी एफआईआर की कॉपी; थाना प्रभारी करेंगे ये काम

परिवहन विशेष न्यूज

गाजियाबाद के पुलिस कमिश्नर जे रविंद्र गौड़ ने पुलिसिंग को बेहतर बनाने के लिए कई अहम कदम उठाए हैं। अब पीड़ितों को उनके घर पर एफआईआर की कॉपी मिलेगी और क्षेत्र में अवैध धंधे चलने पर थाना प्रभारियों के खिलाफ कार्रवाई होगी। पुलिस कमिश्नर ने सभी थाना प्रभारियों को निर्देश दिया है कि हर दर्ज एफआईआर की एक कॉपी संबंधित व्यक्ति को उसके घर तक पहुंचाई जाए।

गाजियाबाद। पुलिस कमिश्नर जे रविंद्र गौड़ ने बेहतर पुलिसिंग की दिशा में बड़ी पहल की है। उन्होंने निर्देश दिए हैं कि पुलिस एफआईआर की कॉपी पीड़ित के घर पहुंचाएगी। अगर क्षेत्र में कोई अवैध धंधा चलता मिला तो थाना प्रभारी के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

पुलिस लाइन में जिले के सभी थाना प्रभारियों व पुलिस अधिकारियों के साथ बैठक में पुलिस कमिश्नर ने निर्देश दिए कि हर दर्ज एफआईआर की एक कॉपी संबंधित व्यक्ति को उसके घर तक पहुंचाई जाए।

इसके खिलाफ होगी कार्रवाई

इसके अलावा सट्टा, जुआ, अवैध शराब, भू-माफिया गतिविधियों व अवैध कब्जे की सूचना पर तुरंत सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि वरिष्ठ नागरिकों, महिलाओं, बच्चों, दिव्यांगजनों व गरीबों के साथ किसी भी प्रकार का दुर्व्यवहार बर्दाश्त नहीं किया जाएगा और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

थाना प्रभारी करेंगे ये काम

सभी थाना प्रभारी रोजाना सुबह 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक जनता से मिलेंगे और उनकी समस्याओं का समाधान करेंगे। किसी भी पुलिसकर्मी के रिश्वत लेने की सूचना मिलने पर सख्त कार्रवाई भी की जाएगी।

इसके अलावा एफआईआर दर्ज करने की प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने, बीट प्रणाली को मजबूत करने, चरित्र सत्यापन आदि को गंभीरता से लेने पर विशेष जोर दिया गया है।

कमिश्नर ने स्पष्ट किया कि क्रॉस एफआईआर के मामले में जांच के बाद ही मामला दर्ज किया जाएगा तथा किसी के खिलाफ मनमाने तरीके से कार्रवाई नहीं की जाएगी।

श्रीमद् भगवत गीता व भरत मुनि के नाट्यशास्त्र को यूनेस्को ने अपनी मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रिकॉर्ड रजिस्टर में शामिल किया

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर भारतीय संस्कृति सभ्यता व कला भारत की प्रतिष्ठित धरोहर है,यह भारतीय दर्शन कलात्मक व सभ्यता के स्तंभ हैं। मेरा मानना है कि जहां भी संस्कृति सभ्यता आध्यात्मिकता व मानवीय भावों की चर्चा होगी तो भारत का नाम जरुर लिया जाएगा, क्योंकि यह सभी भारत की जड़ों में है। भारत की ऐसी धरोहरें ही भारतिय ज्ञान परंपरा और सांस्कृतिक धरोहर की समृद्धि है, जिसने भारत की वैश्विक मंचों पर अपनी प्रतिष्ठा का पताका लहराया है, जो रेखा अंकित करने वाली बात है। आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्यों कि भारत की ज्ञान परंपरा और सांस्कृतिक धरोहरों की समृद्धि ने वैश्विक मंच पर एक बार फिर अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की है। 17 अप्रैल को यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन) ने अपने मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर में भारत के दो महान ग्रंथों भगवद गीता और भरत मुनि के नाट्यशास्त्र को शामिल कर भारत की शाश्वत परंपरा और सांस्कृतिक उत्कृष्टता को वैश्विक स्तर पर मान्यता दी है। यह केवल भारत के लिए नहीं बल्कि वैश्विक संस्कृति और पूरी मानवता के लिए गर्व का विषय है क्योंकि ये दोनों ग्रंथ न केवल भारतीय जीवन दृष्टिकोण के दर्पण हैं बल्कि विश्व सभ्यता को भी दिशा देने वाले दार्शनिक और कलात्मक प्रकाश स्तंभ भी हैं। इस मान्यता ने यह सिद्ध कर दिया है कि भारत की आध्यात्मिक , सांस्कृतिक और कलात्मक परंपराएं आज भी उतनी ही प्रासंगिक और प्रभावशाली हैं, जितनी वे सहस्रों वर्ष पूर्व थी। चूँकि भगवत गीता व नाट्यशास्त्र न केवल ग्रंथ है बल्कि मानवीय जीवन के लिए प्रेरणा स्रोत भारतीय दर्शन कलात्मक व सभ्यता के स्तंभ भी हैं तथा भारत की सांस्कृतिक धरोहर को ऐतिहासिक वैश्विक सम्मान मिलना अत्यंत गौरवपूर्ण बात है इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, श्रीमद् भगवत गीता व भरत मुनि के नाट्य शास्त्र को यूनेस्को ने अपने मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रिकॉर्ड रजिस्टर में शामिल किया।

साथियों बात अगर हम यूनेस्को के मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रिकॉर्ड रजिस्टर को जानने की करें तो, यह दस्तावेजी धरोहरों का अंतर्राष्ट्रीय मंच है। यूनेस्को द्वारा मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड कार्यक्रम विश्व की महत्वपूर्ण दस्तावेजी धरोहरों को संरक्षित करने, उनका डिजिटलीकरण और प्रचार- प्रसार करने और उन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता देने के उद्देश्य से 1992 में प्रारंभ किया गया था, जिसका मुख्य उद्देश्य ऐसे ऐतिहासिक ग्रंथों, पांडुलिपियों, अभिलेखों, चित्रों, ऑडियो-विजुअल सामग्री और अन्य दस्तावेजी धरोहरों को संरक्षण प्रदान करना और इन्हें सार्वभौमिक विरासत के रूप में स्थापित करना है, जो मानव सभ्यता की स्मृति और संस्कृति को संरक्षित करते हैं। दस्तावेजों की सुरक्षा, डिजिटलीकरण और वैश्विक प्रदर्शन इस बात को सुनिश्चित करता है कि हमारी धरोहरें समय के प्रवाह में विलुप्त न हों बल्कि युगों-युगों तक प्रासंगिक बनी रहें। यूनेस्को के इस रजिस्टर में किसी दस्तावेज को शामिल किया जाना उसकी वैश्विक मान्यता और कालातीत महत्व का प्रमाण होता हैयूनेस्को की अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार समिति और कार्यकारी बोर्ड द्वारा चयन की गई प्रविष्टियां न केवल संबंधित देशों की धरोहर को मान्यता देती हैं बल्कि शोध, शिक्षा और सांस्कृतिक संवाद को भी बढ़ावा देती हैं।मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड में भारत की 14 प्रविष्टियां व 2025 में यूनेस्को की दस्तावेजी धरोहरों की नई सूची में कुल 74 नए संग्रहों को स्थान दिया गया है, जिससे अब तक इस रजिस्टर में शामिल अभिलेखों की संख्या बढ़कर 570 हो गई है, जो 72 देशों और चार अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से संबंधित हैं। इस वर्ष की प्रविष्टियों में वैज्ञानिक क्रांति, 'इतिहास में महिलाओं का योगदान' और 'बहुपक्षवाद' जैसे विषयों की झलक मिलती है, जिससे स्पष्ट होता है कि यूनेस्को का उद्देश्य केवल दस्तावेजों का संरक्षण ही नहीं बल्कि मानवता के सांझा मूल्यों और इतिहास की रक्षा भी है।गीता और नाट्यशास्त्र के शामिल होने के साथ अब भारत की कुल 14 प्रविष्टियां 'मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड' रजिस्टर में हो चुकी हैं, जिससे प्रमाणित होता है कि भारत अपने दस्तावेजी धरोहरों के संरक्षण और उन्हें विश्व मंच पर प्रस्तुत करने के प्रति प्रतिबद्ध है। इससे पहले ताम्रपत्र, ऋग्वेद, तुलसीदास की रामचरितमानस, पंचतंत्र और अष्टाध्यायी जैसी महत्वपूर्ण कृतियों को भी इसमें स्थान मिल चुका है। भारत के लिए यह न केवल सांस्कृतिक प्रतिष्ठा का विषय है बल्कि भावी पीढ़ियों के लिए चेतना-संवर्धन का माध्यम भी है।

साथियों बात अगर हम दोनों ग्रंथों को यूनेस्को रिकॉर्ड में शामिल करने पर भारतीय संस्कृति की वैश्विक विजय होने की करें तो, बहरहाल, गीता और नाट्यशास्त्र को यूनेस्को के मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल किया जाना केवल औपचारिक मान्यता नहीं है बल्कि यह भारत की चिरंतन संस्कृति, शाश्वत ज्ञान और कलात्मक उत्कृष्टता की वैश्विक विजय है। भगवद गीता और नाट्यशास्त्र को यूनेस्को द्वारा आधिकारिक रूप से विश्व स्मृति में शामिल किए जाने के बाद इनके संरक्षण, डिजिटलाइजेशन और अंतर्राष्ट्रीय शोध में तेजी आ सकती है। यह भारत की केवल

एक सांस्कृतिक उपलब्धि नहीं है बल्कि यह भारत की शाश्वत ज्ञान परंपरा की उस शक्ति का प्रतीक है, जो आज भी मानवता को दिशा देने की क्षमता रखती है। भारत के लिए यह एक विशेष अवसर है कि वह अपने अन्य प्राचीन ग्रंथों और अभिलेखों को भी इसी प्रकार संरक्षित कर वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करे, जैसे वेद, उपनिषद तंत्र ग्रंथ, आयुर्वेद संहिताएं, वास्तु शास्त्र आदि भी इस श्रेणी में सम्मिलित किए जा सकते हैं। यह एक प्रेरणादायक अवसर है कि हम अपनी धरोहरों को न केवल संरक्षित करें बल्कि उन्हें विश्व के साथ साझा भी करें। यह उपलब्धि उन अनगिनत ऋषियों, कलाकारों, विचारकों और शिल्पियों के प्रति श्रद्धांजलि है, जिन्होंने इस ज्ञान को रचा, संजोया और आगे बढ़ाया। यह भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण की दिशा में एक और सशक्त कदम है।

साथियों बात अगर हम इन दोनों ग्रंथों भगवत गीता व नाट्य शास्त्र को ही क्यों चुना गया इसको समझने की करें तो, भगवद गीता के 18 अध्यायों में 700 श्लोक हैं। यह महाभारत काल का एक अनुपम हिंदू धर्मग्रंथ है।यह वैदिक, बौद्ध, जैन और चार्वाक जैसे प्राचीन भारतीय धार्मिक विचारों का मिश्रण है। यह कर्तव्य, ज्ञान और भक्ति के महत्त्व पर आधारित है। भगवद गीता को सदियों से पूरी दुनिया में पढ़ा गया है और कई भाषाओं में अनुवाद किया जा चुका है। यूं कह लें कि यूनेस्को ने अभूतपूर्व देरी से ही सही, एक बहुत ही उचित दिशा में पहल बहुत सही की है।

साथियों बात अगर हम इन ग्रंथो के वैश्विक सम्मान पर भारत के शाश्वत ज्ञान और कलात्मक प्रतिभा का जुनून मनाने की करें तो, भरत मुनि का नाट्यशास्त्र प्रदर्शन कलाओं का वर्णन करने वाले संस्कृत काव्य छंदों का संग्रह है। इसमें नाट्य (नाटक), अभिनय, रस (सौंदर्य अनुभव), भाव (भावना), संगीत आदि को परिभाषित करने वाले नियमों का एक व्यापक दृष्टिकोण हैं। यह कलाओं पर एक प्राचीन विश्वकोश ग्रंथ है। यह भारतीय रंगमंच, काव्यशास्त्र, सौंदर्यशास्त्र नृत्य और संगीत को प्रेरित करता है। ये दोनों ग्रंथ लंबे समय से भारत की सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत के मूल आधार रहे हैं।यह वैश्विक सम्मान भारत के शाश्वत ज्ञान और कलात्मक प्रतिभा का जश्न मनाता है। ये कालजयी कृतियां साहित्यिक खजाने से बढ़कर हैं। ये दर्शन और सौंदर्य का भंडार हैं। इन ग्रंथों में भारत के वैश्विक दृष्टिकोण की झलक देखने को मिलती है। ये ग्रंथ भारतवासियों के सोच, विचार और दृश्टि के परिचायक हैं।बता दें कि मेमोरी ऑफ वर्ल्ड रजिस्टर में दुनियाँ के लिए उपयोगी और वैश्विक स्तर के दस्तावेजों कोशामिल किया जाता है। इंटरनेशनल अडवाइजरी कमेटी की सिफारिश के बाद इसमें किसी दस्तावेज को जगह दी जाती है। इससे किसी दस्तावेज की अहमियत का पता चलता है और इसकी सुरक्षा के लिए भी काम किया जाता है। मई 2023 तक 494 अभिलेखों को इसमें शामिल किया गया था।बता दें कि भरत मुनि के नाट्यशास्त्र में संगीत की विधाओं के साथ ही साहित्य की कई विधाओं को सूक्ष्मता से दर्शाया गया है। इसमें गायन, नृत्य, कविता , नाटक और सौंदर्यशास्त्र की अन्य विधाएं शामिल हैं। कहा जाता है कि भरत मुनि के नाट्यशास्त्र से ही आधुनिक समय में कई वाद्ययंत्रों की जानकारी मिली है। वहीं श्रीमद्भगवद्गीता सनातन धर्म के सबसे पवित्र ग्रंथों में से एक है। भरत मुनि के नाट्यशास्त्र में संगीत की विधाओं के साथ ही साहित्य की कई विधाओं को सूक्ष्मता से दर्शाया गया है। इसमें गायन, नृत्य, कविता , नाटक और सौंदर्यशास्त्र की अन्य विधाएं शामिल हैं। कहा जाता है कि भरत मुनि के नाट्यशास्त्र से ही आधुनिक समय में कई वाद्ययंत्रों की जानकारी मिली है। वहीं श्रीमद्भगवद्गीता सनातन धर्म के सबसे पवित्र ग्रंथों में से एक है।

साथियों बात अगर हम इस उपलब्धि पर भारतीय प्रधानमंत्री और केंद्रीय संस्कृत मंत्री ने एक्सःपर इस उपलब्धि को गौरव का क्षण बताने की करें तो, उन्होंने कहा यह भारत की सांस्कृतिक विरासत के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। प्रधानमंत्री ने इसे भारत के लिए गर्व का क्षण बताया है। उन्होंने कहा कि यह हमारी प्राचीन ज्ञान और संस्कृति को वैश्विक स्तर पर पहचान है।यूनेस्को का मेमोरी ऑफ वर्ल्ड रजिस्टर दुनिया की महत्वपूर्ण दस्तावेजी धरोहरों को बचाने और उन्हें हमेशा के लिए उपलब्ध कराने की एक कोशिश है। इस लिस्ट में शामिल होने से अतीत के इन धरोहर ग्रंथों को सुरक्षित रखने में मदद मिलेगी।केंद्रीय संस्कृति और पर्यटन मंत्री ने एक्स पर लिखा कि भारत की सभ्यतागत विरासत के लिए यह एक ऐतिहासिक क्षण है। यह वैश्विक सम्मान भारत के शाश्वत ज्ञान और कलात्मक प्रतिभा का जश्न मनाता है। भगवद् गीता एक प्रतिष्ठित धर्मग्रंथ और आध्यात्मिक मार्गदर्शक है। नाट्यशास्त्र, प्रदर्शन कलाओं पर एक प्राचीन ग्रंथ है। यह लंबे समय से भारत की बौद्धिक और सांस्कृतिक पहचान का प्रमुख स्तंभ है।उन्होंने कहा कि ये कालातीत रचनाएं साहित्यिक खजाने से कहीं अधिक हैं। वे दार्शनिक और सौंदर्यवादी आधार हैं जिन्होंने भारत के विश्व दृष्टिकोण और हमारे सोचने, महसूस करने, जीने और अभिव्यक्त करने के तरीके को आकार दिया है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि श्रीमद् भगवत गीता व भरत मुनि के नाट्यशास्त्र को यूनेस्को ने अपनी मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रिकॉर्ड रजिस्टर में शामिल किया भारत के सांस्कृतिक धरोहर को ऐतिहासिक वैश्विक सम्मान मिलना अत्यंत गौरवपूर्ण है।श्रीमद् भगवत गीता व नाट्य शास्त्र केवल ग्रंथ ही नहीं बल्कि मानवीय जीवन के लिए प्रेरणा स्रोत, भारतीय दर्शन कलात्मक व सभ्यता के स्तंभ भी हैं।

पीएम मोदी ने की एलोन मस्क से बात, जल्द लॉन्च होगी भारत में टेस्ला की इलेक्ट्रिक कार ?

परिवहन विशेष न्यूज

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और एलन मस्क की हालिया बातचीत के बाद भारत में टेस्ला की एंट्री को लेकर उम्मीदें बढ़ गई हैं। पीएम ने तकनीक और नवाचार पर सहयोग की बात कही वहीं मस्क ने भारत दौरे की पुष्टि की है। रिपोर्ट्स के अनुसार टेस्ला भारत में Model 3 और Model Y से शुरुआत कर सकती है। पुणे-मुंबई हाईवे पर इसकी टेस्टिंग भी देखी गई है।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में जल्द ही Tesla की एंट्री होने वाली है। जबसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी वाशिंगटन डीसी में दुनिया के सबसे अमीर इंसान और इलेक्ट्रिक कार बनाने वाली कंपनी टेस्ला के मालिक एलन मस्क से मिलकर आए है, उसके बाद से भारत में टेस्ला की कारों की टेस्टिंग भी शुरू हो गई है। इतना ही टेस्ला भारत में शोरूम खोलने के लिए तीन शहरों में जगह पर फाइनल कर चुकी है। एक बार फिर से टेल्सा का भारत में लॉन्च होने की उम्मीद बढ़ गई है। इस बार की वजह पीएम मोदी खुद है। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म X पर एलन मस्क की तारीफ करते हुए ट्वीट किया है।

पीएम मोदी ने क्या लिखा ?

मैंने एलन से बातचीत की और कई विषयों पर चर्चा की, जिनमें वे मुद्दे भी शामिल हैं जो इस साल की शुरुआत में वाशिंगटन डीसी में हुई हमारी बैठक के दौरान उठाए गए थे। हमने तकनीक और नवाचार के क्षेत्रों में सहयोग की असीम संभावनाओं पर चर्चा की। भारत, इन क्षेत्रों में अमेरिका के साथ अपनी साझेदारी को और मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है।

एलन मस्क ने दिया ये जवाब

पीएम मोदी के इस ट्विट का जवाब देते हुए एलन मस्क ने लिखा कि प्रधानमंत्री मोदी से बातचीत करना मेरे लिए सम्मान की बात रही। मैं इस साल के अंत में भारत आने के लिए उत्सुक हूं!

एलन मस्क के इस जवाब से साफ दिख रहा है कि वह भारत में इस साल के अंत तक आ सकते हैं। इससे भारत में टेस्ला की इलेक्ट्रिक कार के लॉन्च होने की उम्मीद बढ़ गई है।

इन कारों के साथ टेस्ला भारत में कर सकती है एंट्री

रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी की ओर से सबसे पहले दो कारों को भारतीय बाजार में ऑफर किया जाएगा। जिसके कुछ समय बाद पोर्टफोलियो की अन्य कारों को भी लाया जा सकता है। जानकारी के मुताबिक जिन कारों को सबसे पहले लाया जा सकता है उनमें Model 3 और Model Y शामिल हैं।

भारत में टेस्टिंग के दौरान टेस्ला कार स्पॉट

सोशल मीडिया पर एक पोस्ट वायरल हो रही है। जिसमें टेस्ला की एक कार को भारतीय सड़कों पर टेस्टिंग के दौरान देखा जा सकता है। महाराष्ट्र के पुणे आधारित आशीष पोल ने अपने X अकाउंट से दो वीडियो पोस्ट की हैं। इन वीडियो में Tesla की नई Electric Car को मुंबई-पुणे हाईवे पर टेस्टिंग के दौरान चलाते हुए दिखाया गया है।

2025 हीरो स्प्लेंडर प्लस के 5 शानदार फीचर्स, जो इसे बनाते हैं बेजोड़

परिवहन विशेष न्यूज

हाल ही में हीरो मोटोकॉर्प ने 2025 Hero Splendor Plus को कुछ अपडेट के साथ लॉन्च किया है। इसमें अब OBD-2B के अनुकूल इंजन दिया गया है। इसके इंजन को पहली की तरह ही 4-स्पीड गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है। इसमें हैलोजन हेडलैंप एक एनालॉग इंस्ट्रूमेंट कंसोल के साथ स्पीडोमीटर फ्यूल गेज और टेल-टेल लाइट्स दिए गए हैं।

नईदिल्ली। भारतीय बाजार मे सबसे ज्यादा बिकने वाली और सबसे ज्यादा पॉपुलर मोटरसाइकिल हीरो स्प्लेंडर प्लस कोइ एक अपडेट मिला है। इस अपडेट के बाद यह और भी ज्यादा बेहतरीन हो गई है। इसका इंज अब पहले के मुकाबले ज्यादा बेहतर हो गई है। यह बाइक कई वेरिएंट में ऑफर की जाती है। आइए जानते हैं 2025 Hero Splendor Plus की 5 सबसे खास बातें, जिसे आपको खरीदने से पहले जानना चाहिए।

नया इंजन

2025 हीरो स्प्लेंडर प्लस में अभी भी वही 97.2cc, एयर-कूल्ड, सिंगल-सिलिंडर इंजन का इस्तेमाल किया गया है। इसका इंजन 7.9 PS की पावर और 8.05 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसका इंजन अब OBD-2B के अनुकूल है। इसके इंजन को 4-स्पीड गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है।

अंडरपिनिंग्स

Splendor Plus के सभी वेरिएंट में अंडरपिनिंग्स एक जैसा ही है। इसके दोनों सिरों पर 80-सेक्शन ट्यूबलेस टायर के साथ 18-इंच के अलॉय व्हील मिलता है। टेलिस्कोपिक फोर्क और 5-स्टेप प्रीलोड एडजस्टेबल ट्विन शॉक एब्जॉर्बर भी पिछले नॉन-OBD-2B मॉडल से लिए गए हैं। दोनों सिरों पर 130 मिमी ड्रम के साथ,एक्सटेक डिस्क को छोड़कर जिसमें 240 मिमी फ्रंट डिस्क ब्रेक मिलता है। यह वेरिएंट 100cc सेगमेंट में एकमात्र बाइक है जिसमें फ्रंट डिस्क ब्रेक मिलता है।

फीचर्स

2025 Hero Splendor Plus में हैलोजन हेडलैंप, एक एनालॉग इंस्ट्रूमेंट कंसोल के साथ स्पीडोमीटर, फ्यूल गेज और टेल-टेल लाइट्स दिए गए हैं। वहीं, इसके Xtec 2.0 में ब्लूटूथ के ज़रिए स्मार्टफोन कनेक्टिविटी के साथ हैलोजन हेडलैंप और LCD इंस्ट्रूमेंट कंसोल के साथ LED DRL दिया जाता है। plendor Xtec 2.0 में एक ही डिजिटल कनेक्टेड कंसोल के साथ-साथ इंटीग्रेटेड DRL के साथ एक फुल-LED हेडलाइट मिलती है। इसमें हैज़र्ड लाइट फंक्शन मिलता है, जो सभी इंडिकेटर को चालू करता है।

इसके बेस वेरिएंट को छोड़कर बाकी सभी वेरिएंट में i3S सिस्टम मिलता है, जो बाइक के कुछ समय के लिए निष्क्रिय होने पर इंजन को बंद कर देता है, और क्लच को सिर्फ दबाने से स्टार्ट भी हो जाता है।

प्रतिद्वंद्वी

2025 Hero Splendor Plus का मुकाबला भारतीय बाजार में 100cc कम्यूटर बाइक सेगमेंट में होंडा शाइन 100 और बजाज प्लेटिना 100 से होता है। हर किसी के लिए कुछ न कुछ है, एक बेसिक कम्यूटर से लेकर कनेक्टिविटी और फ्रंट डिस्क ब्रेक वाली फीचर-लोडेड बाइक तक।

मॉनसून का बढ़िया अनुमान, दोपहिया वाहन सेक्टर में खुशी की लहर

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। भारतीय मौसम विभाग (आईएमडी) के इस बार के मॉनसून के लिए सामान्य से ज्यादा बारिश के अनुमान ने टू-व्हीलर सेक्टर में एक नई उम्मीद जगा दी है। बीते कुछ महीनों में जब टू-व्हीलर की मांग काफी धीमी हो गई थी और कंपनियों को ग्राहकों को लुभाने के लिए तरह-तरह के ऑफर्स देने पड़ रहे थे, ऐसे समय में यह खबर राहत देने वाली है।

जून से सितंबर तक अच्छी बारिश का अनुमान

आईएमडी के मुताबिक, जून से सितंबर तक होने वाली बारिश, जो देश की कुल सालाना बारिश का 75 प्रतिशत हिस्सा होती है और भारत की अर्थव्यवस्था का एक बड़ा इंजन मानी जाती है, इस बार लंबी अवधि के औसत का 105 प्रतिशत रहने की संभावना है।

ग्रामीण इलाकों में बढ़ेगी मांग

भारत में टू-व्हीलर की 55 प्रतिशत से ज्यादा मांग ग्रामीण इलाकों से आती है, जो खेती पर निर्भर करते हैं। जब मॉनसून अच्छा होता है, तो खेती का उत्पादन बढ़ता है और ग्रामीण इलाकों की आमदनी में इजाफा होता है। इससे विवेकाधीन खर्च यानी जरूरी चीजों के अलावा भी खरीदारी होती है, जिसमें टू-व्हीलर खरीदना भी शामिल है।

कंपनियों ने ली राहत की सांस

आईएमडी के इस सकारात्मक अनुमान के बाद टू-व्हीलर कंपनियों के बीच काफी राहत महसूस की जा रही है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, एक टू-व्हीलर कंपनी के वरिष्ठ बिक्री अधिकारी ने कहा, '2023 में असल बारिश 96 प्रतिशत रही थी, लेकिन जो मुख्य क्षेत्र है जहां बारिश पर खेती ज्यादा निर्भर करती है, वहां 101 प्रतिशत बारिश हुई थी। उस साल टू-व्हीलर की बिक्री में 13 प्रतिशत की बढ़त हुई थी। पिछले साल भी ज्यादा बारिश हुई और बिक्री 9 प्रतिशत बढ़ी। तो साफ है कि अच्छी बारिश सीधे तौर पर टू-व्हीलर बिक्री को बढ़ावा देती है।'

शहरी इलाकों में अब भी सुस्ती

बीते कुछ समय से शहरी इलाकों में टू-व्हीलर की मांग कमजोर बनी हुई है। इसकी वजह महंगाई, पेट्रोल-डीजल के बढ़ते दाम और लोगों का रुझान प्रीमियम या इलेक्ट्रिक गाड़ियों की ओर बढ़ना है। बजाज ब्रोकिंग रिसर्च के अनुसार, 'अगर फसल अच्छी होगी और ग्रामीण इलाकों में नकदी का प्रवाह बेहतर रहेगा, तो वहां के लोग किफायती टू-व्हीलर जैसे कि एंट्री-लेवल मोटरसाइकिल और स्कूटर खरीदने में रुचि दिखाएंगे। इससे शहरी इलाकों की कमजोर मांग का कुछ हद तक संतुलन बन सकता है, खासकर उन कंपनियों के लिए जिनकी ग्रामीण पकड़ मजबूत है।'

अगले साल अच्छी ग्रोथ की उम्मीद

आईसीआरए (ICRA) का अनुमान है कि वित्त वर्ष 2026 में टू-व्हीलर इंडस्ट्री की वॉल्यूम ग्रोथ 6-9 प्रतिशत के बीच रहेगी। वहीं, फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन (FADA) ने भी मिड-टू-हाई सिंगल डिजिट ग्रोथ का अनुमान जताया है। वित्त वर्ष 2025 में घरेलू बाजार में टू-व्हीलर की बिक्री 19.6 मिलियन यूनिट रही, जो वित्त वर्ष 2024 के मुकाबले 9 प्रतिशत की बढ़ोतरी है।

इस हफ्ते की टॉप 5 बाइक न्यूज, मोटरसाइकिल की दुनिया के लिए कैसा रहा यह सप्ताह

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। भारतीय दोपहिया वाहन उद्योग अप्रैल के इस सप्ताह में एक बाग फिर से चर्चा में रहा। इस सप्ताह कई नई बाइक्स और स्कूटर्स को अपडेट मिलने साथ उन्हें लॉन्च किया गया। खासकर हीरो मोटोकॉर्प और टीवीएस ने अपने नए मॉडल्स के जरिए लोगों को काफी आकर्षित किया। आइए जानते हैं कि 14 अप्रैल से लेकर 19 अप्रैल 2025 के बीच मोटरसाइकिल की दुनिया के लिए कैसा रहा ?

1. 2025 Hero Glamour

हीरो मोटोकॉर्प ने अपनी पॉपुलर 125cc बाइक Hero Glamour को OBD-2B (On-Board Diagnostics) इंजन के साथ लॉन्च किया है। इसके साथ ही इसे कई बेहतरीन फीचर्स से लैस भी किया गया है। जिसकी वजह से इसकी कीमतों में बढ़ोतरी भी हुई है। इसमें कॉस्मेटिक बदलाव भी देखने को मिलते हैं।

2. 2025 TVS Apache RR 310

टीवीएस ने अपने फ्लैगशिप स्पोर्ट्स बाइक 2025 TVS Apache RR 310 को लॉन्च किया है। यह बाइक भी अब OBD-2B इंजन से लैस हो गई है। इसमें डिजिटल इंस्ट्रूमेंट कंसोल के साथ ही कई बेहतरीन फीचर्स को शामिल किया गया है। इसके साथ ही बाइक की कीमत में भी थोड़ी बढ़ोतरी की गई है।

3. 2025 Hero Super Splendor Xtec

हीरो मोटोकॉर्प ने 2025 Hero Super Splendor Xtec को भी OBD-2B इंजन के साथ लॉन्च कर दिया है। जिसके बाद यह ज्यादा ईको-फ्रैंडली हो गई है। इसकी कीमत में 2000 रुपये की बढ़ोतरी हुई है। इसमे जिटल इंस्ट्रूमेंट कंसोल और USB चार्जिंग जैसे मॉडर्न फीचर्स को शामिल किया गया है।

4. 2025 Honda Dio 125

होंडा ने अपने स्पोर्टी स्कूटर 2025 Honda Dio 125 को नए लुक में पेश किया है। साथ ही इसे OBD-2B इंजन से लैस कर दिया है। इसमें नया TFT इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर दिया गया है, जो पहले केवल प्रीमियम स्कूटरों में ही मिलता था। जिसकी वजह से इसकी कीमत में भी थोड़ा सा बदलाव किया गया है।

5. 2025 Kawasaki Ninja 650 KRT Edition

कावासाकी ने भारतीय बाजार में 2025 Kawasaki Ninja 650 KRT Edition को लॉन्च किया है। भारत में इसे 7,27,000 रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया गया है। इसने मानक वर्जन की जगह ली है और यह अपनी पिछले मॉडल से 11,000 रुपये ज्यादा महंगी है।

6. 2025 Kawasaki Eliminator

कावासाकी ने भारत में अपनी 2025 Kawasaki Eliminator क्रूजर बाइक को लॉन्च कर दिया है। इसकी कीमत में 14,000 रुपये की बढ़ोतरी की गई है, जिसके बाद इसकी एक्स-शोरूम कीमत 5,76,000 रुपये हो गई है। इसकी पहले एक्स-शोरूम कीमत 5.62 लाख रुपये थी।

होंडा एक्टिवा पर बंपर डिस्काउंट ऑफर, 3 साल का फ्री मिल रही प्रीमियम एनुअल मेंटेनेंस

परिवहन विशेष न्यूज

होंडा एक्टिवा पर शानदार ऑफर के तहत कंपनी 3 साल का फ्री प्रीमियम एनुअल मेंटेनेंस पैकेज दे रही है जिसकी कीमत 5500 रुपये है। यह ऑफर केवल H-Smart वेरिएंट पर लागू है। वहीं Activa 110 के डीलक्स वेरिएंट पर 4000 रुपये का कैशबैक भी मिल रहा है। यह ऑफर सर्विस लुब्रिकेंट्स वॉशिंग और पार्ट्स रिप्लेसमेंट को कवर करता है।

नई दिल्ली। होंडा ने हाल ही में अपनी पॉपुलर स्कूटर्स Honda Activa 110 और Activa 125 के नए मॉडल को लॉन्च किया है। जिसके बाद से यह और भी बेहतर हो गई है। वहीं, कंपनी अब इसपर बंपर डिस्काउंट दे रही है। आइए जानते Honda Activa 110 और Activa 125 पर क्या ऑफर मिल रहा है ?

Activa पर डिस्काउंट ऑफर

Honda Activa 110 और Activa 125 के H-Smart वेरिएंट के साथ 3 साल का फ्री 'प्रीमियम एनुअल मेंटेनेंस' सर्विस पैकेज दिया जा रहा है, जिसकी कीमत 5,500 रुपये है। वहीं, Activa 110 के डीलक्स वेरिएंट पर 4,000 रुपये तक का कैशबैक ऑफर भी दिया जा रहा है। इस प्रीमियम सर्विस पैकेज में ग्राहकों को नियमित सर्विस चार्ज, लुब्रिकेंट्स की लागत, स्कूटर की धुलाई, चेक-अप और पहनने-घिसने वाले पुर्जों के बदले जाने की सुविधा मिलेगी। इस पैकेज की सबसे खास बात यह है कि स्कूटर को बेचा जाए, तो यह पैकेज ट्रांसफर भी किया जा सकता है।

2025 Honda Activa 110

Honda Activa 110 को तीन वेरिएंट में पेश किया जाता है, जो स्टैंडर्ड, डीलक्स और H-Smart है। इसकी शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत दिल्ली में 78,684 रुपये है और H-Smart वेरिएंट की कीमत 84,685 रुपये है। इसमें नया 109cc का एयर-कूल्ड, सिंगल-सिलेंडर इंजन का इस्तेमाल किया जाता है, जो 7.99PS की पावर और 9.05Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके अलावा, इसमें 4.2-इंच का TFT डिस्प्ले, स्मार्टफोन कनेक्टिविटी और Honda RoadSync ऐप के ज़रिए टर्न-बाय-टर्न नेविगेशन भी दिया जाता है।

2025 Honda Activa 125

Activa 125 दो वेरिएंट में पेश किया जाता है, जो Disc और Smart है। इसकी एक्स-शोरूम कीमत 95,702 रुपये से शुरू होकर 99,674 रुपये तक जाती है। इसमें 124cc का इंजन इस्तेमाल किया गया है, जो 8.4PS की पावर और 10.5Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसमें भी अब TFT डिस्प्ले, स्मार्टफोन कनेक्टिविटी, LED हेडलैंप और ACG साइलेंट स्टार्ट जैसे फीचर्स के साथ पेश किया जाता है।

अगर आप एक भरोसेमंद, फीचर्स से भरपूर और कम खर्चीला स्कूटर खरीदना चाहते हैं, तो यह Honda Activa 110 या Activa 125 खरीदने का सबसे अच्छा समय है। इसमें फ्री सर्विस पैकेज और कैशबैक जैसे ऑफर्स दिए जा रहे हैं।

स्कोडा भारत में अभी लॉन्च नहीं करेगी ये गाड़ियां, इस वजह से बदला अपना प्लान

परिवहन विशेष न्यूज

स्कोडा ऑटो इंडिया ने भारत में अपनी कई प्रीमियम गाड़ियों की लॉन्चिंग फिलहाल टाल दी है। इसमें Superb Diesel Kodiaq Diesel Octavia और Enyaq EV शामिल हैं। कंपनी ने यह फैसला भारत और यूरोपीय यूनियन के बीच चल रही FTA बातचीत और कस्टम ड्यूटी में संभावित बदलाव को ध्यान में रखते हुए लिया है। आइए इसके बारे में विस्तार से जानते हैं।

नई दिल्ली। Skoda Auto India भारतीय बाजार को लेकर नया कदम उठाने जा रहा है। कंपनी अपने आने वाली इलेक्ट्रिक और डीजन गाड़ियों के इम्पोर्ट को भारत के लिए रोक लगाने जा रही है। कंपनी ने हाल ही में CKD रूट के जरिए Kodiaq SUV को लॉन्च किया है। इसके साथ ही अब CBU रूट से आने वाली गाड़ियों की लॉन्चिंग को फिलहाल के लिए रोक दिया गया है।

क्या है पीछे का कारण ?

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, कंपनी ने ऐसा फैसला भारत सरकार और यूरोपीय यूनियन के बीच चल रही फ्री ट्रेड एग्रीमेंट (FTA) की बातचीत की वजह से लिया है। इसपर Skoda India के डायरेक्टर पेट्र जनबा का कहना है कि अगले तीन महीनों में कस्टम ड्यूटी को लेकर स्पष्टता आने की उम्मीद है, जिसके बाद कंपनी आगे का निर्णय लेगी।

महंगी कारों पर 110% तक कस्टम ड्यूटी

हाल में भारत सरकार 40,000 डॉलर से कम कीमत की कारों पर 70% और इससे महंगी कारों पर 110% तक कस्टम ड्यूटी लगाती है। वहीं, अगर FTA समझौता हो जाता है, तो यूरोपीय वाहनों पर यह शुल्क घटकर केवल 10% तक हो सकता है, जिससे लग्जरी गाड़ियां भारतीय बाजार में ज्यादा किफायती दाम पर मिलने लगेंगी।

किन गाड़ियों पर पड़ा असर

इस रोक का असर कई पॉपुलर मॉडलों पर पड़ा है, जो Superb Diesel 4x4, Kodiaq Diesel 4x4, Octavia, Octavia RS के साथ ही Enyaq इलेक्ट्रिक SUV की इम्पोर्ट के प्लान को भी फिलहाल के लिए टाल दिया गया है।

Skoda Enyaq EV को लेकर कंपनी ने प्लानिंग की थी कि वह इसे लोकल मैन्युफैक्चरिंग के जरिए भारत में पेश करेगी, लेकिन सरकार की ओर से CAFE 3 (Corporate Average Fuel Efficiency) गाइडलाइंस पर साफ बात नहीं होने की वजह से इस योजना को फिलहाल के लिए टाल दिया गया है।

लोगों को क्या मिलेगा फायदा ?

ऊपर बताया गया FTA समझौता जल्द हो जाता है, तो Skoda जैसी यूरोपियन कंपनियां अपनी गाड़ियों को कम कीमतों पर भारत में ला सकेंगी। इससे भारतीय ग्राहकों को भी प्रीमियम और EV गाड़ियों के लिए बेहतर विकल्प और सस्ती कीमतों का लाभ मिल सकता है।

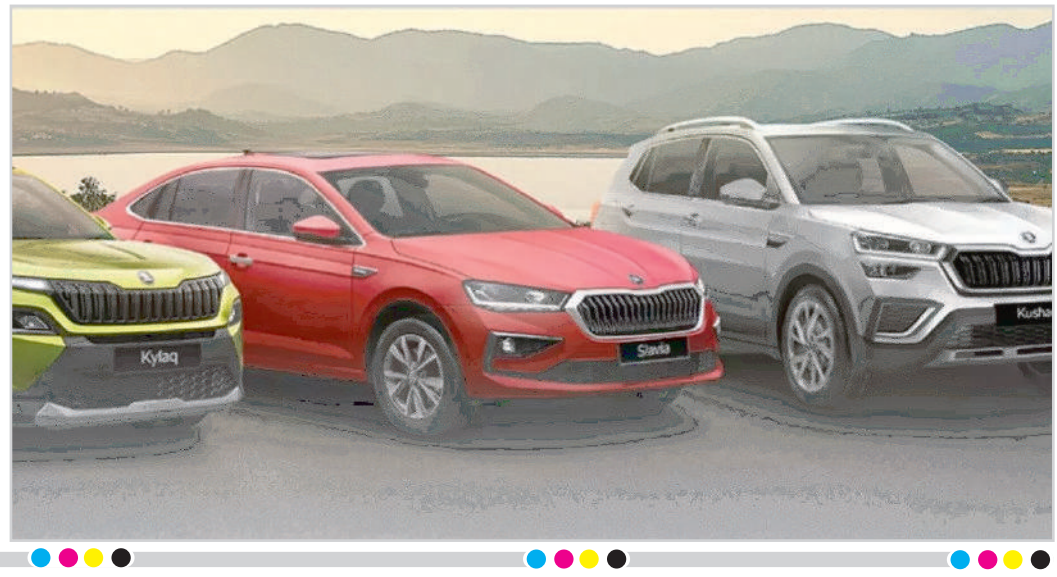

शिक्षा में पूर्वाग्रह और बाल मन

विजय गर्ग

कर्नाटक के चामराजनगर की रहने वाली चौथी कक्षा की एक बच्ची ने विज्ञान प्रदर्शनी में एक ऐसा 'प्रोजेक्ट' बनाया, जिसमें एक संदेश था कि जो औरत एक खास परिधान पहनती है, वह जन्नत की हकदार है और जो नहीं पहनती, वह नरक में सांप-बिच्छुओं की दावत बनती है। ऐसे में यह घटना हमारी शिक्षा प्रणाली की जड़ों में पैठ बना चुके पूर्वाग्रहों की भयावह तस्वीर पेश करती है। विज्ञान प्रदर्शनी में एक बच्ची का धार्मिक कट्टरता से प्रेरित माडल केवल उसकी कल्पना नहीं, बल्कि उस माहौल का नतीजा है, जिसमें उसे ढाला गया है। सवाल यह नहीं है कि यह विचार उसके मन में आया कैसे, बल्कि यह है कि आखिर उसकी सोच को इस दिशा में मोड़ा किसने?

क्या यह उस शिक्षा का परिणाम है, जो हमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करती है या फिर यह उस समाज की देन है, जो बच्चों की कोमल चेतना में भी अंधविश्वास और दंड के भय को ठूंस देता है? आश्चर्य की बात है कि यह सब खुलेआम हो रहा है और शिक्षा तंत्र को इसकी भनक तक नहीं। अगर इस माडल का वीडियो चर्चा में न आता, तो क्या प्रशासन जागता? क्या स्कूल की जिम्मेदारी तय होती? यह स्थिति हमारी शिक्षा प्रणाली की लचर निगरानी और जवाबदेही की पोल खोलती है। शिक्षा का उद्देश्य तो बच्चों को स्वतंत्र रूप से सोचने, तर्क करने और विवेकशील बनने के लिए प्रेरित करना होना चाहिए।

केवल पुस्तकों में लिखी बातें रटाना नहीं है शिक्षा का उद्देश्य

शिक्षा का उद्देश्य केवल पुस्तकों में लिखी बातें रटाना नहीं, बल्कि बच्चों में स्वतंत्र सोचने और तर्क करने की क्षमता विकसित करना होता है, लेकिन जब शिक्षा प्रणाली ही धार्मिक पूर्वाग्रहों और सामाजिक कुरीतियों का माध्यम बनने लगे, तो यह न केवल बच्चों के मानसिक विकास को बाधित करता, बल्कि समाज के भविष्य को भी अंधकारमय बना देता है। यूनिसेफ की 2023 की रपट के अनुसार, दुनियाभर में 70 फीसद बच्चे अपनी प्रारंभिक शिक्षा के दौरान धार्मिक और सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों से प्रभावित होते हैं। भारत में 2021 की राष्ट्रीय शैक्षिक नीति रपट बताती है कि बड़ी संख्या में स्कूलों में बच्चों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अधिक धार्मिक पृष्ठभूमि की शिक्षा दी जाती है। कर्नाटक की घटना इसी प्रवृत्ति का एक उदाहरण है, जहां एक मासूम बच्ची को अंधविश्वास में जकड़ दिया गया।

म्यांमा में लोकतंत्र की मुश्किल राह, सैन्य सरकार स्वीकार कर सकती है भारत की मध्यस्थता

एक अध्ययन के अनुसार, 8-14 वर्ष की उम्र के 65 फीसद बच्चे परिवार से धार्मिक मान्यताएं अपनाते हैं, जो उनकी स्वतंत्र सोच पर प्रभाव डालती हैं। यह उस सामाजिक अनुकूलन का नतीजा है, जो धर्म के नाम पर बच्चों की सोच को सीमित कर देता है। शिक्षा का असली उद्देश्य बच्चों के मन में सवालों को जन्म देना है, न कि उन्हें ऐसे अंधविश्वासों से भर देना, जो उनके आत्मनिर्णय की क्षमता को खत्म कर दें।

भारत जैसे विविधता वाले देश में, जहां महिलाओं को अपनी पसंद के कपड़े पहनने की स्वतंत्रता है, वहां धार्मिक कट्टरता की जड़ें इतनी गहरी कैसे जम रही हैं? एक ओर ईरान में महिलाएं संघर्ष कर रही हैं, तो दूसरी ओर भारत के कुछ हिस्सों में इसे धर्म की पहचान के रूप में थोपा जा रहा है। विडंबना यह है कि जिन बच्चियों को अपने अधिकारों और स्वतंत्रता की समझ होनी चाहिए, उन्हें पहले से ही यह सिखाया जा रहा है कि धर्म के नाम पर कुछ विशेष पहनावे ही 'शुद्धता' का प्रमाण हैं। कोई भी परिधान पहनना किसी की निजी पसंद हो सकता है, लेकिन जब यह डर और धार्मिक पूर्वाग्रह के साथ जोड़ा जाता है, तब यह महज कपड़ों की बात नहीं रहती, बल्कि एक मानसिक जकड़न का रूप ले लेती है। जिस उम्र में बच्चों को तार्किक सोच और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने की शिक्षा दी जानी चाहिए, उसी उम्र में उनके दिमाग में यह भरना कि खास परिधान न पहनने वाली औरतें 'नापाक' होती हैं, यह दर्शाता है कि सांप-बिच्छू से ज्यादा जहरीला विष समाज बच्चों के मन में घोल रहा है।

अन्य देशों में भी धर्म और शिक्षा के बीच टकराव

धर्म और शिक्षा के टकराव का यह मामला अकेले भारत तक सीमित नहीं है। अमेरिका में विकासवाद बनाम सृजनवाद की बहस हो, फ्रांस में हिजाब प्रतिबंध का मुद्दा हो या अफगानिस्तान में लड़कियों की शिक्षा पर पाबंदी, हर जगह धार्मिक

विचारधारा और शिक्षा का संघर्ष साफ नजर आता है। चीन में तो सरकार स्वयं शिक्षा प्रणाली को नियंत्रित कर यह तय करती है कि बच्चों को क्या सोचना चाहिए और क्या नहीं।

विडंबना यह है कि जो शिक्षा व्यक्ति को स्वतंत्र विचारक बनाती है, वही अब पूर्वाग्रहों की जननी बन रही है। इसीलिए स्कूलों को ऐसी किसी भी शिक्षा से दूर रखना जरूरी है, जो बच्चों को पूर्वाग्रहों से भर दे। उन्हें स्वतंत्र रूप से सोचने, सवाल करने और नए विचारों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। राज्य सरकारों और शिक्षा नीति निर्माताओं की भी इसमें अहम भूमिका होनी चाहिए। शिक्षा केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि यह बच्चों को तार्किक सोच और वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने का अवसर देने वाली होनी चाहिए। जब तक शिक्षा में धार्मिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों का अंत नहीं होगा, तब तक स्वतंत्र और तार्किक सोच रखने वाली पीढ़ी का निर्माण संभव नहीं होगा।

डिजिटल अर्थव्यवस्था ने उपलब्ध कराए रोजगार के नए अवसर, ऑनलाइन व्यापार के समक्ष कई चुनौतियां और खतरे

अब सवाल यह उठता है कि इस समस्या का समाधान क्या है? सबसे पहले, स्कूलों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि शिक्षा प्रणाली में किसी भी प्रकार के धार्मिक या सांस्कृतिक पूर्वाग्रह की जगह न हो। शिक्षकों को भी इस बात के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए कि वे बच्चों को स्वतंत्र रूप से सोचने और सवाल करने के लिए प्रेरित करें। अभिभावकों की भी जिम्मेदारी बनती है कि वे अपने बच्चों को धार्मिक कट्टरता से दूर रखते हुए उन्हें विवेकशील और तर्कशील बनाने का प्रयास करें। दूसरा महत्त्वपूर्ण कदम यह हो सकता है कि शिक्षा प्रणाली में विज्ञान और तार्किक सोच को और अधिक प्रोत्साहित किया जाए। पाठ्यक्रम इस तरह बनाया जाना चाहिए कि बच्चों को स्वतंत्र रूप से सोचने और अपनी राय बनाने की आदत विकसित करे। जब तक बच्चे खुद यह समझ नहीं पाएंगे कि उनके लिए क्या सही है और क्या गलत, तब तक वे किसी भी विचारधारा के प्रभाव में आसानी से आ सकते हैं।

शिक्षा का असली उद्देश्य होना चाहिए बच्चों को तर्कशील और स्वतंत्र सोच वाला बनाना

तीसरा समाधान यह हो सकता है कि समाज में व्यापक स्तर पर संवाद और बहस को बढ़ावा दिया जाए। यह जरूरी है कि लोग यह समझें कि किसी भी धार्मिक पहनावे को अनिवार्य बनाना, खासकर जब वह भय और दंड के साथ जोड़ा जाए, तो यह स्वतंत्रता का हनन है। अंततः, शिक्षा का असली उद्देश्य बच्चों को तर्कशील और स्वतंत्र सोच वाला बनाना होना चाहिए, न कि उन्हें किसी खास विचारधारा की कठपुतली बना देना। जब तक स्कूलों में तार्किक और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा नहीं मिलेगा, तब तक समाज में धार्मिक कट्टरता और पूर्वाग्रहों का जहर फैलता रहेगा। बच्चों का मन एक खाली कैनवास की तरह होता है, जिसे या तो ज्ञान और तार्किकता के रंगों से भरा जा सकता है, या फिर अंधविश्वास और कट्टरता के काले धब्बों से। यह हम पर निर्भर करता है कि हम अगली पीढ़ी को किस दिशा में ले जाना चाहते हैं।

शून्यता का प्रकाश

विजय गर्ग

मनुष्य का अस्तित्व एक गूढ़ रहस्य है, जिसे समझने का प्रयास उसने युगों से किया है। हम जितना इस रहस्य को सुलझाने की कोशिश करते हैं, उतना ही यह और गहरा होता जाता है । हमारे भीतर एक असीम शून्यता है, जिसे हम अक्सर डर के रूप में देखते हैं, लेकिन वास्तव में यही शून्यता हमारे होने की पहचान है। जब हम स्वयं को किसी भी विशेषता, किसी भी पहचान से मुक्त कर देते हैं, तभी हम अपने वास्तविक स्वरूप में आते हैं। यह विचार सुनने में विरोधाभासी लगता है, लेकिन यही जीवन का सबसे मौलिक सत्य है- कुछ भी नहीं होना, वास्तव में कुछ होना है।

जब हम अपने अस्तित्व को बाहरी चीजों से जोड़ते हैं, तो हम अनजाने में स्वयं को सीमाओं में बांध लेते हैं । हम यह मान लेते हैं कि हमारी पहचान हमारे नाम, पद, रिश्तों, उपलब्धियों और भौतिक वस्तुओं में निहित है। मगर जब हम इन सबसे मुक्त होकर स्वयं को देखते हैं, तो हमें अनुभव होता है कि हम केवल बाहरी पहचान तक सीमित नहीं हैं, बल्कि हम अनंत हैं। हमारे भीतर एक व्यापक आकाश है, जो हर सीमा से परे है। यह आकाश तभी प्रकट होता है, जब हम अपने मन को समस्त पूर्वाग्रहों, आकांक्षाओं और अहंकार से रिक्त कर देते हैं । यह शून्यता कोई अभाव नहीं, बल्कि अनंत संभावनाओं से भरी हुई अवस्था है।

भारतीय आध्यात्मिक परंपराओं में इस शून्यता को महत्त्व दिया गया है। योग और ध्यान की विधियां इसी ओर इशारा करती हैं- मन को शून्य बनाओ, विचारों के भार मुक्त हो जाओ और तब तुम अपने वास्तविक स्वरूप को जान पाओगे । बौद्ध धर्म में 'शून्यवाद' की अवधारणा भी इसी ओर संकेत करती है कि जब तक मनुष्य स्वयं को 'कुछ' मान कर चल रहा है, तब तक वह बंधनों में है, लेकिन जब वह स्वयं को 'कुछ भी नहीं' मानता, तब ही वह सच्ची मुक्ति प्राप्त करता है। इसका तात्पर्य यह नहीं कि व्यक्ति का अस्तित्व समाप्त हो जाता है, बल्कि वह सीमित 'मैं' से निकल कर असीमित 'हम' में परिवर्तित हो जाता है।

जीवन में जो कुछ भी नया जन्म लेता है, वह पहले शून्यता में ही विद्यमान होता है। जब कोई कलाकार एक नई रचना करता है, तो वह पहले अपनी चेतना को विचारों की भीड़ से मुक्त करता है। जब कोई कवि कविता लिखता है, तो वह पहले स्वयं को शब्दों के बोझ से खाली करता। जब कोई ऋषि ध्यान में बैठता है, तो वह पहले अपने मन को समस्त विचारों से मुक्त करता है । यह शून्यता ही निर्माण की पहली अवस्था है। अगर हमारा मन पहले से ही विचारों और धारणाओं से भरा होगा, तो उसमें कोई नया विचार जन्म नहीं ले सकता। इसलिए, 'कुछ नहीं होना' सृजन का पहला चरण है।

यह विचार केवल व्यक्तिगत स्तर पर ही नहीं, बल्कि सामाजिक और वैश्विक स्तर पर भी लागू होता है। जब समाज स्वयं को एक निश्चित पहचान में सीमित कर लेता है, तो वह संकीर्णता में फंस जाता है। जब कोई राष्ट्र स्वयं को किसी विशेष संस्कृति या परंपरा तक सीमित कर लेता है, तो वह अपनी व्यापकता को खो देता है । इसी कारण महान सभ्यताएं तब तक फली फूलीं, जब तक वे बाहरी प्रभावों के लिए खुली रहीं, लेकिन जैसे ही वे अपने को पूर्ण मानने लगीं, वैसे ही उनका पतन शुरू हो गया। इतिहास गवाह है कि जो भी समाज स्वयं को 'कुछ' मान कर चलता है, वह स्थिर हो जाता है और धीरे - धीरे समाप्त हो जाता है। मगर जो समाज स्वयं को 'कुछ नहीं' मान कर परिवर्तनशील रहता है, वही अनंत काल तक जीवित रहता है।

व्यक्तिगत जीवन में भी यह नियम लागू होता है। जब हम अपने अहंकार से मुक्त हो जाते हैं, तभी हम सच्चे आनंद का अनुभव कर पाते हैं । अहंकार हमें सीमित करता है, जबकि शून्यता हमें अनंत विस्तार देती है । यह अहंकार ही है जो हमें दूसरों से तुलना करने पर मजबूर करता है। हम सोचते हैं कि हमें अपने से श्रेष्ठ व्यक्ति से आगे निकलना है और अपने से निम्न व्यक्ति से ऊपर बने रहना है। लेकिन यह पूरी सोच ही त्रुटिपूर्ण है । जब हम इस तुलना से बाहर निकल आते हैं, तब हमें यह अनुभव होता है कि हम स्वयं में पूर्ण हैं, हमें किसी प्रतिस्पर्धा की आवश्यकता नहीं ।

यह विचार हमारे दैनिक जीवन में भी लागू होता है। जब हम किसी विषय में विशेषज्ञ बनना चाहते हैं, तो हमें पहले अपने पूर्वाग्रहों को छोड़ना पड़ता है। जब कोई वैज्ञानिक नई खोज करता है, तो वह पुराने सिद्धांतों को पहले चुनौती देता । जब कोई विद्यार्थी नया ज्ञान प्राप्त करता है, तो उसे पहले अपने पुराने ज्ञान को छोड़ना पड़ता । यह 'शून्यता' की प्रक्रिया हर जगह देखी जा सकती है। प्रकृति भी हमें यही सिखाती है। जब कोई वृक्ष पुराने पत्तों को गिरा देता है, तभी उसमें नए पत्ते आते हैं। जब नदी अपने बहाव में रुक जाती है, तो वह सड़ने लगती है, लेकिन जब वह अपने जल को बहाती रहती है, तो वह निर्मल बनी रहती है। हम एक ऐसे दौर में हैं, जहां हर व्यक्ति स्वयं को किसी न किसी रूप में परिभाषित करने में लगा हुआ है। सोशल मीडिया पर हर कोई अपनी पहचान बनाने में जुटा है, लेकिन इस प्रक्रिया में वे अपने वास्तविक स्वरूप को भूलते जा रहे हैं। यह पहचान बनाने की लालसा ही हमारे भीतर असंतोष को जन्म देती है। हम दूसरों की नजरों में 'कुछ' बनने की कोशिश करते हैं, लेकिन इस प्रयास में हम अपने वास्तविक स्वरूप से दूर होते जाते हैं। अगर हम इस दौड़ से बाहर निकलकर अपने भीतर झांकें, तो हमें अनुभव होगा कि हमें कुछ बनने की जरूरत ही नहीं, क्योंकि हम पहले से ही पूर्ण हैं।

देश को कमजोर करने वाली नीतियां

विजय गर्ग

सत्ता में काबिज रहने के लिए आम लोगों की जान-माल से किस हद तक खिलवाड़ किया जा सकता है, इसका मौजूदा उदाहरण पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली तृणमूल कांग्रेस की सरकार है। पश्चिम बंगाल देश का ऐसा अकेला राज्य है जहां वक्फ बोर्ड के विरोध में हिंसा हुई है। वैसे देश के ज्यादातर राज्यों में इस मुद्दे पर विरोध प्रदर्शन तक नहीं हुए। पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद में वक्फ कानून के मुद्दे पर विरोध प्रदर्शन के दौरान हिंसा में तीन लोगों की मौत हो गई। मुख्यमंत्री ममता ने हिंसा के बाद कहा है कि पश्चिम बंगाल में वक्फ संशोधन कानून लागू नहीं होगा। ममता बनर्जी का कहना है कि यह कानून केंद्र सरकार ने बनाया है और उन्हीं से इसका जवाब मांगा जाना चाहिए। यह पहला मौका नहीं है जब ममता ने वोट बैंक की खातिर मुस्लिम प्रेम दर्शाया है। इससे पहले भी मुख्यमंत्री ममता सरेआम मुस्लिमों की हिमायत कर चुकी हैं। रोहिंग्या मुसलमानों के मामले में भी ममता ने इसी तरह के प्रेम का इजहार किया था। ममता ने कहा था कि सभी रोहिंग्या आतंकवादी नहीं हैं, जबकि केंद्र सरकार ने संकटग्रस्त समुदाय को निर्वासित करने के अपने रुख पर कायम रहते हुए कहा था कि उनमें से कुछ पाकिस्तानी आतंकवादी समूहों से जुड़े हुए हैं। तब भी ममता ने इनकी पैरवी करते हुए कहा था कि आतंकवादियों और आम लोगों के बीच अंतर होता है। हर समुदाय में अच्छे और बुरे लोग हो सकते हैं, लेकिन एक समुदाय, एक समुदाय होता है।

ममता की पार्टी तृणमूल कांग्रेस ने प्रदेश में कानून व्यवस्था से खिलवाड़ करने वालों को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की तरह सख्त कार्रवाई करके जवाब नहीं दिया। यही वजह है कि ऐसे अराजक तत्वों के हौसले पश्चिम बंगाल में बुलंद हैं। पिछले वर्ष रामनवमी पर जुलूस के दौरान हिंसा भड़कने से करीब दो दर्जन लोग घायल हो गए। इस मामले में भी पश्चिम बंगाल ही सबसे आगे रहा। लखनऊ में मामूली झड़प के अलावा हिंसा की ऐसी वारदातें देश के अन्य हिस्सों में नहीं हुएं। पश्चिम बंगाल में सरकार चाहे वामपंथियों की रही हो या अब ममता बनर्जी की हो, यह राज्य हिंसा के लिए अभिशप्त हो गया है। कारण भी स्पष्ट है, सारा संघर्ष सत्ता प्राप्ति का है। देश के ज्यादातर राज्यों में जहां चुनाव शांतिपूर्ण तरीके से सम्पन्न होते हैं, वहीं पश्चिम बंगाल का रिकार्ड हिंसा के कारण दागदार बन गया है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के नेतृत्व में पश्चिम बंगाल देश का इकलौता ऐसा राज्य है जहां पंचायत से लेकर विधानसभा और लोकसभा चुनावों तक जम कर हिंसा होती रही है। पश्चिम बंगाल में वर्ष 2021 के विधानसभा चुनावों के बाद व्यापक पैमाने पर हिंसा हुई, जब तृणमूल ने भाजपा को हराया था। पश्चिम बंगाल में विधानसभा के चुनावी नतीजों के बाद हिंसा में 12 लोगों की मौत हुई। वर्ष 2024 में लोकसभा चुनाव के नतीजे घोषित होने के एक दिन बाद 5 जून को चुनाव बाद हिंसा की घटनाओं में भाजपा और माकपा समर्थकों को निशाना बनाया गया। दक्षिण में उत्तर 24 परगना जिले और दक्षिण 24 परगना तथा राज्य के जंगलमहल क्षेत्र के झारग्राम सहित कई जिलों में चुनाव बाद हिंसा की घटनाएं सामने आईं। पुलिस और केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल के जवान मौके पर पहुंचे, लेकिन सुरक्षा बलों के जाने के बाद उपद्रवी वापस लौट आए और इलाके में तोडफोड़ की। इसी तरह 8 जून 2023 को बंगाल में जिस दिन से पंचायत चुनाव की तारीखों का ऐलान हुआ, उसके बाद 15 लोगों की हत्या कर दी गई। वर्ष 2003 में जब यहां पंचायत चुनाव हुए थे, तब 76 लोगों की मौत हुई थी। इनमें से 40 से ज्यादा लोग तो वोटिंग वाले दिन मारे गए थे। वर्ष 2013 और 2018 के चुनाव के समय यहां केंद्रीय बलों की तैनाती भी हुई थी, बावजूद उसके हिंसा नहीं थमी थी।

बीते पांच दशकों में पश्चिम बंगाल में राजनीतिक हिंसा में करीब 30 हजार से ज्यादा लोग मारे जा चुके हैं। पिछले दो दशकों में सबसे ज्यादा मौतें सिंगुर और नंदीग्राम आंदोलन में हुईं। पश्चिम बंगाल में हिंसा का दौर 1960 के बाद शुरू हुआ। साल 1967 में राज्य में कम्युनिस्ट पार्टी की सरकार आई जिसने 2011 तक करीब 34 साल तक शासन किया। कम्युनिस्ट शासन के दौरान राज्य में राजनीतिक हिंसा में 28 हजार लोग मारे गए। ममता बनर्जी के नेतृत्व में हुए नंदीग्राम और सिंगुर आंदोलन को पश्चिम बंगाल की सरकार ने जिस हिंसात्मक तरीके से दबाया वो कम्युनिस्ट सरकार की सत्ता के ताबूत में आखिरी कील साबित हुई और 34 साल की लेफ्ट सरकार का पतन हुआ। लोगों को उम्मीद जगी थी कि अब सरकार बदलने के बाद पश्चिम बंगाल में राजनीतिक हिंसा खत्म हो जाएगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। पंचायत चुनाव हो या विधानसभा-लोकसभा चुनाव, पश्चिम बंगाल में हिंसा कम नहीं हुई। इस राज्य में अब बिना किसी चुनाव के भी राजनीतिक कार्यकर्ताओं की हत्या और उन पर हमला आम बात हो गई है। पश्चिम बंगाल राजनीतिक और सांप्रदायिक हिंसा के लिए ही नहीं, बल्कि भ्रष्टाचार के लिए भी कुख्यात बन चुका है। जितनी बेशर्मी से भ्रष्टाचार और उस पर पर्दादारी इस राज्य में हुई है, उसकी मिसाल देश के दूसरे राज्यों में देखने को नहीं मिलती। टीएमसी के 19 नेताओं पर सीबीआई और ईडी की कार्रवाई चल रही है। शारदा घोटाले और नारद स्टिंग के खुलासे से तृणमूल कांग्रेस की खूब किरकिरी हुई। इसी तरह कोयला और मवेशी तस्करी, राशन घोटाले और सरकारी परियोजनाओं के लिए धन में से कट मनी लेने के आरोपों के बावजूद ममता बनर्जी के तेवरों में कमी नहीं आई। घोटालों की इस कड़ी में शिक्षा घोटाला सुर्खियों में है। चूंकि इसमें प्रदेश के हजारों बेरोजगार जुड़े हैं, इसलिए यह मामला ममता के गले की हड्डी बन गया है। अन्यथा जैसे अन्य घोटालों से ममता सरकार पर कोई फर्क नहीं पड़ा, उसी तरह शिक्षा घोटाले पर नहीं पड़ता। कलकत्ता हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट ने सख्त टिप्पणी के साथ 25000 शिक्षकों और गैर-शिक्षण कर्मचारियों की पूरी भर्ती प्रक्रिया रद्द कर दी। कोर्ट का कहना है कि घोटाले की जड़ें इतनी गहरी हैं कि दोषियों को निर्दोषों से अलग करना मुमकिन नहीं है। नौकरी गंवाने वाले टीचर इसके विरोध में सडक़ों पर उतर आए। मुख्यमंत्री ममता ने इस फैसले पर खुले तौर पर असहमति जताई। राज्य के शिक्षा मंत्री यहां तक कह गए कि अदालत के फैसले से प्रभावित सभी शिक्षकों को वेतन मिलेगा। मतलब स्पष्ट है कि वोट बैंक की राजनीति इतनी हावी है कि अदालत के निर्णय की अवहेलना करने से भी ममता सरकार को गुरेज नहीं है।

वन विभाग की आधारहीन चिंताएं

उपनिवेशवादी प्रबंधन ने ही लोगों को वनों से दूर किया था। उनको फिर से वनों के साथ जोडऩे का यह कानून मौका देता है, जिसका लाभ होगा। डरने की जरूरत नहीं, बल्कि मिलकर बेहतर वन प्रबंधन विकसित करने पर ध्यान देने की जरूरत है। वन विभाग यदि अपनी विशेषज्ञता का उपयोग आने वाले समय में आजीविका वानिकी की ओर करे तो बेहतर होगा। ऐसे वन जो बिना काटे रोजी-रोटी दे सकें, वही संरक्षित पर्यावरण की गारंटी हैं

बड़ी मुश्किल से 17 सालों बाद हिमाचल सरकार जागी, तो वन विभाग नाहक ही चिंताग्रस्त हो गया। वन अधिकार कानून 2006 दो साल बाद दो हजार आठ में अधिसूचित होने के बावजूद आज तक लागू किए जाने को तरस रहा था। यह कानून संसद द्वारा वनवासी और अन्य वन निर्भर समुदायों के प्रति ब्रिटिश हुकूमत में किए गए ऐतिहासिक अन्याय को दूर करने के लिए इन समुदायों की वनों पर निर्भरता को ध्यान में रखते हुए वनों पर कानूनी रूप में कुछ अधिकार देने की बात करता है, जिसमें 2005 की 13 जनवरी से पहले यदि आजीविका के लिए वन भूमि का प्रयोग किया जा रहा है या आवास और पशुशाला आदि बनाई है, तो उतनी वन भूमि पर, आदिवासी और अन्य वन निर्भर समुदायों को इस्तेमाल का हक प्रदान करने का प्रावधान किया गया है। इसके अलावा सामुदायिक रूप से वनों में जो बरतनदारी हक, परंपरा से इन समुदायों को छूट के रूप में प्राप्त हैं, उन्हें कानूनी अधिकार के रूप में दिए जाने का प्रावधान है। बरतनदारी वनों के प्रबंधन की जिम्मेदारी देने के साथ इनके संरक्षण-संवर्धन का कत्र्तव्य भी निर्धारित किया गया है। स्थानीय विकास के लिए जरूरी वन भूमि के हस्तांतरण की प्रक्रिया भी वन संरक्षण अधिनियम की लंबी प्रक्रिया से बाहर निकाल कर इस कानून के तहत आसान की गई है, जिसके लिए दिल्ली की ओर देखने की जरूरत नहीं, बल्कि वन अधिकार समिति की संस्तुति से वन मंडल अधिकारी के स्तर पर ही एक हैक्टेयर तक भूमि का स्थानीय विकास की 13 मदों के लिए हस्तांतरण किया जा सकता है, बशर्ते उसमें 75 से ज्यादा पेड़ न आते हों।

इस तरह यह कानून न केवल आदिवासी और अन्य वन निर्भर समुदायों की आजीविका का संरक्षण करता है, बल्कि वन संरक्षण कार्य में स्थानीय जन सहयोग को बढ़ा कर वन संरक्षण कार्य को भी मजबूत करता है। स्वयं वन विभाग भी वन संरक्षण में जन सहयोग के लिए सांझा वन योजना जैसे प्रयोग सफलतापूर्वक कर चुका है। हालांकि यह प्रयोग अनमने भाव से ही किए गए थे, फिर भी परिणाम उत्साहवर्धक रहे हैं, इसलिए कोई कारण नहीं है कि उक्त अधिनियम के अंतर्गत कानूनी तौर पर प्रबंधन के अधिकार मिलने पर, समुदाय कामयाब नहीं होगा। बल्कि कानूनी तौर पर पूर्ण सशक्त होने पर सामुदायिक प्रबंधन बहुत सफल होगा। आखिर पंचायतों को भी जब संवैधानिक संस्था का दर्जा दिया गया तो सारा कार्य सफलतापूर्वक संभाल ही रही हैं। फिर किसी को खुली छूट भी तो दी नहीं जा रही है, बल्कि वन प्रबंधन समितियों को नियम-कानूनों के प्रति जवाबदेह बनाने की व्यवस्था है। गत दिनों जब हिमाचल सरकार ने जनजातीय विकास मंत्री माननीय जगत सिंह नेगी के नेतृत्व में वन अधिकार कानून को लागू करने के लिए मिशन मोड में कार्य शुरू किया तो वन विभाग सकते में आ गया। एक पत्र जिलाधीशों, मुख्य अरण्यपालों और वन मंडल अधिकारियों को जारी किया गया, जिसमें तथाकथित दिशा-निर्देशों की बात की गई है। जबकि कानून को लागू करने का काम वन अधिकार अधिनियम के तहत जनजातीय विभाग को सौंपा गया है। वन विभाग का काम केवल सांझा निरीक्षण में हाजिर होना है, या उपमंडल समितियों और जिला स्तरीय समितियों में सहयोग देना है। दिशा-निर्देश तो पहले ही एक्ट, नियम और केन्द्रीय दिशा-निर्देशों के रूप में आ चुके हैं। अब सवाल यह पैदा होता है कि इस समय, जब सरकार इस कानून को लागू करने के प्रति गंभीरता से काम करने जा रही है, तो विभाग की ओर से यह पत्र क्यों जारी किया गया? सत्रह साल तक विभाग को यह याद क्यों नहीं आई? फिर वीडियोग्राफी करने और सेटेलाइट फोटो का प्रयोग करने के सुझाव क्यों दिए गए, जबकि एक्ट में उनका कोई जिक्र नहीं है।

इससे साफ यह शक जाहिर होता है कि वन विभाग अब फिर इस कानून को लागू करने के काम में अड़ंगा लगाना चाहता है। पत्र में कोनिफर पेड़ों की ही चिंता जाहिर की गई है, यानी टिंबर देने वाले पेड़ ही इनके लिए पेड़ हैं। ऊंचाई पर भी क्लाइमेक्स जंगल में तो बान, बुरांस, खरशु, मोहरू, चिरंदी जैसे अनेक वृक्ष प्रजातियां हैं। उनको तो ये लोग कोयला जलाने के लिए काट कर खुद नष्ट करते रहे हैं और उनके रोपण की भी कोई कोशिशें नहीं की जाती थीं। अभी कुछ वर्षों से ही ये प्रयास शुरू हुए हैं। अभी भी कितना सफल होते हैं, पता नहीं। शिवालिक के सघन मिश्रित वनों को गर्डलिंग करके सुखाया गया और चीड़ के वनों में बदल दिया गया। यह काम सुधार वानिकी के नाम पर किया गया। इसी कारण वन्य प्राणी जंगली फलों और चारे के अभाव में खेतों में अत्यधिक नुकसान करने लग गए हैं, जिससे स्थानीय आजीविका का कितना नुकसान हुआ, इसका आकलन तक नहीं किया गया है। असल में ये लोग अभी तक भी उपनिवेशवादी मानसिकता से बाहर नहीं निकल पाए हैं।

जंगल पोलिसिंग से नहीं बचे हैं, लोगों के सहयोग और जागरूकता से बचे हैं। उपनिवेशवादी प्रबंधन ने ही लोगों को वनों से दूर किया था। उनको फिर से वनों के साथ जोडऩे का यह कानून मौका देता है, जिसका लाभ होगा। डरने की जरूरत नहीं, बल्कि मिलकर बेहतर वन प्रबंधन विकसित करने पर ध्यान देने की जरूरत है। वन विभाग यदि अपनी विशेषज्ञता का उपयोग आने वाले समय में आजीविका वानिकी की ओर करे तो बेहतर होगा। ऐसे वन जो बिना काटे रोजी-रोटी दे सकें, वही संरक्षित पर्यावरण की गारंटी हैं। टिंबर देने वाले पेड़ तो कट कर ही कुछ दे सकते हैं। इसलिए मिश्रित जंगल लगाने की ओर ध्यान दिया जाए और वन अधिनियम को लागू करने में सहयोग देकर ग्राम समुदायों को वन संरक्षण और विकास के काम में जोडऩे की दिशा में काम किया जाए।

अंतरिक्ष से दुनिया के जंगलों पर नजर

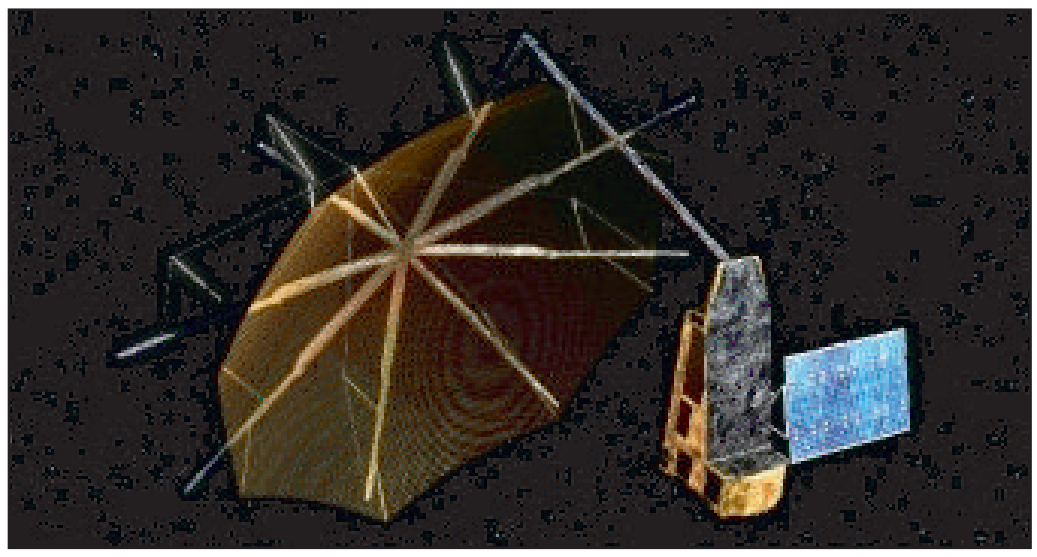

दुनिया के उष्णकटिबंधीय वन पृथ्वी को ग्लोबल वार्मिंग के कुछ सबसे बुरे प्रभावों से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, क्योंकि वे वायुमंडल से बहुत अधिक कार्बन डाईआक्साइड को अवशोषित करते हैं। एक अनुमान के अनुसार वे वायुमंडल से लगभग आठ अरब टन कार्बन डाईआक्साइड लेते हैं। इन वनों को अक्सर पृथ्वी के हरे फेफड़ों के रूप वर्णित किया जाता है, लेकिन वनों की कटाई और पर्यावरण के क्षरण से वनों की भूमिका कमजोर हो रही है। कार्बन जो वनों में कभी बहुत अधिक मात्रा में संग्रहीत था, वापस वायुमंडल में डाला जा रहा है। इससे ग्रीनहाउस गैसों का स्तर बढ़ रहा है।

भविष्य में ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों से निपटने के लिए हमें अपने उष्णकटिबंधीय वनों के स्वास्थ्य के बारे में जानने की आवश्यकता है। इसके लिए विज्ञानियों ने दुनिया के सबसे दूरस्थ और सबसे घने उष्णकटिबंधीय जंगलों के विस्तृत उडी मानचित्र बनाने की योजना बनाई है। यह काम अंतरिक्ष में एक विशेष रडार स्कैनर को तैनात करके किया जाएगा। इस स्कैनर को यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी के बायोमास नामक अंतरिक्ष यान में लगाया गया है, जिसे 29 अप्रैल को फ्रेंच गुयाना से पृथ्वी की कक्षा में प्रक्षेपित किया जाएगा। बायोमास के रडार को पी-बैंड सिंथेटिक एपर्चर रडार के रूप में जाना जाता है। इस प्रकार के रडार को पहले कभी अंतरिक्ष में नहीं उड़ाया गया है। अगले पांच वर्षों तक 1.25 टन वजनी अंतरिक्ष यान अफ्रीका, एशिया और दक्षिण अमेरिका के उष्णकटिबंधीय वर्षावनों पर नजर रखेगा और रडार के दीर्घ वेवलेंथ संकेतों के जरिये नीचे की वनस्पति का अध्ययन करेगा।

बायोमास द्वारा एकत्र किए गए डाटा का उपयोग जंगलों के अनूठे 3डी मानचित्र बनाने के लिए किया जाएगा। इन जंगलों का बड़ा हिस्सा मानव दृष्टि से छिपा हुआ है। इन क्षेत्रों में दो प्रतिशत से भी कम सूरज की रोशनी वन तल तक पहुंचती है। फिर भी बायोमास 600 किलोमीटर से अधिक की ऊंचाई से इन अद्भुत जंगलों का विस्तार से अध्ययन करेगा। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह मिशन विज्ञानियों को यह गणना करने में मदद करेगा कि जंगलों में पेड़ों के तलों और शाखाओं पर कितना कार्बन जमा है। मिशन यह पता लगाएगा कि मनुष्यों द्वारा पेड़ों को काटने और वायुमंडल में कार्बन डाईआक्साइड के स्तर को बढ़ाने के कारण वनों में जमा कार्बन के स्तरों में किस तरह से बदलाव हो रहा है। यह इस बारे में भी डाटा प्रदान करेगा कि खनन और कृषि के लिए जंगलों को साफ करने से जैव-विविधता किस दर से नष्ट हो रही है। बायोमास हमें वनों को बेहतर ढंग से समझने में मदद करेगा।

राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवसः निष्ठा, निष्पक्षता और नवाचार का प्रतीक

राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस भारत के लिए एक गौरवपूर्ण अवसर है, जो उन असंख्य सिविल सेवकों को सम्मानित करता है, जो राष्ट्र की प्रशासनिक शक्ति के प्राण हैं। यह दिन, जो 21 अप्रैल को मनाया जाता है, केवल उत्सव नहीं, बल्कि एक प्रेरणास्रोत है—उनके अटूट समर्पण, निष्ठा और कर्तव्यपरायणता का उत्सव, जो भारत जैसे विशाल और विविध देश को एकजुट रखते हुए प्रगति के मार्ग पर ले जाते हैं। सिविल सेवक सरकार और जनता के बीच मजबूत सेतु हैं, जो नीतियों को कागज से निकालकर जमीनी हकीकत में बदलते हैं। चाहे विकास योजनाओं को गाँव-गाँव तक पहुँचाना हो या संकट के समय देश को संभालना, उनकी भूमिका अपरिहार्य है। यह दिन हमें उनके अमूल्य योगदान को सराहने और प्रशासन को और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए नए संकल्प लेने का अवसर देता है।

राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस का ऐतिहासिक महत्व उतना ही प्रेरणादायी है, जितना इसका समकालीन संदेश। 1947 में, भारत के प्रथम गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने दिल्ली के मेटकाफ हाउस में अखिल भारतीय सेवा के अधिकारियों को संबोधित करते हुए उन्हें 'देश का स्टील फ्रेम' करार दिया। इस कथन में गहरा दर्शन निहित था—एक दृढ़, निष्पक्ष और ईमानदार प्रशासन ही राष्ट्र की प्रगति की अटल नींव हो सकता है। सरदार पटेल ने सिविल सेवकों को निर्भीकता और निष्पक्षता के साथ जनसेवा का पवित्र आह्वान किया, जो आज 21 अप्रैल को राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस के रूप में जीवंत हो उठता है। यह दिन सिविल सेवकों को उनके कर्तव्यों की पुनः स्मृति कराता है, उनके असाधारण योगदान को सम्मानित करता है और राष्ट्र निर्माण में उनकी अपरिहार्य भूमिका को गौरवान्वित करता है।

राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस का उद्देश्य न केवल सिविल सेवकों के अनमोल योगदान को रोशनी में लाना है, बल्कि उन्हें जनहित में और अधिक उत्कृष्टता के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित करना भी है। इस विशेष अवसर पर, केंद्र सरकार द्वारा उत्कृष्ट सेवाओं के लिए सिविल सेवकों को प्रतिष्ठित प्रधानमंत्री पुरस्कार से नवाजा जाता है। यह सम्मान उन असाधारण अधिकारियों को समर्पित है, जिन्होंने महत्वपूर्ण परियोजनाओं और योजनाओं को न केवल सफल बनाया, बल्कि राष्ट्र निर्माण में मील के पत्थर स्थापित किए। यह पुरस्कार उनकी कड़ी मेहनत को गौरवान्वित करता है और अन्य सिविल सेवकों में सकारात्मक प्रतिस्पर्धा की प्रेरक लौ जलाता है। साथ ही, यह दिन प्रशासन में पारदर्शिता, जवाबदेही और जन-केंद्रित दृष्टिकोण को सशक्त करने का अनुपम अवसर प्रदान करता है। यह हमें नई सोच के साथ प्रशासनिक व्यवस्था को और अधिक समावेशी, प्रभावशाली और जनोन्मुख बनाने के लिए प्रेरित करता है, ताकि सरकार की योजनाएं देश के अंतिम व्यक्ति तक निर्बाध रूप से पहुँच सकें।

भारत जैसे देश में, जहाँ सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विविधता अपनी चरम सीमा पर है, सिविल सेवकों की भूमिका न केवल महत्वपूर्ण, बल्कि राष्ट्र के जीवन रक्त के समान है। वे नीतियों को लागू करने वाले मात्र कार्यकर्ता नहीं, बल्कि समानता, न्याय और सामाजिक सद्भाव के प्रहरी हैं। विकास योजनाओं को गाँव-गाँव तक पहुँचाना, गरीबों और वंचितों के हक को सुनिश्चित करना, और समाज को एकता के सूत्र में बाँधना—ये सभी दायित्व उनके कंधों पर हैं। संकट के क्षणों में उनकी भूमिका और भी चमकदार हो उठती है। चाहे कोविड-19 जैसी वैश्विक महामारी हो, बाढ़, भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाएँ हों, या कोई अन्य राष्ट्रीय विपदा, सिविल सेवक हमेशा अग्रिम पंक्ति में खड़े होकर देश को संबल प्रदान करते हैं। उनकी यह अटूट निष्ठा और समर्पण ही भारत को हर चुनौती में अडिग स्थिरता और प्रगति का मार्ग दिखाता है।

आज का युग डिजिटल क्रांति और तकनीकी नवाचारों का स्वर्णिम काल है, जिसने सिविल सेवकों की भूमिका को और भी विशाल और गहन बना दिया है। उन्हें न केवल अपने पारंपरिक कर्तव्यों को बखूबी निभाना है, बल्कि आधुनिक तकनीकों को आत्मसात कर प्रशासन को अभूतपूर्व रूप से पारदर्शी, सहज और प्रभावशाली बनाना है। डिजिटल इंडिया जैसे दूरदर्शी कार्यक्रमों ने ई-गवर्नेंस को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया है, जहाँ ऑनलाइन सेवाएँ, डिजिटल भुगतान और पारदर्शी प्रक्रियाएँ सरकारी योजनाओं को जन-जन तक सहजता से पहुँचा रही हैं। लेकिन इस डिजिटल युग ने साइबर सुरक्षा, डेटा गोपनीयता और डिजिटल साक्षरता जैसी नई चुनौतियों को भी जन्म दिया है। सिविल सेवकों को इनका सशक्त समाधान करते हुए प्रशासन को और अधिक कुशल, जनोन्मुख और भविष्योन्मुखी बनाना है, ताकि भारत वैश्विक मंच पर एक सशक्त डिजिटल राष्ट्र के रूप में चमके।

इसके साथ ही, सामाजिक-आर्थिक असमानता, पर्यावरणीय संकट और जनसंख्या वृद्धि जैसी जटिल चुनौतियाँ सिविल सेवकों के समक्ष दीर्घकालिक समाधान की माँग करती हैं। इनका सामना करने के लिए उन्हें नवाचार, सहयोग और दूरदर्शी दृष्टिकोण को अपनाना होगा। एक सच्चा सिविल सेवक वही है, जो अपने पद की गरिमा को अक्षुण्ण रखते हुए निष्पक्षता, ईमानदारी और जनता के प्रति पूर्ण जवाबदेही का परचम लहराए। राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस हमें न केवल सिविल सेवकों के योगदान को सराहने, बल्कि प्रशासनिक ढांचे में सुधार की संभावनाओं पर गहन चिंतन करने का अनमोल अवसर प्रदान करता है। निरंतर प्रशिक्षण, तकनीकी निपुणता और जवाबदेही को बढ़ावा देकर सिविल सेवाओं को और अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है। पारदर्शी और मजबूत तंत्र विकसित कर भ्रष्टाचार की जड़ों पर प्रहार किया जा सकता है, जबकि जन-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाकर यह सुनिश्चित हो सकता है कि प्रशासन की हर धड़कन जनता के हित में समर्पित हो।

राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस सिविल सेवकों के लिए एक प्रेरणादायी अवसर है, जो उन्हें अपने कर्तव्यों के प्रति सजग रहने और आत्ममंथन के लिए प्रोत्साहित करता है। यह दिन सरदार वल्लभभाई पटेल के उस कालजयी संदेश को पुनर्जनन करता है, जिसमें उन्होंने निष्पक्षता, ईमानदारी और जनता के प्रति अटूट जवाबदेही को प्रशासन की आत्मा बताया था। इस अवसर पर सिविल सेवकों को संकल्प लेना चाहिए कि वे देश, संविधान और नागरिकों के प्रति पूर्ण निष्ठा के साथ कार्य करेंगे। उनकी यह दृढ़ प्रतिबद्धता ही भारत को एक सशक्त, समृद्ध और समावेशी राष्ट्र के रूप में गढ़ने का आधार बनेगी। राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस न केवल सिविल सेवकों के अमूल्य योगदान को गौरवान्वित करता है, बल्कि यह विश्वास भी जगाता है कि उनकी अटल शक्ति ही देश की प्रगति और एकता का प्राण है।

-प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

एनडीए में नीतीश सीएम "फेस', इंडिया गठबंधन में अभी 'रेस' भाजपा का नीतीश के फेस पर ही चुनाव लड़ने का ऐलान, इंडिया गठबंधन में तेजस्वी के नाम पर अभी घमासान

प्रदीप कुमार वर्मा

देश और दुनिया में प्राचीन ₹मगध₹ के नाम से चर्चित बिहार में इस साल के आखिर में होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए रणभेरी बज चुकी है। चुनावी समर के लिए रणनीति के योद्धाओं ने भी अपनी तलवार निकल ली हैं। बिहार चुनाव में जनता दल यूनाइटेड एक बार फिर से भाजपा के साथ एनडीए गठबंधन में रहकर चुनावी तैयारी में जुटी है। वहीं, बिहार के मुख्य विपक्षी दल के रूप में राष्ट्रीय जनता दल अपनी सहयोगी कांग्रेस तथा अन्य पार्टियों के साथ महा गठबंधन के तले चुनावी समर की तैयारी में है। बिहार विधानसभा चुनाव के प्रारंभिक चरण में सीएम फेस के नाम पर इन दिनों चर्चा चल रही है। एनडीए के प्रमुख घटक भाजपा ने जहां एक बार फिर से नीतीश कुमार की कमान में ही चुनाव लड़ने का निर्णय करते हुए उन्हें ही सीएम फेस बनाने का एलान किया है। जबकि इसके उलट महागठबंधन में अभी भी सीएम फेस के नाम पर सहमति नहीं बनाने से घमासान चल रहा है।

एक जमाना था जब मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भाजपा के लिए जरूरी हुआ करते थे। लेकिन वर्तमान हालात में अब ऐसा लगता है कि नीतीश कुमार भाजपा सहित समूचे एनडीए गठबंधन के लिए एक ₹मजबूरी₹ बन गए हैं। इसी कथित मजबूरी के चलते नीतीश कुमार एक बार फिर से सीएम फेस बन गए हैं। हाल के दिनों में बिहार के दौरे पर आए केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नाम पर ही चुनाव लड़ने का संकेत दिया था। इसके बाद बिहार के उप मुख्यमंत्री एवं बिहार की राजनीति के दिग्गज सम्राट चौधरी ने भी नीतीश कुमार के नाम पर ही भाजपा के चुनाव में उतारने का ऐलान किया है। एनडीए के एक अन्य घटक दल लोक जनशक्ति पार्टी के नेता चिराग पासवान ने भी मीडिया में बतौर सीएम फेस नीतीश के नाम पर ही मोहर लगा दी है। यही नहीं राष्ट्रीय लोक मोर्चा पार्टी के नेता उपेंद्र कुशवाहा तथा इसके बाद अब यह तय जा रहा है कि बिहार विधानसभा का चुनाव एनडीए वर्तमान एवं नौ बार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के चेहरे पर ही लड़ेगी।

बिहार की चुनावी राजनीति में जनता दल यूनाइटेड और बीजेपी वाले एनडीए का मुकाबला राष्ट्रीय जनता दल की अगुवाई वाले महागठबंधन से होगा। चारा घोटाले में लालू यादव के सजायाफ्ता होने के बाद उनके पुत्र तेजस्वी यादव ने पार्टी की बागडोर संभाली है। लालू यादव अब पार्टी में महज मार्गदर्शक की भूमिका में हैं। वर्ष 2015 में ही राजनीति में तेजस्वी यादव की एंट्री हो गई थी तथा साल 2020 में बिहार विधानसभा के चुनाव के समय से तेजस्वी लाइमलाइट में आए थे। उन्होंने लालू की मदद लिए बिना बिहार में महागठबंधन बना कर चुनाव लड़ा और खासा कामयाबी हासिल की। तेजस्वी की अगुवाई में आरजेडी को 75 सीटें मिली थी। अब एक बार फिर बिहार विधानसभा चुनाव के लिए तेजस्वी की कमान में राष्ट्रीय जनता दल पूरी तरह तैयार है। यही नहीं राष्ट्रीय जनता दल सहित लालू परिवार भी तेजस्वी को बिहार का सीएम देखना चाहता है।

लेकिन तेजस्वी यादव की बिहार का मुख्यमंत्री बनने की राह में सबसे बड़ा ₹रोड़ा₹ कांग्रेस ने ही डाल दिया है। महागठबंधन की बैठक में कांग्रेस ने सीएम फेस के लिए महागठबंधन की तरफ से तेजस्वी के नाम पर सहमति जताने से इनकार कर दिया है। यही नहीं बिहार चुनाव में महा गठबंधन में सीटों के बंटवारे को लेकर आयोजित इस बैठक में सीटों के बारे में भी कोई अंतिम चर्चा भी नहीं हो सकी। महागठबंधन की बैठक के बाद तेजस्वी यादव की अध्यक्षता में गठबंधन की समन्वय समिति जरूर बन गई है, जो महागठबंधन के घटक दलों के साथ सीटों के बंटवारे सहित अन्य सभी फैसला करेगी। महागठबंधन की बैठक में कांग्रेस जहां अधिक से अधिक सीट लेने के मूड में दिखी है। वही, राष्ट्रीय जनता दल की कोशिश है की महागठबंधन की ओर से तेजस्वी यादव का नाम बतौर सीएम चुनाव से पहले ही घोषित कर दिया जाए। इसके लिए राष्ट्रीय जनता दल कांग्रेस को बंटवारे में कम सीट देकर उसे पर प्रेशर बनाने की पॉलिटिक्स पर काम कर रही है।

विधानसभा की कुल 243 सीटों वाले बिहार में महागठबंधन में शामिल कांग्रेस अपने स्वतंत्र अस्तित्व के बजाय महागठबंधन के जरिए ही कांग्रेस अपनी उपस्थिति दर्ज कर रही है। वर्ष 2019 में सीपीआई से कांग्रेस में गए कन्हैया कुमार इन दोनों बिहार में कांग्रेस के पोस्टर बॉय हैं। कुल मिलाकर बिहार चुनाव से पूर्व एनडीए में सीएम के नाम को लेकर फिलहाल कोई मतभेद नहीं है और जनता दल यूनाइटेड तथा भाजपा सहित एनडीए के अन्य घटक दाल नीतीश कुमार के नाम पर एक बार फिर से सहमत है। वही, महागठबंधन में अभी सीएम फेस के नाम पर घमासान के हालात है। चुनाव पूर्व तैयारी और रणनीति के हिसाब से फिलहाल एनडीए माहागठबंधन की तुलना में आगे दिखाई पड़ रहा है। बिहार में वर्ष 2020 में हुए विधानसभा चुनाव के बाद नीतीश कुमार की अगुवाई में एनडीए ने राज्य में अपनी सरकार बनाई थी।

इसके दो साल बाद अगस्त 2022 में नीतीश कुमार ने एनडीए से नाता तोड़ लिया और आरजेडी के नेतृत्व वाले महागठबंधन के साथ सरकार बना ली। फिर दो बाद घटे एक राजनीतिक घटनाक्रम में जनवरी 2024 में नीतीश कुमार एक बार फिर से राष्ट्रीय जनता दल से नाता तोड़ लिया और भाजपा की अगुवाई वाले एनडीए के साथ सरकार बना ली। बिहार की राजनीति में ₹पलटू राम₹ के नाम से चर्चित हुए नीतीश कुमार के मन में क्या है यह अभी भी कोई नहीं जानता। हालांकि वर्तमान संकेत एनडीए के साथ ही चुनाव लड़ने के हैं। यही वजह है कि इस साल के आखिर में होने वाले बिहार विधानसभा चुनाव में नीतीश कुमार को फिर से सीएम फेस बनाकर यदि एनडीए की रणनीति सटीक रही,तो बिहार के पटना इंजीनियरिंग कॉलेज से मैकेनिकल इंजीनियरिंग की डिग्री लेने वाले नीतीश कुमार दशवीं बार मुख्यमंत्री के रूप में बिहार की कमान संभालेंगे।

आखिर न्यायपालिका को 'सुपर संसद' के रूप में काम करने की इजाजत किसने दी?

भारतीय लोकतंत्र में विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका, खबरपालिका और समाजपालिका में पारस्परिक टकराव कोई नई बात नहीं है, लेकिन यह जनहित में होना और दिखाई देना चाहिए। लेकिन अब जिस तरह से अपनी नाकामियों और चरित्रहीनता को छिपाने के लिए ये लोग संवैधानिक नियमों का दुरूपयोग कर रहे हैं, वह किसी वैचारिक त्रासदी से कम नहीं है। देश के प्रबुद्ध लोगों को इन संवैधानिक कमियों को पहचानना चाहिए और उसपर अविलंब लीगल सर्जिकल स्ट्राइक करने का दबाव भारतीय संसद और सुप्रीम कोर्ट दोनों पर बनाना चाहिए।

इस बात में कोई दो राय नहीं कि राष्ट्रीय संसाधनों के न्यायपूर्ण बंटवारे, विधि-व्यवस्था को बनाए रखने और उसे तोड़ने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने और सबको समान रूप से गुणवत्तापूर्ण जन सुविधाएं मुहैय्या करवाने में हमारी संसद और सर्वोच्च न्यायालय दोनों असफल साबित हुए हैं और इनके ऊलजलूल तर्कों से देश इस्लामिक चरमपंथियों के नापाक मंसूबों को साकार करने की दिशा में आगे बढ़ता हुआ प्रतीत हो रहा है! राष्ट्रपति शासन, आरक्षण विवाद, भाषा विवाद, धर्मनिरपेक्षता आदि सुलगते सवालों पर राष्ट्र का सही मार्गदर्शन करने में भी ये संस्थाएं विफल प्रतीत हो रही हैं। ऐसे में इनकी नकेल कसने के लिए भारतीय संविधान कभी कारगर साबित हो ही नहीं सकता, क्योंकि यह खुद साम्राज्यवादी मानसिकता वाले विरोधाभासों से भरा पड़ा है।

ऐसे में देश के उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ की यह टिप्पणी वाजिब है कि न्यायपालिका द्वारा राष्ट्रपति के निर्णय लेने के लिए समयसीमा तय करने, और 'सुपर संसद' के रूप में काम करने की इजाजत नहीं दी जा सकती है, इसलिए उन्होंने इस विषय को लेकर महत्वपूर्ण सवाल उठाए हैं, जो उनके प्रबुद्ध होने का परिचायक है। देश के विश्वविद्यालयों और अन्य पेशेवर संगठनों को इन पर गौर फरमाते हुए आम राय कायम करने की जरूरत है। उन्होंने ठीक ही कहा है कि सुप्रीम कोर्ट लोकतांत्रिक ताकतों पर 'परमाणु मिसाइल' नहीं दाग सकता!

उपराष्ट्रपति धनखड़ ने आरोप लगाया है कि भारतीय संविधान का अनुच्छेद-142 लोकतांत्रिक ताकतों के खिलाफ एक परमाणु मिसाइल बन गया है जो न्यायपालिका के लिए चौबीसों घंटे उपलब्ध है। बता दें कि संविधान का अनुच्छेद 142 सुप्रीम कोर्ट को अपने समक्ष किसी भी मामले में 'पूर्ण न्याय' सुनिश्चित करने के लिए आदेश जारी करने की शक्ति देता है। उन्होंने यह भी सवाल उठाया है और कहा है कि, 'हमारे पास ऐसे जज हैं जो कानून बनाएंगे, जो कार्यपालिका के काम करेंगे और उनकी कोई जवाबदेही नहीं होगी, क्योंकि देश का कानून उन पर लागू नहीं होता है।'

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने 17 अप्रैल 2025 दिन गुरुवार को कहा कि हाल ही में जूडिशरी के एक फैसले में राष्ट्रपति को निर्देश दिये जाने की पनपी नई प्रवृत्ति पर ठीक ही सवाल किया कि हम किस दिशा में जा रहे है? हमने इस दिन के लिए लोकतंत्र की कभी उम्मीद नहीं की थी। राष्ट्रपति को समयबद्ध तरीके से निर्णय लेने के लिए कहा जाता है। धनखड़ ने यह टिप्पणी राज्यसभा के ट्रेनीज को संबोधित करते हुए की। उन्होंने ठीक ही कहा कि हम ऐसी स्थिति नहीं बना सकते जहां आप भारत के राष्ट्रपति को निर्देश दें। उन्होंने कहा कि यह निर्देश किस आधार पर दिए जा रहे हैं? संविधान के तहत आपके पास एकमात्र अधिकार अनुच्छेद 145(3) के तहत संविधान की व्याख्या करना है। उन्होंने शक्तियों के पृथक्करण पर कहा कि जब सरकार जनता द्वारा चुनी जाती है, तो सरकार संसद के प्रति तथा चुनावों में जनता के प्रति जवाबदेह होती है। उन्होंने कहा कि समय आ गया है जब विधायिका, न्यायपालिका और कार्यपालिका फले-फूलें। किसी एक के द्वारा दूसरे के क्षेत्र में हस्तक्षेप चुनौती पैदा करता है, जो अच्छी बात नहीं है।

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने हाई कोर्ट के जज यशवंत वर्मा के घर से बड़े पैमाने पर नकदी की बरामदगी से जुड़े मामले में एफआईआर दर्ज न किए जाने पर सवाल उठाया है। उन्होंने ठीक ही कहा कि अगर यह घटना आम आदमी के घर पर हुई होती, तो मामले में रॉकेट की रफ्तार से एफआईआर दर्ज की जाती। जबकि न्यायपालिका की स्वतंत्र जांच या पूछताछ के खिलाफ किसी तरह का सुरक्षा कवच नहीं है। उन्होंने ठीक ही कहा है कि किसी संस्था या व्यक्ति को पतन की ओर धकेलने का सबसे पुख्ता तरीका उसे जांच से सुरक्षा की पूर्ण गारंटी प्रदान करना है।

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने दिल्ली हाइकोर्ट के एक जज के घर मिले कथित कैश की ओर इशारा करते हुए उस पर लीपापोती की नाजायज प्रवृत्ति पर भी सवाल उठाए। धनखड़ ने दो टूक शब्दों में कहा कि हाई कोर्ट के एक जज के घर से मिले कैश से जुड़े मामले में एफआईआर न होना आमलोगों के सवालों के घेरे में है। इसलिए सवाल उठाया कि क्या 'कानून से परे एक श्रेणी' को अभियोजन से छूट है। उन्होंने ठीक ही कहा कि जूडिशरी की स्वतंत्र जांच या पूछताछ के खिलाफ किसी तरह का 'सुरक्षा कवच' नहीं है। एक पत्रकार के रूप मेरी भी व्यक्तिगत राय है कि न्यायिक भ्रष्टाचार की जांच के लिए न्यायिक पुलिस और पत्रकारिता के भ्रष्टाचार की जांच के लिए मीडिया पुलिस का अविलंब गठन किया जाए। प्रशासनिक व्यवस्था के किसी भी क्षेत्र को स्वनियमन बनाने और लागू करने की छूट नहीं दी जाए।

इसलिए यहां पर सवाल उठता है कि आखिर न्यायपालिका को 'सुपर संसद' के रूप में काम करने की इजाजत किसने दी? मेरा स्पष्ट मानना है कि देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू से लेकर मौजूदा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्राप्त भारी जनसमर्थन का रणनीतिक दुरूपयोग किया, जिससे न्यायपालिका को विधायिका को दुरुस्त करने का मौका मिल गया, जो अनुचित नहीं है। किसी भी राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, उपप्रधानमंत्री, राज्यपाल, उपराज्यपाल, मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री आदि को वोट बैंक के लिहाज से जनविरोधी या राष्ट्र विरोधी फैसले लिए जाने की इजाजत नहीं दी जा सकती है। ऐसे में मजबूत व स्वतंत्र न्यायपालिका जरूरी है। लेकिन भ्रष्ट न्यायपालिका कतई नहीं! देश में फैला न्यायिक भ्रष्टाचार हमारी विधायिका की लगभग 8 दशकों की बड़ी लापरवाही है। वहीं, प्रशासनिक भ्रष्टाचार में भी विधायिका का परोक्ष रूप से हिस्सेदार बन जाने की प्रवृत्ति भी अस्वीकार्य है। सारे टकराव की वजह भी यही भ्रष्ट और अनैतिक आचरण है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय संविधान से नौवीं अनुसूची को हटाकर उसमें शामिल किए गए सभी विषयों की न्यायिक समीक्षा होनी चाहिए, ताकि राजनीतिक मनमानी रूके। वहीं, भारतीय प्रशासन को भी जनहित के प्रति जिम्मेदार बनाए जाने की जरूरत है, अन्यथा उनकी लापरवाहियों के लिए स्पष्ट सजा व जुर्माना का प्रावधान हो, ताकि वो पॉलिटिकल एजेंट की तरह काम करने से बाज आएं। कहना न होगा कि देश में जारी राजनीतिक व प्रशासनिक पक्षपात के चलते ही देश में न्यायपालिका को सब पर भारी पड़ने का मौका मिल गया। विभिन राज्यों में राष्ट्रपति शासन का दुरूपयोग, आरक्षण से जुड़े अभिजात्य वर्गों के हितों को अनैतिक संरक्षण, राष्ट्रपति दया याचिका का राजनीतिक प्रयोग तो महज बानगी हैं, जबकि ऐसे कई उदाहरण हैं जहां संसद ने बहुमत से अल्पमत को कुचला है और देशवासी पददलित हुए हैं। हालांकि, संविधान की नौवीं अनुसूची के चलते वह भी कई विवादास्पद विषयों पर असहाय नजर आई। इसलिए वक्त का तकाजा है कि सबके व्यक्तिगत विशेषाधिकारों को खत्म कर आम आदमी के प्रति उन्हें जिम्मेदार बनाया जाये। यह काम लोकतांत्रिक दबाव समूह ही कर सकते हैं, क्योंकि विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका अपने पेशेवर विशेषाधिकार को आसानी से छोड़ेंगे, ऐसा मुझे नहीं लगता!

-कमलेश पांडेय/वरिष्ठ

संपादक,प्रकाशक और संचार पत्र/पत्रिका का महत्व।

संपादक प्रकाशक और संचार पत्र/पत्रिका एक लेखक के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे लेखक के काम को पाठकों तक पहुंचाने और उनकी प्रतिष्ठा बढ़ाने में मदद करते हैं।लेखक को अपने काम के लिए उपयुक्त प्रकाशक का चयन करना चाहिए, जो उनके काम को सही तरीके से प्रस्तुत कर सके।

लेखक को संचार पत्र/पत्रिका के महत्व को समझना चाहिए, जो उनके काम को व्यापक पाठक वर्ग तक पहुंचाने में मदद करते हैं।लेखक को संपादक,प्रकाशक और संचार पत्र/पत्रिका के साथ सहयोग करना चाहिए, जिससे उनके काम को बेहतर ढंग से प्रस्तुत किया जा सके।

लेखक को पाठकों और आलोचकों की प्रतिक्रिया को महत्व देना चाहिए, जिससे उनके काम में सुधार हो सके।लेखक को अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए प्रकाशक और संचार पत्र/पत्रिका के साथ अच्छे संबंध बनाने चाहिए।

लेखक के लिए सुझाव,,,,,अपने काम को अच्छी तरह से तैयार करें, लेखक को अपने काम को अच्छी तरह से तैयार करना चाहिए, जिससे वह प्रकाशक और संचार पत्र/पत्रिका के लिए आकर्षक हो।प्रकाशक और संचार पत्र/पत्रिका के साथ संवाद करें,लेखक को प्रकाशक और संचार पत्र/पत्रिका के साथ संवाद करना चाहिए, जिससे उनके काम को बेहतर ढंग से प्रस्तुत किया जा सके।अपने काम का प्रचार करें, लेखक को अपने काम का प्रचार करना चाहिए, जिससे वह अधिक पाठकों तक पहुंच सके।

एक लेखक, संपादक और प्रकाशक के बीच का संबंध बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। यह संबंध न केवल लेखक के काम को बेहतर बनाने में मदद करता है, बल्कि उसे व्यापक पाठक वर्ग तक पहुंचाने में भी मदद करता है।

लेखक और संपादक के बीच का ये संबंध बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। संपादक की भूमिका न केवल लेखक के काम को सुधारने में है, बल्कि उन्हें और भी बेहतर बनाने में भी है। संपादक के सुझाव और टिप्पणियां लेखक को अपने काम को और भी गहराई से समझने में मदद करती हैं। संपादक,प्रकाशक की भूमिका न केवल लेखक के काम को प्रकाशित करने में है, बल्कि उसे व्यापक पाठक वर्ग तक पहुंचाने में भी है। प्रकाशक के समर्थन से लेखक का काम और भी प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है।

इन तीनों के बीच का संबंध बहुत ही महत्वपूर्ण होता है, जो लेखक के काम को सफल बनाने में मदद करता है।

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह

कोई पानी डाल दे तो मैं भी चौंच भर पीलूं: चुपचाप मरते परिंदों की पुकार

तेज़ होती गर्मी, घटते जलस्रोत और बढ़ती कंक्रीट संरचनाओं के कारण पक्षियों के लिए पानी और छांव जैसी बुनियादी ज़रूरतें भी दुर्लभ होती जा रही हैं। परिंदे हमारे पारिस्थितिकी तंत्र का अभिन्न हिस्सा हैं, और अगर वे गायब हो गए तो यह धरती और भी सूनी हो जाएगी। आधुनिक समाज एसी चलाने में सक्षम है लेकिन पक्षियों के लिए एक कटोरा पानी रखने में असफल। हर व्यक्ति अपने स्तर पर छोटे-छोटे प्रयास करके इस स्थिति को बदल सकता है – जैसे छत या बालकनी में पानी रखना, पेड़ लगाना, और बच्चों में करुणा की भावना जगाना। यह सिर्फ परिंदों के लिए नहीं, बल्कि इंसानियत के लिए भी एक परीक्षा है – कि क्या हम वाकई इंसान हैं?

–प्रियंका सौरभ

गर्मी अब सिर्फ तापमान नहीं रही, यह अब एक त्रासदी बन गई है — खासकर उनके लिए जिनकी आवाज़ न अख़बार में छपती है, न टीवी पर आती है, और न ही सोशल मीडिया की ट्रेंडिंग लिस्ट में। बात हो रही है उन छोटे-छोटे परिंदों की, जो इस तेज़ धूप, सूखी हवाओं और कंक्रीट के जंगल में चुपचाप प्यास से तड़प कर मर जाते हैं। "कोई पानी डाल दे तो मैं भी चौंच भर पीलूं..." — यह पंक्ति अब किसी कविता की कोमल कल्पना नहीं रही, यह एक जीवित सच्चाई है, एक निरीह पुकार, जो हर दोपहर किसी छत पर, किसी सूखी डाल पर, किसी तपती खिड़की की जाली के पीछे से उठती है।

शहरों ने छीन ली परिंदों की छांव

हमने पेड़ काटे, तालाब पाटे, छज्जों को सीमेंट से बंद कर दिया और टीन की छतों से सूरज को और गर्म कर दिया। आधुनिकता के नाम पर हमने अपने घरों को एसी से ठंडा किया, लेकिन परिंदों के लिए एक घूंट पानी छोड़ना भूल गए।

पक्षियों के घोंसले बनाने की जगहें कम होती जा रही हैं। अब उनके लिए न पेड़ बचे, न परछाई, न ही वह परंपरागत संस्कृति जिसमें हर घर की मुंडेर पर मिट्टी का एक कटोरा पानी से भरा होता था।

प्यास से मरते परिंदेः आँकड़े नहीं, चेतावनी हैं

कई पर्यावरण संस्थाएं बता रही हैं कि गर्मी में पक्षियों की मृत्यु दर में लगातार वृद्धि हो रही है। खासतौर पर गोरैया, कबूतर, मैना, बुलबुल जैसे छोटे पक्षी गर्मी की दोपहर में बेहोश होकर गिर जाते हैं, और यदि उन्हें समय पर पानी न मिले, तो मर भी जाते हैं। पर क्या इनकी मौतें किसी समाचार का हिस्सा बनती हैं? क्या इन पर कोई सरकारी घोषणा होती है? क्या इनका कोई ₹एनजीओ सम्मेलन₹ बुलाया जाता है?

पक्षी नहीं बचेंगे, तो हम भी नहीं बचेंगे

परिंदे सिर्फ आसमान की शोभा नहीं हैं, वे हमारे पारिस्थितिकी तंत्र के अभिन्न अंग हैं। वे कीट नियंत्रण करते हैं, परागण में मदद करते हैं, बीज फैलाते हैं, और सबसे ज़रूरी — वे जीवन के संगीत को बनाए रखते हैं। अगर पक्षी गायब हो गए, तो यह धरती और अधिक वीरान हो जाएगी — और हम भी।

हमें यह समझना होगा कि ये नन्हें जीव प्रकृति की बड़ी चेतावनियाँ लेकर आते हैं। जब वे प्यास से मर रहे हैं, तो समझिए कि पानी की कमी अब हमारी ओर भी बढ़ रही है।

'बर्ड फ्रेंडली' नहीं, 'लाइफ फ्रेंडली' बनिए

आज ज़रूरत इस बात की है कि हम "बर्ड फ्रेंडली" समाज बनें। यह कोई बड़ा आंदोलन नहीं, सिर्फ छोटी-छोटी चीज़ें हैं। छत या बालकनी में एक मिट्टी का पानी भरा कटोरा रखें। पेड़ लगाएं, खासतौर पर नीम, पीपल, अमरूद जैसे देशी वृक्ष। बच्चों को परिंदों के बारे में बताएं — दया, संवेदना और जुड़ाव सिखाएं। गर्मियों में पशु-पक्षियों के लिए छाया और पानी की व्यवस्था करें। मंदिरों-मस्जिदों-गुरुद्वारों जैसे स्थलों को भी प्रेरित करें कि वे पक्षियों के लिए पानी की व्यवस्था करें। यह काम किसी सरकार का इंतज़ार नहीं करता। यह आपके हाथ में है।

व्यंग्य की एक बूंदः "बिजली का बिल तो भरेंगे, पर परिंदों को पानी नहीं देंगे"

हम एसी चलाने के लिए हज़ारों की बिजली जला देंगे, लेकिन एक कटोरा पानी रखने में कंजूसी कर जाते हैं। हम स्मार्ट सिटी बनाने के लिए करोड़ों बहा देंगे, लेकिन स्मार्टनेस इतनी नहीं कि बेजुबानों के लिए भी कुछ छोड़ सकें। हमारे समाज में अब 'करुणा' भी इंस्टाग्राम रील बन गई है — दिखावा भर, असर नहीं।

शहर की छत से गाँव के चौपाल तक — एक पुकार

गाँवों में भी अब पुराने तालाब सूख रहे हैं, बावड़ियाँ टूट चुकी हैं, और पशु-पक्षियों के लिए पीने का पानी अब मुश्किल हो गया है। एक समय था जब गाँव में हर कुएँ की मेड़ पर परिंदे पानी पीने आते थे। आज वही कुएँ सीमेंट से बंद कर दिए गए हैं। शहरों ने गाँवों को "विकास" तो दिया, पर वह विकास पक्षियों के लिए विनाश बन गया।

जलवायु परिवर्तनः परिंदों से पहले असर इनके पड़ता है

जलवायु परिवर्तन का सबसे पहला और सीधा असर बेजुबानों पर पड़ता है। तापमान में जरा सी वृद्धि भी इनके लिए प्राणघातक हो सकती है। इंसान तो पंखा चला लेता है, बर्फ खा लेता है, डॉक्टर के पास चला जाता है। पर चिड़िया कहां जाए? कबूतर किससे कहे कि वह प्यासा है?

समापनः क्या हम सच में इंसान हैं?

हम खुद को बुद्धिजीवी, संवेदनशील, शिक्षित और विकसित कहते हैं — लेकिन क्या कोई भी ऐसी सभ्यता वाकई "विकसित" कहलाने लायक है जो अपने साथ रहने वाले जीवों को मरता देखे और फिर भी चुप रहे? हर गर्मी हमें यह सोचने का मौका देती है — कि इस बार क्या हम अपने घर की छत, खिड़की, बालकनी या आंगन में एक कोना ऐसा बना सकते हैं जहां कोई छोटा परिंदा अपनी चौंच भर पानी पी सके?

शायद जवाब देने की ज़रूरत नहीं। बस अगली बार जब सूरज सिर पर हो, तो किसी परिंदे की ओर देखिए...और याद रखिए —

'कोई पानी डाल दे तो मैं भी चौंच भर पीलूं...'

"चौंच भर प्यास"

चुपचाप मरते परिंदों की पुकार पर एक कविता

कोई पानी रख दे, कटोरे में भरकर,
मैं भी जी लूं ज़रा, इस तपते शहर में।
ना पुकार है मेरी किसी हैडलाइन में,
ना नाम मेरा किसी एनजीओ के बैनर में।

मैं चिड़िया हूं, गोरैया या बुलबुल,
सिर्फ परों में नहीं, सांसों में भी धूप है
धुल।
कभी छज्जे पे बैठती थी,
अब छज्जा भी गरम तवा है।

पेड़ नहीं, छांव नहीं,
बस तारें हैं और धुएं की परछाई।
तुम्हारे एसी की ठंडक में
मेरी जान सूखती जाती है हर दोपहर।

तुम बिल जमा करते हो,
रील बनाते हो,
पर क्या एक बर्तन भर पानी रखना
इतना मुश्किल काम है?

मैं पूछती नहीं,
बस ताकती हूं,
कभी बालकनी, कभी खिड़की की जाली।
कभी किसी बुज़ुर्ग की मिट्टी की सुराही
याद आती है।

मुझे मत बचाओ किसी बड़ी योजना से,
न किसी बजट, न किसी फंड से।
बस एक कोना दे दो —
जहां मेरी प्यास, मेरी जान बच सके।

इस गर्मी में जब तुम्हें भी लगने लगे कि
सांसें भारी हैं,
तो एक बार मेरी ओर देखना...
मैं चुपचाप बैठी होऊंगी,
उस सूखे कटोरे के पास —
उम्मीद में कि
कोई पानी डाल दे तो मैं भी
चौंच भर पीलूं।

–प्रियंका सौरभ

संस्कारशाला—एक प्रेरणास्पद विरासत की कहानी
'दादाजी की छड़ी और दिल की बात: प्रतीक श्रीवास्तव से विशेष बातचीत'

प्रस्तुति: संस्कारशाला विशेष साक्षात्कार श्रृंखला

आज हम जुड़ रहे हैं प्रतीक श्रीवास्तव से, जिनकी आंखों में अपने दिवंगत दादाजी की स्मृतियाँ अब भी ताज़ा हैं। एक ऐसी विरासत, जो सिर्फ खून के रिश्ते में नहीं, बल्कि मूल्यों, कर्म और कर्तव्यनिष्ठा में रची-बसी है।

प्रश्न: प्रतीक जी, कृपया अपने दादाजी श्री राम नारायण श्रीवास्तव के बारे में बताएं – एक इंजीनियर से कहीं बढ़कर वे कौन थे आपके लिए?

प्रतीक: मेरे दादाजी मेरे लिए सिर्फ एक पारिवारिक सदस्य नहीं, बल्कि मेरे जीवन के पहले आदर्श थे। वे एक प्रोजेक्ट इंजीनियर थे और उन्हें गांधी सागर डैम के निर्माण में उनके अतुलनीय योगदान के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू द्वारा सम्मानित किया गया था। उस समय उनकी आंखों में जो गर्व था, उसे मैंने परिवार की तस्वीरों में देखा और दिल से महसूस किया। वे अपने कार्य में निष्ठा, तकनीकी कुशलता और देशभक्ति का अनूठा संगम थे।

प्रश्न: आपने बताया कि आपने उनकी एक 'Walking Stick' को फ्रेम कर रखा है। यह विचार कहां से आया?

प्रतीक: यह सिर्फ एक लकड़ी की छड़ी नहीं है... यह मेरे दादाजी की पहचान, उनका जीवन संघर्ष और उनका संतुलन है। उन्होंने अपने अंतिम वर्षों में उसी छड़ी के सहारे चलना सीखा, लेकिन असल में वह छड़ी हमें रास्ता दिखा गई। मैंने उसे फ्रेम कर अपने घर की दीवार पर रखा है, ताकि हर दिन जब भी मैं उसे देखूं, मैं उनके सिद्धांत, अनुशासन और ईमानदारी को अपने जीवन में उतार सकूं।

प्रश्न: आपके लिए उनकी सबसे बड़ी सीख क्या रही?

प्रतीक: उन्होंने हमेशा कहा – ₹काम ऐसा करो कि पहचान से ज्यादा सम्मान मिले, और इंजीनियर बनो तो बस मशीन नहीं, देश के लिए सोचो।₹ वे टेक्नोलॉजी को समाजसेवा से जोड़ने में विश्वास रखते थे। आज जब मैं किसी भी प्रोजेक्ट पर काम करता हूं, तो उनकी बातें मेरे भीतर गूंजती हैं।

प्रश्न: आज के युवाओं को आप क्या संदेश देना चाहेंगे दादाजी की विरासत के संदर्भ में?

प्रतीक: मैं यही कहूंगा कि अपने बुजुर्गों की कहानियों को सिर्फ सुनें नहीं, समझें और जिएं। वे हमारे जीवन के वो अनकहे पन्ने हैं, जिनसे हम सच्चे संस्कार और प्रेरणा पा सकते हैं। मेरी दादाजी की कहानी ने मुझे न सिर्फ एक अच्छा इंजीनियर, बल्कि एक ज़िम्मेदार नागरिक बनने की राह दिखाई।

संस्कारशाला की सीख:

प्रतीक श्रीवास्तव की यह कहानी हमें बताती है कि असली संपत्ति विरासत में मिली जमीन-जायदाद नहीं, बल्कि संस्कार, मूल्य और प्रेरणा है। और जब एक दादाजी की छड़ी हमें जीवन की राह दिखा सकती है, तो सोचिए – हमारी जड़ों में कितनी गहराई है।

नवीन पटनायक नौवीं बार बीजद अध्यक्ष बने; कई वरिष्ठ नेता क्यों नहीं दिखे?

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : नवीन पटनायक नौवीं बार बीजद अध्यक्ष बने। बीजद के राज्य चुनाव अधिकारी प्रताप देब ने इसकी घोषणा की। नवीन पटनायक ने एकमात्र उम्मीदवार के रूप में अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। यह घोषणा शंख भवन में बीजद के संगठनात्मक चुनाव और राज्य परिषद की बैठक में की गई। नवीन पटनायक नौवीं बार पार्टी अध्यक्ष चुने गए हैं।नवीन पटनायक ने अपने भाषण में कहा कि 2000 से 2024 तक का समय ओडिशा के विकास का स्वर्णिम युग है। नवीन ने कहा कि ओडिशा विभिन्न क्षेत्रों में अन्य राज्यों के लिए एक आदर्श बन गया है।

इसी तरह, बीजू जनता दल की संगठनात्मक ताकत को कम करके नहीं आंका जाना चाहिए, और पार्टी की नीति और विचारधारा ही इसकी ताकत है। नवीन पटनायक ने कहा कि सरकार में हो या न हो, बीजू जनता दल ने हमेशा ओडिशा के लोगों की सेवा की है और आगे भी करता रहेगा।

छात्रों का मोहभंग सिरमौर है...!

आज ट्रंप काल में उखाड़-पछाड़ का दौर हैं,
विदेश जा रहें छात्रों का मोहभंग सिरमौर है।
यह खबर तो ज़बरदस्त ही चौंकाने वाली है,
छात्रों की संख्या 25% कमी बतानेवाली हैं।
जाके परदेस पढ़ाई का जुनून था उफान पर,
अब कोई चमत्कार हुआ अभी अवसान पर।

आज ट्रंप काल में उखाड़-पछाड़ का दौर हैं,
विदेश जा रहें छात्रों का मोहभंग सिरमौर है।
अब ना बिकेगा खेत, ना रखेगा घर गिरवी,
इस देश का बच्चा देश में ही रहेगा फिर भी।
हर साल माँ-बाप के खून-पसीने की कमाई,
अपना पेट काटके बच्चों को करवाते पढ़ाई।

आज ट्रंप काल में उखाड़-पछाड़ का दौर हैं,
विदेश जा रहें छात्रों का मोहभंग सिरमौर है।
देश में बैंकों से एजुकेशन लोन की सुविधा,
छात्रों की विदेश यात्रा थी सुगम ना दुविधा।
लाखों छात्र सुनहरे सपने लिये विदेश गमन,
पेरेंट्स की तरसती थीं आँखे ताकती अमन।
अब सभी एकसाथ ही रह सकेंगे रमेगा मन!

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

बच्चों को सड़क सुरक्षा का ज्ञान मिले

छोटी व कम उम्र में बच्चों को सड़क सुरक्षा का ज्ञान मिलेगा तो दुघर्टनाओं से राहत मिलेगी। राज्य सरकारों को रोड सेफ्टी हेतु सभी समाजजनों के साथ मिलकर काम करना होगा।

सड़क सुरक्षा को लेकर व दुघर्टनाओं की कमी लाने हेतु, कुछ फैसले भारत सरकार व न्यायलय के मंदिर से लिये गये । जनहित में भारत सरकार के शिक्षा मंत्री ने शिक्षा के क्षेत्र में स्कूली शिक्षा में यात्रायात व सड़क सुरक्षा के पाठ्यक्रम को शामिल करने की बात रखी है और इस के प्रति जागरूकता लाने हेतु स्कूल में अध्ययन करने वाले बच्चों को सड़क सुरक्षा के लिए पढ़ाया जायेगा। वही केन्द्रीय सड़क परिवहन मंत्री बहुत बड़ी व अच्छी बात या कही कि सड़क दुघर्टना में घायल को जो व्यक्ति प्रायवेट व सरकारी अस्पताल पहुंचाएगा और जान बचाने में मददगार बनेगा उसे राहगीर योजना के तहत पुरस्कार भी दिया जायेगा। कोई एक्सीडेंट होता तो कोई भी अस्पताल उस घायल का ईलाज नहीं रोक सकता है। लापरवाही करने वाले अस्पताल पर कानून करवाईं की जायेगी। बल्कि उस घायल को त्वरित ईलाज मिले इसकी सार्थक पहल भारत सरकार द्वारा की जा रही है। आंकड़ों पर नजर डालें तो स्कूल व शिक्षा के अन्य केन्द्रों के आसपास युवाओं की सड़क दुघर्टनाओं में सन 2023 में 11 हजार से ज्यादा युवाओं की जान गई है। ऐसे आकाडे बहुत भयभीत करते हैं। हम सभी को यातायात व्यवस्था व सड़क सुरक्षा के जिम्मेदार नागरिक होने का फर्ज अदा करना चाहिए। खून से लतपथ घायलों के प्रति हमारी करुणा हमेशा बनी रहे। हम तड़पते मरते व्यक्ति की जान बचा सकते हैं। मानवीय मूल्यों को खण्डित नहीं होने देवें।

हरिहर सिंह चौहान

पर्यावरण पाठशाला : 'दूसरा गिद्ध' – केविन कार्टर की कहानी से सीख

परिवहन विशेष न्यूज

1990 के दशक में एक तस्वीर ने पूरी दुनिया को झकझोर कर रख दिया था। यह तस्वीर सूडान में 1993/94 के अकाल के दौरान खींची गई थी, जिसमें एक भूखी बच्ची ज़मीन पर बैठी हुई थी और कुछ ही दूरी पर एक गिद्ध उसका इंतजार कर रहा था — शायद उसकी मृत्यु के बाद उसके शव को नोचने के लिए।

यह हृदयविदारक तस्वीर दक्षिण अफ्रीकी फोटो जर्नलिस्ट केविन कार्टर ने खींची थी, जिसे बाद में पुलित्जर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस 'शानदार शॉट' के लिए दुनिया ने उनकी प्रशंसा की, बड़े-बड़े समाचार चैनलों और मीडिया नेटवर्क्स पर उन्हें सराहा गया। लेकिन इस तस्वीर के पीछे की सच्चाई और एक फोन कॉल ने उनकी ज़िन्दगी बदल दी।

एक दिन एक इंटरव्यू के दौरान किसी श्रोता ने उनसे पूछा — "उस बच्ची का क्या हुआ?"

केविन कार्टर ने जवाब दिया, "मैं यह देखने नहीं रुका' मुझे अपनी फ्लाइट पकड़नी थी।"

इस पर उस श्रोता ने कहा, "तो उस दिन दो गिद्ध थे — एक जिसने तस्वीर ली।"

यह वाक्य केविन के दिल और आत्मा पर गहरा असर छोड़ गया। वो खुद को उस बच्ची के लिए दोषी मानने लगे, और अंततः कुछ ही महीनों बाद अवसाद

में आकर आत्महत्या कर ली।

यह कहानी केवल केविन कार्टर की नहीं है, यह हमारे समाज की भी है। आज भी हम ऐसी कई घटनाओं को देखते हैं, जहाँ मदद करने की बजाय लोग केवल कैमरा उठाकर 'क्लिक' कर देते हैं — लाइक, शेयर और व्यूज़ के लिए।

पर्यावरण पाठशाला हमें यही सिखाती है "जीवन का उद्देश्य केवल देखना नहीं, बल्कि संवेदना और करुणा के साथ कुछ करना भी है।"

केविन कार्टर उस बच्ची को यूएन फीडिंग सेंटर तक पहुँचा सकते थे, शायद उसकी जान बचा सकते थे। शायद आज वह बच्ची जीवित होती और यह कहानी कुछ और होती।

इसलिए आइए हम सब स्वयं से यह सवाल पूछें

क्या हम भी 'दूसरे गिद्ध' तो नहीं बनते जा रहे हैं?

हर कार्य में, हर अवसर में, सबसे पहले इंसानियत को प्राथमिकता दें। प्रकृति हमें सिखाती है — हर पेड़, हर पक्षी, हर बूंद पानी — किसी न किसी के लिए जीवनदायिनी है। तो क्यों न हम भी किसी का जीवन संवारने वाले बनें।

मानवता सबसे बड़ा धर्म है।

हमेशा याद रखें — एक छोटा सा मदद का हाथ, किसी की पूरी दुनिया बदल सकता है।

केआर लाइन पर फिर पैंटोग्राफ में खराबी, इंटरसिटी एक्सप्रेस और हीराखंड एक्सप्रेस रुकी

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : राउरकेला से जगदलपुर जा रही इंटरसिटी एक्सप्रेस ट्रेन के इंजन का पेंटोग्राफ काशीपुर प्रखंड के लेलिगुम्मा रावली के पास फंस जाने से केआर लाइन पर ट्रेनों का परिचालन बाधित हो गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि आज सुबह से ही यही हो रहा है। भुवनेश्वर से जगदलपुर जाने वाली इंटरसिटी एक्सप्रेस कथित तौर पर लेलिगुम्मा में रुकी हुई है, जबकि लेलिगुम्मा-रौली इंटरसिटी एक्सप्रेस कथित तौर पर लेलिगुम्मा में रुकी हुई है।इस क्षेत्र में मोबाइल नेटवर्क ठीक से काम नहीं कर रहा है, इसलिए सटीक डेटा प्राप्त नहीं किया जा सका। इस मार्ग पर रेल यातायात तीन घंटे से अधिक समय तक बाधित रहा। हर सुबह ऐसी घटनाएं होने से यात्रियों को अभूतपूर्व कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। रेलवे के एक कर्मचारी ने बताया कि ट्रेन के इंजन में बिजली आपूर्ति नहीं होने के कारण ट्रेन आगे नहीं बढ़ सकी।ऐसा माना जा रहा है कि ट्रेन को बिजली लाइन से जोड़ने वाले पेंटोग्राफ में खराबी के कारण इंजन बंद हो गया। रायगडा स्टेशन प्रबंधक ने कहा कि यह घटना पेंटोग्राफ की विफलता के कारण हुई, जो बिजली लाइन से ओवरहेड विद्युत उपकरण के माध्यम से ट्रेन के इंजन को बिजली की आपूर्ति करता है, जिससे बिजली की आपूर्ति बंद हो गई। रेलवे विभाग की तकनीकी टीम मौके पर पहुंच गई है और मरम्मत का काम कर रही है।

जयपुर-कोरापुट मार्ग पर जराटी के निकट एक मालगाड़ी के पेंटोग्राफ में खराबी आने के कारण कल शाम रेलगाड़ियों की आवाजाही बाधित हुई और देरी हुई। इस रूट पर 12 घंटे के अंदर दो ट्रेनों का पेंटोग्राफ फेल होने की घटना ने रेलवे विभाग की चिंता बढ़ा दी है और यात्री भय के साये में जी रहे हैं। रायगडा स्टेशन प्रबंधक ने बताया कि विभाग इस बात की जांच कर रहा है कि इस रूट पर पेंटोग्राफ क्यों फेल हुआ। इंटरसिटी एक्सप्रेस में यात्रा कर रहे यात्रियों ने बताया कि खबर लिखे जाने के समय ट्रेन परिचालन सामान्य नहीं था।

झारखंड हाईकोर्ट एवं मुख्यमंत्री के निर्देश के बाद अब होगी तबाड़तोड़ नियुक्ति

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, झारखंड का हर सरकारी विभाग का कार्यालय, संस्थान विगत कुछ वर्षों से मैन पावर कमी से जूझ रहा है । कहीं कहीं स्थिती अति कठिन है । परन्तु अब मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन एवं झारखंड हाईकोर्ट के कड़े निर्देश के बाद झारखंड लोक सेवा आयोग और जेएसएससी ने सभी लंबित परीक्षाओं को जल्द आयोजित करने का निर्णय लिया है.उसके साथ बड़े पैमाने पर नियुक्ति होने के आसार बन रहे हैं ।

दोनों आयोग की दो दर्जन से अधिक परीक्षाएं लंबित हैं. कुछ परीक्षाओं का रिजल्ट लंबित है, तो कुछ परीक्षा अब तक आयोजित नहीं हो पाई है. अगले तीन महीने के भीतर जिन परीक्षा को अंतिम मुकाम तक पहुंचाने की तैयारी की गई है उसमें सबसे महत्वपूर्ण 26001 पदों के लिए निकाली गई सहायक आचार्यों की बहाली शामिल है. इसके अलावे लंबे इंतजार के बाद 11वीं से 13वीं जेपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के परिणाम भी घोषित किए जाएंगे. इस तरह से अगले तीन महीने के भीतर करीब 30 हजार पदों पर नियुक्ति होने की संभावना है. जिसमें सर्वाधिक शिक्षकों के पद हैं।

उधर जेपीएससी मेंस परीक्षा का रिजल्ट नौ महीने से लटका है. इसी तरह सीडीपीओ ,फूड सेफ्टी ऑफिसर परीक्षा अधर में लटकी हैं और छात्र परेशान ह।

सरकार के कड़े रुख के बाद जेपीएससी ने 2023 में स्वास्थ्य विभाग के जिला दंत चिकित्सा पदाधिकारी सीधी नियुक्ति परीक्षा के तहत 12 पदों के लिए होने वाली बहाली के लिए साक्षात्कार 29 अप्रैल को निर्धारित किया है. इसके अलावा राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों के पीजी विभाग एवं अंगीभूत महाविद्यालयों में सहायक प्राध्यापक के पद पर नियमित नियुक्ति के लिए साल 2018 में होम साइंस, कॉमर्स और मैथमेटिक्स विषय के लिए निकाली गई बहाली को भी शीघ्र पूरा करने का निर्णय लिया गया है।

झारखंड हाई कोर्ट ने पिछले दिनों हुई सुनवाई के दौरान जेएसएससी को 26001 सहायक आचार्य की नियुक्ति तीन माह के अंदर पूरा करने का निर्देश दिया है. हाईकोर्ट के निर्देश के बाद जेएसएससी नियुक्ति प्रक्रिया पूरी करने में जुट गई है.आयोग के द्वारा इस परीक्षा की अंतिम कुंजी उत्तर पत्र 20 अप्रैल को जारी करने का निर्णय लिया है. आयोग के वेबसाइट से छात्र 26 अप्रैल तक इसे डाउनलोड कर सकते हैं।

नवस की दयालुता रमेश का सहारा बन गई

परिवहन विशेष न्यूज

इस प्रकार, एक साल की कठिनाई के बाद, महाराष्ट्र के मूल निवासी रमेश अपने भाई के साथ घर लौट रहे हैं। रमेश, जो 15 दिनों से घर से लापता था।

लगभग एक साल पहले, मेरे दोस्त ने कन्नूर में उसे पाया। भटकने के दौरान, नवास उसे अपने साथ ले गया, उसके लिए खाना और कपड़े खरीदे, और विवरण पूछा। रमेश को केवल एक ही बात याद थी, महाराष्ट्र में गोगोई नामक स्थान पर एक दरगाह का नाम। उसने कहा कि उसका परिवार और भाई वहाँ थे और वह रास्ता भटकने के बाद केरल में आ गया था।

नवास ने हमारे संगठन CCOA KERALA ग्रुप में जानकारी साझा की और मुझे बताया। फिर, पुणे के राष्ट्रीय समिति सदस्य किरण देसाई को जानकारी दी गई और उन्होंने रमेश से मराठी में बात करके और जानकारी जुटाई। यह समझा गया कि रमेश जिस जगह का जिक्र कर रहे थे, वह नागपुर के पास का एक गांव

था। फिर नागपुर के एक अन्य राष्ट्रीय समिति सदस्य महेंद्र लूले को जानकारी दी गई।

महेंद्र ने अपने दोस्त अमित गुप्ता को इसकी जानकारी दी, जिसने जल्द ही गोगोई गांव के एक दोस्त से संपर्क किया। जब उन्होंने रमेश के भाई से बात की, तो उन्हें पता चला कि रमेश एक साल से लापता था, और परिवार ने पुलिस में रिपोर्ट भी दर्ज करा दी थी और खबर का इंतजार कर रहा था।

मुझे शाम करीब 5:30 बजे अपडेट मिला और शाम 7:30 बजे तक वे रमेश के घर गए और उसके भाई से वीडियो कॉल पर बात की। अगले दिन वे ट्रेन में सवार हुए और आज वे रमेश को वापस घर ले जा रहे हैं। इस पल का खूबसूरत वीडियो नीचे शेयर किया गया है।

कन्नूर के MY DOSTH बस मालिक नवास का विशेष आभार, जिन्होंने रमेश की मदद के लिए इतने बड़े दिल से आगे आकर मदद की। साथ ही, BOCI के नेताओं किरण देसाई, महेंद्र लूली और उनके मित्र अमित गुप्ता का भी हार्दिक धन्यवाद, जिन्होंने सूचना मिलने पर समय पर सहायता की।

बी.ओ.सी.आई. / सी.सी.डी.ए. केरल

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023